THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 115 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) श्रावण कृ.11 2080 गुरुवार, 13 जुलाई 2023

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

टमाटर की बढ़ती कीमतों के बीच केंद्र ने उठाया बड़ा कदम

उपभोक्ताओं को शुक्रवार से मिलेगी राहत

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। केंद्र ने नेफेड, एनसीसीएफ को प्रमुख उपभोक्ता केंद्रों में वितरण के लिए आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र से टमाटर खरीदने का निर्देश दिया है। सरकार की ओर से जारी बयान के अनुसार दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में उपभोक्ताओं को शुक्रवार से रियायती कीमतों पर खुदरा दुकानों के माध्यम से टमाटर का वितरण किया जाएगा।

देश के कई हिस्सों में टमाटर की कीमत 200 रुपये प्रति किलोग्राम के पार हो गई है। यहां तक कि थोक मंडियों में इसके भाव 150 रुपये से 180 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गए हैं। बाजार के जानकारों के अनुसार बीते एक पखवारे के दौरान ही बाजार में टमाटर की कीमतें चार गुना और कहीं-कहीं उससे भी ज्यादा हो गई हैं। गाजियाबाद की थोक सब्जी मंडी से टमाटर खरीद कर खुदरा बाजार में बेचने वाले सचिन बताते हैं कि जून की शुरुआत में जो टमाटर बाजार में अपनी क्वालिटी के हिसाब से 30 से 40 रुपये के भाव पर बिक रहा था उसकी कीमतें अब 100 से 180 रुपये प्रति किलो तक पहुंच गई हैं।

हरी मिर्च व अदरक के भाव भी आसमान पर

टमाटर के अलावा हरी मिर्च की कीमतें भी आसामान छू रही हैं। हरी मिर्च की कीमत पिछले पखवारे में जहां 50 से 60 रुपये किलो थी, अब 120 रुपये प्रतिकिलो पहुंच गई है। अदरक के भाव भी 300 रुपये प्रति किलो तक पहुंच गए हैं।

आसमानी कहर से 4 दिन में 100 मौतें

दिल्ली में यमुना का वाटर लेवल 207.71 मीटर पहुंचा, 45 साल का रिकॉर्ड टूटा

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। उत्तराखंड, दिल्ली, यूपी, पंजाब और हरियाणा में लगातार आसमानी कहर जारी है। खराब मौसम के चलते बीते 4 दिनों में देश के अलग-अलग राज्यों में 100 से ज्यादा लोग की जान जा चुकी है। आठ जुलाई से अब तक हिमाचल प्रदेश में 36, यूपी में 34, जम्मू-कश्मीर में 15, उत्तराखंड में 9, दिल्ली में 5 और राजस्थान, महाराष्ट्र और हरियाणा में एक-एक की मौत हुई है। हिमाचल में 10 हजार टूरिस्ट जगह-जगह फंसे हैं। चंद्रताल में 3 फीट बर्फ जम गई है। 6 हेलिकॉप्टर रेस्क्यू में लगाए गए हैं। कुल्लू में ब्यास नदी के बहाव में आधा सैंज बाजार ही बह गया।

उत्तराखंड में आज बारिश का रेड अलर्ट जारी किया गया है। लैंडस्लाइड की वजह से गंगोत्री और यमुनोत्री नेशनल हाईवे कई जगहों पर बंद हैं। यहां 3 से 5 हजार लोग फंसे हुए हैं। दिल्ली में यमुना नदी का जलस्तर 207.71 मीटर पहुंच गया। 1978 में यमुना का हाईएस्ट वाटर लेवल 207.49 मीटर पहुंचा था। इस बार 45 साल का रिकॉर्ड टूटा। यमुना का पानी रिंग रोड पर पहुंच गया है।

केजरीवाल ने अमित शाह को यमुना के बढ़ते जलस्तर पर लिखा पत्र

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। यमुना का जल स्तर 1978 के पिछले रिकॉर्ड को तोड़ते हुए 207.71 मीटर तक पहुंच गया है। इसको लेकर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर केंद्र से हस्तक्षेप करने का आग्रह किया है। केजरीवाल ने अपने पत्र में कहा कि आने वाले दिनों में राजधानी जी20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने जा रही है और बाढ़ की खबर से पूरे देश का नाम खराब होगा। केजरीवाल ने लिखा कि हरियाणा स्थित हथिनीकुंड बैराज से छोड़े गए पानी के कारण जल स्तर लगातार बढ़ रहा है।

पत्र में लिखा है, "मैं आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करता हूं कि यदि संभव हो तो हथिनीकुंड बैराज से सीमित मात्रा में पानी छोड़ें ताकि दिल्ली में यमुना नदी में जल स्तर और न बढ़े। केजरीवाल ने कहा कि केंद्रीय जल आयोग ने भविष्यवाणी की है कि बुधवार रात जलस्तर 207.72 मीटर को पार कर सकता है जो बहुत चिंता का विषय है। "यमुना नदी का जलस्तर 207.71 मीटर तक पहुंच चुका है, जिसने 45 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। यह स्तर खतरे के निशान 205.33 मीटर से काफी ज्यादा है।

पेरिस की यात्रा के बाद यूएई जाएंगे पीएम मोदी

राष्ट्रपति अल नाहयान से करेंगे मुलाकात

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पेरिस की दो दिवसीय यात्रा पूरी करने के बाद 15 जुलाई को अबु-धाबी के लिए उड़ान भरेंगे। इस दौरान वह अबू धाबी के शासक और संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से मुलाकात करेंगे।

पीएम मोदी की यूएई यात्रा को लेकर विदेश मंत्रालय ने कहा है, 'भारत-यूएई के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी लगातार मजबूत हो रही है। ऐसे में प्रधानमंत्री की आगामी यात्रा ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, खाद्य सुरक्षा, फिनटेक, रक्षा और संस्कृति जैसे विभिन्न क्षेत्रों में दोनों देशों के रिश्तों को आगे बढ़ाने का काम करेगी।

बैस्टिल-डे परेड में सम्मानित अतिथि होंगे पीएम मोदी

बता दें कि राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रां के निमंत्रण पर पीएम नरेंद्र मोदी 13 जुलाई को फ्रांस की यात्रा पर जा रहे हैं, जहां वह 14 जुलाई को पेरिस में होने वाली बैस्टिल-डे परेड में सम्मानित अतिथि होंगे। इस परेड में होने वाली ट्राई-सर्विस में भारतीय सशस्त्र बलों की टुकड़ी भी भाग लेगी।

फ्रांस के प्रधानमंत्री से मिलेंगे पीएम मोदी

विदेश मंत्रालय ने बताया कि राष्ट्रपति मैक्रों, प्रधानमंत्री के सम्मान में एक राजकीय भोज के साथ-साथ एक निजी रात्रिभोज की भी मेजबानी करेंगे।

इसके अलावा दोनों नेता व्यापक चर्चा भी करेंगे। विदेश मंत्रालय के मुताबिक पीएम मोदी देश की सीनेट और नेशनल असेंबली के अध्यक्षों से भी मुलाकात करेंगे।

जेएनयू के पूर्व छात्र नेता उमर खालिद को झटका

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने जवाहर लाल नेहरू (जेएनयू) के पूर्व छात्र उमर खालिद को एक बार फिर झटका दिया है। उसकी जमानत याचिका पर सुनवाई 24 जुलाई के लिए स्थगित कर दी है।

खालिद ने फरवरी 2020 में नॉर्थ ईस्ट दिल्ली में हुए सांप्रदायिक दंगों की व्यापक साजिश से जुड़े यूएपीए मामले में जमानत की मांग की है। सुप्रीम कोर्ट इसी मामले को लेकर बुधवार को सुनवाई कर रहा था। सुनवाई के दौरान खालिद की जमानत याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए दिल्ली पुलिस के वकील ने समय मांगा। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने 24 जुलाई के लिए सुनवाई स्थगित कर दी। बता दें कि दिल्ली पुलिस ने उमर खालिद को सितंबर 2020 में गिरफ्तार किया था।

बालासोर ट्रेन हादसे में 7 अफसर सस्पेंड, रेलवे ने कहा-ये सतर्क होते तो हादसा नहीं होता

भुवनेश्वर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। ओडिशा के बालासोर में पिछले महीने हुए ट्रिपल ट्रेन हादसे में सीबीआई ने बुधवार को 7 अफसरों को सस्पेंड कर दिया है। इनमें गिरफ्तार होने वाले 3 रेलकर्मी भी शामिल हैं।

यह जानकारी साउथ ईस्टर्न रेलवे के जरनल मैनजेर अनिल कुमार मिश्रा ने दी है। जब उनसे अफसरों के सस्पेंड होने की वजह पूछी गई तो उन्होंने कहा कि अगर ये अधिकारी सतर्क होते तो हादसा नहीं होता। 7 जुलाई को सीबीआई ने तीन रेल कर्मचारियों को गिरफ्तार किया था। इनमें सीनियर सेक्शन इंजीनियर अरुण कुमार मोहंता, सेक्शन इंजीनियर मोहम्मद आमिर खान और टेक्नीशियन पप्पू कुमार शामिल थे। तीनों पर गैर इरादतन हत्या और सबूत मिटाने का आरोप है। सूत्रों का कहना है कि इन तीनों की लापरवाही के कारण ही हादसा हुआ। सूत्रों का यह भी दावा है कि तीनों आरोपी जानते थे कि उनकी लापरवाही से बड़ा हादसा हो सकता है। रेल हादसे में 293 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई और 1,000 से ज्यादा लोग घायल हुए थे।

बालासोर हादसे की वजह सिग्नलिंग सिस्टम में खराबी

हादसे की जांच सीबीआई कर रही है। एक जांच रेलवे बोर्ड की ओर से कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी (सीआरएस) ने भी की है। 3 जुलाई को सीआरएस ने 40 पेज की रिपोर्ट बोर्ड को सौंपी। रिपोर्ट के मुताबिक, लेवल-क्रॉसिंग लोकेशन बॉक्स के अंदर तारों की गलत लेबलिंग की वजह से ऑटोमेटेड सिग्नलिंग सिस्टम में गड़बड़ी हुई। जो हादसे का कारण बना।

क्रॉसिंग लोकेशन बॉक्स में तारों की गलत लेबलिंग के बारे में सालों तक मालूम ही नहीं चला। मेंटेनेंस के दौरान भी इसमें गड़बड़ी हुई है।

भाजपा का आरोप कर्नाटक में 'जंगलराज'

बेंगलुरु, 12 जुलाई (एजेंसियां)। पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने बुधवार को कहा कि कर्नाटक में 'जंगल राज' जैसा माहौल है, जिस वजह से आम आदमी बिना डर के बाहर नहीं निकल पा रहा है। पूर्व सीएम ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा, ''जैन मुनि की हत्या कर दी गई, हमारे कार्यकर्ता की हत्या कर दी गई, आम लोगों की हत्या की जा रही है और तकनीकी विशेषज्ञों की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई।

पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के नेतृत्व में भाजपा विधायकों ने विधानसभा परिसर में गांधी प्रतिमा के पास विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि हत्यारे ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर वीडियो अपलोड किया था क्योंकि उसे कोई डर नहीं है। पुलिस पर दबाव डाला जा रहा है और एक पुलिस अधिकारी जिसने गैरकानूनी कार्य को रोकने की कोशिश की थी, उसकी हत्या कर दी गई। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अपने राजनीतिक आकाओं के आगे नतमस्तक हैं और हत्यारों में बिल्कुल भी खौफ नहीं है।

सरकार हमारी मांगों का जवाब नहीं दे रही है। हमने राज्यपाल से डीजीपी और आईजीपी को तलब करने और इस संबंध में निर्देश जारी करने का अनुरोध किया है। कर्नाटक की स्थिति को केंद्र सरकार के संज्ञान में लाने का भी अनुरोध किया गया है। राज्यपाल ने हमसे वादा किया है कि वह वरिष्ठ अधिकारियों से बात करेंगे। हम राज्यपाल के आदेश का इंतजार करेंगे और मामले को जनता के बीच ले जाएंगे।

बीजेपी ने राज्यपाल को एक ज्ञापन भी सौंपा है, जिसमें कहा गया कि हम आपके ध्यान में लाना चाहेंगे कि हाल ही में दो क्रूर घटनाएं हुई हैं। जिनमें कर्नाटक राज्य सरकार राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति बनाए रखने में पूरी तरह से विफल रही है।

राहुल गांधी से पहले पूर्णेश मोदी पहुंचे सुप्रीम कोर्ट

मोदी सरनेम मानहानि मामले में कैविएट दाखिल की

अहमदाबाद, 12 जुलाई (एजेंसियां)। मोदी सरनेम मामले से जुड़े मानहानि मामले में गुजरात हाई कोर्ट से झटका खा चुके राहुल गांधी की उम्मीदें अब सुप्रीम कोर्ट पर टिकी हैं। लेकिन उनकी अपील से पहले ही शिकायतकर्ता बीजेपी विधायक पूर्णेश मोदी ने सुप्रीम कोर्ट में कैविएट याचिका दायर कर दी है।

याचिका में पूर्णेश मोदी ने कहा है कि अगर राहुल गांधी गुजरात हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करते हैं तो कोर्ट को शिकायतकर्ता का पक्ष भी सुनना चाहिए। बिना किसी का पक्ष सुने कोई भी आदेश जारी न किया जाए। हालांकि, अभी तक राहुल गांधी सुप्रीम कोर्ट नहीं गए हैं, लेकिन संभव है कि वह जल्द ही सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटा सकते हैं।

राहुल गांधी की याचिका हाईकोर्ट खारिज कर चुका है

पिछले दिनों गुजरात हाई कोर्ट ने मोदी सरनेम मानहानि मामले में निचली अदालत द्वारा सुनाई गई दो साल की सजा पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। हाई कोर्ट ने निचली अदालत के फैसले को बरकरार रखते हुए कहा था कि इस केस के अलावा राहुल के खिलाफ कम से कम 10 केस पेंडिंग हैं। ऐसे में सूरत कोर्ट के फैसले में दखल देने की जरूरत नहीं है।

बता दें कि राहुल गांधी ने 2019 में कर्नाटक की सभा में मोदी सरनेम को लेकर बयान दिया था। कहा था- सभी चोरों का सरनेम मोदी क्यों होता है।

कर्नाटक कांग्रेस का मौन प्रदर्शन

बेंगलुरु, 12 जुलाई (एजेंसियां)। राहुल गांधी के राजनीतिक करियर को खत्म करने की भाजपा सरकार की कथित साजिश के खिलाफ कर्नाटक कांग्रेस बेंगलुरु के फ्रीडम पार्क में एक दिवसीय मौन विरोध प्रदर्शन कर रही है। मुख्यमंत्री सिद्दारमैया, उप मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार को काला मास्क पहनकर और मुंह ढंककर विरोध प्रदर्शन करते देखा गया। विरोध प्रदर्शन में सभी विधायक, मंत्री, सांसद और नेताओं ने हिस्सा लिया। शिवकुमार ने केंद्र की भाजपा सरकार पर साजिश रचने और राहुल गांधी का राजनीतिक करियर खत्म करने का प्रयास करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा हम इसकी निंदा करते हैं। देश भर में राहुल गांधी के साथ खड़े होने का संदेश देना होगा जो सच्चाई और देश के लिए खड़े हैं। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की सफलता और कर्नाटक में मिली बड़ी जीत को बर्दाश्त नहीं कर पाने के कारण उनकी संसद सदस्यता निलंबित कर दी गई।

सीजेआई ने शायरी से किया जजों का स्वागत

सम्मान समारोह में बोले-देर लगी आने में तुमको, शुक्र है फिर भी आए तो

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। कॉलेजियम सिस्टम की सिफारिश के बाद छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा और सीनियर एडवोकेट कलपति वेंकटरमन विश्वनाथन को सुप्रीम कोर्ट में बतौर जज प्रमोट किया गया है।

सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा कि सिफारिश के 72 घंटे के भीतर दोनों की सुप्रीम कोर्ट के जज के रूप में नियुक्ति से पता चलता है कि कॉलेजियम जीवंत, एक्टिव और अपने काम के लिए समर्पित है। हमने जिन्हें भी चुना है, उसके लिए सुप्रीम कोर्ट के सभी जजों के परामर्श के बाद ही चुना है। हमें सरकार का भी शुक्रिया करना चाहिए, जिसने इस प्रक्रिया में 72 घंटे से भी कम का समय लिया। सीजेआई ने कहा- जस्टिस मिश्रा का जीवन बहुत ही साधारण परिवार से शुरू हुआ था। यह बताता है कि सुप्रीम कोर्ट में आने वाले जज भारतीय समाज से गहराई से जुड़े हुए हैं। दूसरी तरफ, उन्होंने जस्टिस विश्वनाथन के बारे में कहा कि वह बार के यंग मेम्बर्स के लिए एक आदर्श और गुरु रहे हैं। उन्होंने युवा वकीलों की टीम बनाने में योगदान दिया है।

टीएमसी की एकतरफा जीत, भाजपा दूसरे नंबर पर

टीएमसी पर कांग्रेस कार्यकर्ता की हत्या का आरोप

कोलकाता, 12 जुलाई (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल में ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद चुनाव के वोटों की गिनती बुधवार को दूसरे दिन भी जारी रही। टीएमसी बंपर बढ़त बनाए हुए है। ग्राम पंचायत में 34,359 सीटें जीत चुकी है। वहीं भाजपा 9,545 सीटों पर जीत के साथ दूसरे नंबर पर है। पंचायत समिति और जिला परिषद में भी ममता की पार्टी आगे है। इस बीच राज्य में चुनावी हिंसा का दौर थम नहीं रहा है। बुधवार को टीएमसी पर कांग्रेस कार्यकर्त्ता राजेश शेख की हत्या का आरोप लगा। वहीं, बम हमले में टीएमसी कार्यकर्ता असिक आलम घायल हो गया। बीती रात साउथ 24 परगना के दो इलाकों में हिंसा की घटनाएं हुईं। इनमें 3 लोग मारे गए और एसपी घायल हो गए। पहली घटना भांगर में हुई, जहां आईएसएफ और टीएमसी के कार्यकर्ता भिड़ गए। यहां आईएसएफ के दो लोग मारे गए। परिवार का आरोप है कि हमलावर पुलिस की वर्दी में आए थे और उन्होंने कार्यकर्ताओं के साथ मारपीट की।

दूसरी घटना यहां से 60-70 किमी दूर रायदिघी में हुई। यहां पर भाजपा और टीएमसी की भिड़ंत हुई, जिसमें टीएमसी का एक कार्यकर्ता मारा गया। इस तरह अब तक चुनावी हिंसा में राज्य में 42 से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं।

टीएमसी ने आरोप लगाया है कि बंगाल के लोगों का दिल जीतने में फेल रही भाजपा बदले की कार्रवाई पर उतर आई है! पूर्व मेदिनीपुर के खेजुरी में, हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर भाजपा के गुंडों ने हमला किया है। विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने चुनाव से पहले बंगाल के लोगों की सेवा करने का दावा किया था लेकिन वह अब हिंसा भड़का रहे हैं। पहले दिन की काउंटिंग में टीएमसी ने पार्टी ने ग्राम पंचायत की 34,359 सीटों पर जीत हासिल की है, जबकि 752 सीटों पर आगे है। पंचायत समिति की 2,155 और जिला परिषद की 554 सीटें जीती हैं। इसके साथ ही चुनावों में टीएमसी की जीत तय हो गई है।

2 लाख मुआवजा और होम गार्ड की नौकरी की घोषणा

कोलकाता, 12 जुलाई (एजेंसियां)। पंचायत चुनाव में हुई हिंसा पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा- यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इतने सारे लोग मारे गए। 19 लोगों की मृत्यु हुई है उन्हें 2 लाख मुआवजा और विशेष होम गार्ड की नौकरी दी जाएगी। इनमें टीएमसी के भी 10 लोग शामिल हैं। हम किसी पार्टी के रंग देखकर सहायता प्रदान नहीं करेंगे, जिनकी मृत्यु हुई है उन्हें सरकार की ओर से मुआवजा और नौकरी दी जाएगी। सीएम ममता बनर्जी ने कहा 2 महीने से मणिपुर जल रहा है अब फैक्ट फाइंडिंग कमेटी कहां है? जब असम एनआरसी को लेकर जल रहा था ये टीम कहां थी? यह फैक्ट फाइंडिंग कमेटी कहां होती है जब उत्तर प्रदेश में 677 सीटों पर मतदान नहीं होते हैं? रेसलर अपने ऊपर हुए अत्याचार को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे तब कहां थी फैक्ट फाइंडिंग कमेटी? यहां(पश्चिम बंगाल में) 2 साल के अंदर इतनी टीमों और आयोगों ने बंगाल का दौरा किया, करीब 154 टीमें बंगाल का दौरा कर चुकी हैं। यह बीजेपी प्रोटेक्शन कमिटी है न कि फैक्ट फाइंडिंग कमेटी।

बागेश्वर बाबा के कार्यक्रम में भगदड़, 10 घायल

अर्जी लगाने के लिए लगी थी भीड़, गर्मी-उमस से बेहोश हुए-गिरने से कई चोटिल

गौतमबुद्धनगर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। ग्रेटर नोएडा में बागेश्वर वाले बाबा पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के दिव्य दरबार में बुधवार को भीड़ ज्यादा होने से भगदड़ मच गई। गर्मी-उमस होने से कई लोग बेहोश हो गए। 10 लोगों को गंभीर चोटें आई हैं। सभी को अस्पताल में भर्ती किया गया है। घटना के वक्त कार्यक्रम में 5 लाख से ज्यादा लोग मौजूद थे।

दरबार में अर्जी लगाने की होड़ मची थी। भीड़ बेकाबू हो गई और अफरा-तफरी मच गई। बताया जा रहा है कि वीआईपी पास से पीछे छोटे से गेट से एंट्री करवाई जा रही थी, वहां पर बिजली के तार होने से एक महिला को करंट लगा है। घायल हुए लोगों में ज्यादातर बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं हैं। फिलहाल पुलिस ने हालात पर काबू पा लिया है। पंडाल में अभी भी 1 लाख से ज्यादा लोग कथा सुनने के लिए मौजूद हैं।

ग्रेटर नोएडा के जैतपुर में बागेश्वर सरकार पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की कथा चल रही है। बुधवार को बड़ी संख्या में लोग दिव्य दरबार में शामिल होने पहुंचे थे।

भीड़ अधिक होने से हालात बेकाबू हो गए

कार्यक्रम के लिए आयोजकों तीन पंडाल लगाए थे और तीनों भर गए थे। पंडाल के बाहर भी भक्तों की भीड़ लगी रही। बड़ी संख्या में वीवीआईपी पास जारी किए गए थे, लेकिन

भीड़ को देखते हुए वीआईपी एंट्री पहले ही बंद कर दी गई थी। दोपहर 12 बजे से पहले ही दिव्य दरबार में पांच लाख से अधिक लोग पहुंच चुके थे। इसके बाद भी श्रद्धालुओं का दिव्य दरबार में आना लगातार जारी रहा। धीरेंद्र शास्त्री की एक झलक पाने के लिए कार्यक्रम स्थल पर हालात बेकाबू हो गए। स्थिति को देख पुलिस ने श्रद्धालुओं से दिव्य दरबार के समाप्त होने की बात कही। श्रद्धालुओं से घर जाने का अनुरोध किया। लोगों से कहा गया कि वे घरों से ही प्रवचन सुनें। टीवी पर उनका कार्यक्रम आ रहा है।

बाबा के दिव्य दरबार के मुख्य आयोजक शैलेंद्र शर्मा का कहना है, यहां पर किसी भी तरह की कोई भगदड़ नहीं मची है। जो भी वीडियो सामने आए हैं, उनको गलत तरीके से पेश किया गया है। यहां हमारे और प्रशासन के अनुमान से ज्यादा लोग आ गए। उसी की वजह से थोड़ी दिक्कत हुई, अब सब कुछ ठीक है।

बाबा बोले-हली-उल्लाह करने वालों, हम तुम्हारी ठठरी बांधने वाले

इससे पहले दिव्य दरबार में पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने कहा- भारत में जितने भी हली-उल्लाह करने वाले हैं, वो सुन लें। अब तुम्हारी यह फूंकने और फेंकने वाले चमत्कार बंद हो जाएंगे। हम तुम्हारी ठठरी बांधने वाले हैं। अगर तुम में दम है तो कभी भी आ जाना, हम तुम्हारे बारे में इतना बताएंगे कि तुम अपनी लुगाई को भी मुंह नहीं दिखा पाओगे। जो लोग फूंक मारकर पाखंड करते हैं, वो ये सब बंद कर दें। सनातन से बड़ी कोई शक्ति नहीं है। जो लोग इसे अंधविश्वास मानते हैं और कहते हैं कि भगवान नहीं है, उन लोगों को मेरा खुला चैलेंज है, वह कभी भी आकर बात कर लें, उनकी पूरी पोल पट्टी खोल दूंगा।

16 तक चलनी है श्रीमद् भागवत कथा

ग्रेटर नोएडा में 10 जुलाई से बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र शास्त्री की श्रीमद् भागवत कथा चल रही है। कथा 16 जुलाई तक चलेगी। 12 जुलाई (बुधवार) को बाबा बागेश्वर के दिव्य दरबार का आयोजन सुबह 10 बजे से किया गया। बाबा के दिव्य दरबार में लाखों की संख्या में भक्त पहुंचे।

गोवा सरकार ने केंद्र को 930 करोड़ रुपये के प्रस्तावों की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट भेजी: मुख्यमंत्री

पणजी, 12 जुलाई (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कहा है कि गोवा सरकार ने वित्त पोषण के लिए केंद्र सरकार को 930 करोड़ रुपये के प्रस्तावों की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट भेजी है। मुख्यमंत्री ने एक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करने के बाद मंगलवार को पत्रकारों से कहा कि विभिन्न सुधारों के बीच गोवा की वित्तीय हालत अच्छी है। उन्होंने कहा कि सरकार ने राज्य में लागू किये जाने वाले 930 करोड़ रुपये के विभिन्न प्रस्तावों के लिये केंद्र सरकार को विस्तृत परियोजना रिपोर्ट सौंपी है। सावंत ने कहा कि राज्य सरकार ने केंद्र द्वारा पूर्व में स्वीकृत परियोजनाओं के लिए 90 प्रतिशत उपयोगिता प्रमाण पत्र पहले ही जमा कर दिया है।

राहुल गांधी जल्द हो सकते हैं नए घर में शिफ्ट

कांग्रेस की दिग्गज नेता के फ्लैट में बनेंगे किराएदार

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को जल्दी ही नया घर मिल सकता है। सूत्रों के अनुसार, राहुल गांधी के लिए नए घर की तलाश पूरी हो चुकी है। इसका मुआयना भी किया जा सकता है और जल्द ही वे इसमें शिफ्ट हो सकते हैं। राहुल गांधी जिस घर में शिफ्ट होने वाले हैं, वो कांग्रेस की नेता और दिल्ली की सीएम रहीं दिवंगत शीला दीक्षित का है। संभावना है कि राहुल गांधी जल्द ही शीला दीक्षित के निजामुद्दीन ईस्ट स्थित फ्लैट में शिफ्ट हो सकते हैं। अभी तक इस घर में शीला दीक्षित के बेटे संदीप दीक्षित रह रहे थे, लेकिन अब वे इसके पास ही स्थिति अपनी मौसी के घर में शिफ्ट होने वाले हैं।

राहुल गांधी को पसंद आया फ्लैट- सूत्र

सूत्रों के अनुसार, राहुल गांधी को ये घर पसंद आया है और उन्होंने रेंट पर इसमें शिफ्ट होने पर सहमति भी जताई है। यानि राहुल गांधी अब किराए के घर में रहेंगे। राजनीति में उतरने के बाद ये पहली बार होगा जब वे किराए के घर में रहने जा रहे है। हालांकि अभी इस बारे में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। सूत्रों ने कन्फर्म किया है कि राहुल गांधी की टीम एक सप्ताह पहले फ्लैट देखने गई थी और उन्हें ये पसंद भी आया था। चूंकि संदीप दीक्षित दूसरे घर में जा रहे हैं, इसलिए राहुल गांधी अब इस घर में शिफ्ट हो सकते हैं। फिलहाल, अंतिम फैसला अभी लिया जाना बाकी है।

राहुल गांधी ने खाली किया था सरकारी आवास

इसी साल गुजरात की एक अदालत ने राहुल गांधी को 2019 में मोदी सरनेम वाले बयान पर आपराधिक मानहानि का दोषी पाया था। कोर्ट ने राहुल गांधी को दो साल की सजा सुनाई थी, जिसके बाद कांग्रेस नेता को अपनी लोकसभा की सदस्यता गंवानी पड़ी थी। लोकसभा सदस्यता जाने के बाद राहुल गांधी को उनका सरकारी आवास खाली करने का नोटिस मिला था, जिसके बाद उन्होंने 12, तुगलक लेने वाला बंगला खाली कर दिया था। फिलहाल, वे अपनी मां सोनिया गांधी के साथ 10, जनपथ रोड स्थित आवास पर रह रहे हैं।

जमीन के बदले नौकरी घोटाला मामले में सुनवाई टली

अब 8 अगस्त को होगी बहस

पटना, 12 जुलाई (एजेंसियां)। जमीन के बदले नौकरी मामले में सुनवाई आठ अगस्त तक के लिए टल गई है। केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने बुधवार को दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट को सूचित किया कि उसे पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव और कुछ रेलवे अधिकारियों के खिलाफ अभियोजन मंजूरी हासिल करने में एक महीने का समय लगेगा, जिसके बाद कोर्ट ने सुनवाई टाल दी। इससे पहले 3 जुलाई को सीबीआई ने इस मामले में सप्लीमेंट्री चार्जशीट दायर की थी। इसमें लालू यादव, राबड़ी देवी के साथ तेजस्वी यादव को भी आरोपी बनाया गया था। इसके अलावा मामले में 17 अन्य लोगों के नाम शामिल हैं।

क्या है मामला?

आरोप है कि 2004 से 2009 के बीच रेलमंत्री के तौर पर अपने कार्यकाल के दौरान लालू प्रसाद यादव ने उम्मीदवारों से ग्रुप डी की नौकरी के बदले अपने परिवार के सदस्यों के नाम पर जमीन ली थी। बता दें कि इन नौकरी के लिए मंत्रालय ने न तो कोई विज्ञापन निकाला था और न ही कोई नोटिस जारी किया था। इसके अलावा पटना में रहने वाले लोगों को मुंबई, जबलपुर, कोलकाता और जयपुर जोनल रेलवे में सब्स्टीट्यूट के तौर पर नियुक्त किया गया था।

प्राइवेट कंपनी के नाम खरीदी जमीन

सीबीआई का कहना है कि यह जमीन लालू प्रसाद यादव ने एक प्राइवेट कंपनी के नाम पर खरीदी थी और तुरंत पत्नी राबड़ी देवी और बेटे तेजस्वी यादव के नाम पर ट्रांसफर कर दिया था। कंपनी ने यह जमीन तकरीबन एक करोड़ 77 लाख रुपये में खरीदी थी और इसे मात्र एक लाख रुपये में लालू और उनके परिवार के नाम ट्रांसफर कर दिया था, जबकि इसकी मार्केट वैल्यू कहीं ज्यादा थी।

इंडियन मुजाहिदीन के चार आतंकियों को 10 साल की सजा

एनआईए कोर्ट ने इस मामले में ठहराया था दोषी

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। दिल्ली की एक कोर्ट ने बुधवार को इंडियन मुजाहिदीन के चार आतंकियों को सजा सुनाई है। इन सभी को देशभर में आतंकवादी हमलों को अंजाम देकर सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ने की आपराधिक साजिश रचने का दोषी माना था। जिसके बाद आज सुनवाई करते हुए 10 साल की सजा सुनाई। विशेष न्यायाधीश शैलेन्द्र मलिक ने आरोपियों दानिश अंसारी, आफताब आलम, इमरान खान और ओबैद-उर-रहमान को आईपीसी की विभिन्न धाराओं और कठोर गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम के तहत दोषी ठहराया था। जानकारी के लिए बता दें कि बीती 7 जुलाई को कोर्ट ने इंडियन मुजाहिदीन के सभी सहयोगियों को दोषी करार देते हुए आदेश पारित कर दिया था। जिसके बाद सजा पर फैसला 10 जुलाई को मुकर्रर किया गया। एनआईए ने सितंबर 2022 में धारा 121ए के तहत मामला दर्ज किया था। उन पर धारा 17 (आतंकवादी कृत्य के लिए धन जुटाना), 18 (आतंकी कृत्य करने की साजिश), 18ए (आतंकवादी शिविरों का आयोजन), 18बी (आतंकवादी कृत्य के लिए व्यक्तियों की भर्ती) और 20 (आतंकवादी संगठन का सदस्य होना) के तहत भी आरोप लगाए गए। एजेंसी ने आरोप लगाया कि आरोपी अपने पाकिस्तान स्थित सहयोगियों और अपने स्लीपर सेल की सक्रिय सहायता से देश के विभिन्न हिस्सों में आतंकवादी कृत्य को अंजाम देने के लिए बड़े पैमाने पर भर्ती/नए सदस्यों को शामिल करने का काम कर रहे थे। भारत में महत्वपूर्ण और प्रमुख स्थानों, विशेषकर दिल्ली में बम विस्फोट करके आतंकवादी कृत्य को अंजाम देना उनका मकसद था। एनआईए ने कहा स्रोत जानकारी से पता चला है कि आईएम के गुर्गों और उसके प्रमुख संगठनों को अपनी आतंकी गतिविधियों को वित्तपोषित करने के लिए विदेशों से नियमित धन मिल रहा है।

कड़ी सुरक्षा के बीच जम्मू से 7800 तीर्थयात्रियों का 10वां जत्था रवाना, लगे बाबा के जयघोष

जम्मू, 12 जुलाई (एजेंसियां)। अमरनाथ तीर्थयात्रियों का 10वां जत्था कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच बुधवार तड़के जम्मू आधार शिविर से कश्मीर के लिए रवाना हुआ। अधिकारियों ने बताया कि बुधवार को जत्थे में 7,800 से भक्त शामिल थे। रामबन में जम्मू श्रीनगर हाईवे भूस्खलन के बाद बंद होने से करीब तीन दिनों तक यात्रा बंद होने के बाद दोपहर को फिर से शुरू हुई। अधिकारियों ने कहा कि 1 जुलाई से अब तक कुल 1,37,353 तीर्थयात्री अमरनाथ मंदिर के दर्शन कर चुके हैं।

दिल्ली दंगा मामला

आप के पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन को दिल्ली हाईकोर्ट से जमानत

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। दिल्ली दंगों से जुड़े पांच अलग-अलग मामलों में आम आदमी पार्टी के पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन को दिल्ली हाईकोर्ट से जमानत मिल गई है। दिल्ली हाईकोर्ट के जज जस्टिस अनीश दयाल की बेंच ने ये फैसला सुनाया है। ताहिर के खिलाफ ये पांचों एफआईआर दयालपुर पुलिस स्टेशन में दर्ज की गई थी। ताहिर के खिलाफ हत्या के प्रयास, दंगा और आपराधिक साजिश के आरोप में मुकदमा दर्ज किया गया था। आज एचसी ने कुछ शर्तों के साथ इन पांचों केस में ताहिर को जमानत दे दी है। साल 2020 फरवरी में उत्तर-पूर्वी दिल्ली में दंगे हुए थे, जिसमें कई लोगों की जान चली गई थी। ताहिर हुसैन पर दंगे भड़काने और उनकी फंडिंग के आरोप के साथ ही अन्य कई आरोप हैं। दंगों के वक्त ताहिर हुसैन आम आदमी पार्टी के पार्षद थे, लेकिन आरोपी साबित होने पर पार्टी ने उन्हें निकाल दिया था। ताहिर हुसैन ने एक जेल अधिकारी पर मानसिक उत्पीड़न का भी आरोप लगाया था।

केवल पिछले पहियों के बल इस प्लेन की हुई इमरजेंसी लैंडिंग

बेंगलुरु, 12 जुलाई (एजेंसियां)। एचएएल के बेंगलुरु एयरपोर्ट से एक हैरतअंगेज वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में दिख रहा है कि प्राइवेट जेट बिना लैंडिंग गियर का सपोर्ट लिए ही लैंड करता है और सुरक्षित तरीके से लैंड कर जाता है। ये वीडियो देखकर हर कोई हैरान है। पायलट की सूझबूझ से पिछले पहियों के सपोर्ट पर ही ये प्लेन लैंड हो गया।

पीछे के पहियों पर करा दी सेफ लैंडिंग

जानकारी मिली है कि मंगलवार को एक प्राइवेट विमान ने एचएएल से बेंगलुरु के केमोगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए उड़ान भरी, लेकिन इस दौरान विमान के नोज लैंडिंग गियर में तकनीकी खराबी आ गई, जिसके बाद पायलट ने वापस एचएएल हवाई अड्डे पर उतरने का फैसला किया। पायलट ने केवल पीछे के पहियों पर ही लैंडिंग का प्रयास किया और रनवे पर काफी दूर तक बिना नोस को टच किए ही ले गया। इमरजेंसी लैंडिंग के बाद प्लेन सुरक्षित तरीके से लैंड हो गया और विमान में बैठे दोनों पायलट सुरक्षित रहे। गनीमत रही कि इस विमान में कोई यात्री नहीं थी।

रनवे पर किए गए एमरजेंसी लैंडिंग के इंतजाम

जैसे ही इस चार्टेड प्लेन ने एचएएल से बेंगलुरु के केमोगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए उड़ान भरी, विमान के नोज लैंडिंग गियर में तकनीकी खराबी आ गई। इसके बाद पायलट ने तुरंत एचएएल के एटीसी को सूचित किया तो रवने पर एमरजेंसी लैंडिंग के लिए प्रबंध किए गए और विमान की एचएएल में सुरक्षित आपातकालीन लैंडिंग कराई गई। इस दौरान विमान में बैठे पायलट और को-पायलट सुरक्षित रहे।

4 साल में 30 प्रतिशत बढ़ी विदेश मंत्री एस. जयशंकर की प्रॉपर्टी

दिल्ली में नया मकान भी खरीदा देखें पूरी डिटेल

मंत्री एस. जयशंकर

नई दिल्लीविदेश मंत्री एस। जयशंकर और उनकी पत्नी क्योको जयशंकर की प्रॉपर्टी में पिछले 4 साल के दौरान करीब 30 परसेंट (29.4%) का इजाफा हुआ है। इसी दौरान दिल्ली के वसंत विहार में एक अपार्टमेंट भी खरीदा। एस। जयशंकर 11 जुलाई को गुजरात के गांधीनगर में राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने पहुंचे थे। इस दौरान शपथ पत्र में उन्होंने अपनी प्रॉपर्टी का ब्यौरा भी दिया है।

कितनी प्रॉपर्टी के मालिक हैं एस। जयशंकर?

भाजपा नेता एस। जयशंकर ने अपने चुनावी हलफनामे में बताया है कि उनके पास कुल 20.09 करोड़ रुपए की प्रॉपर्टी है। जिसमें दो मकान भी हैं और दोनों राजधानी दिल्ली में हैं। एक अपार्टमेंट हाल ही में खरीदा है। इसके अलावा जयशंकर शिमला में 1.5 एकड़ कृषि भूमि के मालिक भी हैं।

रेंट और सैलरी है आय का जरिया

जयशंकर ने अपने एफिडेविट में बताया है कि उनकी आय का जरिया बतौर राज्यसभा सदस्य मिलने वाली सैलरी और रेंट है। दूसरी तरफ उनकी पत्नी क्योको जयशंकर कंसल्टेंसी फीस से कमाई करती हैं। क्योको, दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट और जीएमआर हैदराबाद इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए बतौर कंसलटेंट काम करती हैं। एफिडेविट के मुताबिक क्योको पर 1.12 लाख रुपए जीएसटी भी बकाया है।

विदेशी बैंकों में पैसे

एफिडेविट पर नजर डाले तो जयशंकर ने पिछले 4 सालों के दौरान नया अपार्टमेंट तो खरीदा ही है, साथ ही विदेशी बैंकों में जमा पैसे और ज्वेलरी की वैल्यू में भी इजाफा हुआ है। विदेश मंत्री का सिंगापुर, टोक्यो और वॉशिंगटन डीसी में बैंक अकाउंट है। दूसरी तरफ जयशंकर की पत्नी क्योको की विदेशों में जमा संपत्ति घटी है। 2019 के एफिडेविट में जयशंकर ने बताया था कि उनकी पत्नी ने विदेश के बैंकों में 29.12 लाख रुपये जमा कर रखे हैं। अब यानी 2023 में यह घटकर 24.46 लाख रुपये रह गई है।

जेएनयू से पढ़े, 24 की उम्र में बन गए थे आईएफएस

एस। जयशंकर ने जेओनयू से पढ़ाई की है। इंटरनेशनल रिलेशन में पीएचडी और एमफिल की डिग्री हासिल की है। रशियन और सेंट्रल एशियन पॉलिटिक्स के जानकार माने जाने वाले जयशंकर महज 24 साल की उम्र में आईएफएस अफसर बन गए थे। वह 6 भाषाओं के जानकार हैं।

एस. जयशंकर की प्रॉपर्टी बढ़ी, कर्ज घटा

साल 2019 के एफिडेविट पर नजर डालें तो तब बीजेपी नेता ने बताया था कि उनके पास कुल 15.52 करोड़ रुपये की प्रॉपर्टी है। पिछले चार सालों में जयशंकर का कर्ज भी घट गया है। 2019 में जयशंकर और उनकी पत्नी पर 5.25 करोड़ रुपए कर्ज था, जबकि अब यह घटकर सिर्फ 18.48 लाख ही रह गया है। विदेश मंत्री ने बताया है कि उनके पास 80000 रुपये कैश इन हैंड है। जबकि 2019 में कैश इन हैंड 1.2 लाख रुपये था।

क्योको जयशंकर

कौन हैं विदेश मंत्री जयशंकर की पत्नी?

क्योको जयशंकर विदेश मंत्री की दूसरी पत्नी हैं। उनकी पहली पत्नी शोभा का कैंसर के चलते निधन हो गया था साल। जयशंकर साल 1996 में जापान में डिप्टी चीफ ऑफ मिशन बने और करीब 4 साल यहां रहे। इसी दौरान उनकी मुलाकात क्योको से हुई। दोनों के बीच करीबी बढ़ी और फिर शादी कर ली। बहुत कम लोग जानते हैं कि जयशंकर से शादी के बाद क्योको ने अपना धर्म भी बदल लिया और हिंदू धर्म अपना लिया है।

यूएस: अमेरिका की तुलना में भारत के अल्पसंख्यक ज्यादा सुरक्षित

पूर्व उपराष्ट्रपति बोले- हमारे खून में सेक्युलरिज्म

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। देश के पूर्व उपराष्ट्रपति एम.वेंकैया नायडू ने अमेरिका के वॉशिंगटन में अल्पसंख्यकों को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि भारत में अल्पसंख्यक अमेरिका से भी ज्यादा सुरक्षित हैं। क्योंकि सेक्युलरिज्म (धर्मनिरपेक्षता) भारतीयों के खून में है। दरअसल नेशनल काउंसिल ऑफ एशियन इंडियन एसोसिएशन्स ने ग्रेटर वाशिंगटन डीसी में वेंकैया नायडू के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। एम। वेंकैया नायडू ने कहा कि अल्पसंख्यकों को लेकर भारत के खिलाफ माहौल बनाने में वेस्टर्न मीडिया का एक धड़ा शामिल है। उन्होंने कहा कि मीडिया भी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर फैलाए जा रहे भ्रम का हिस्सा बन गया। वेंकैया नायडू ने कहा कि मैं सबको यह आश्वस्त करना चाहता हूं कि भारत में अल्पसंख्यक अमेरिका के मुकाबले काफी सुरक्षित हैं।

अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और सम्मान

पूर्व उपराष्ट्रपति नायडू ने कहा कि जब हम तुलना करेंगे कि भारत में क्या हो रहा है और दूसरे देशों में क्या चल रहा है। तब आप देखेंगे कि दूसरे देशों में किस तरह से लोगों के साथ भेदभाव किया जा रहा है। वेंकैया नायडू ने बताया कि भारत हमेशा से अपने अल्पसंख्यकों का सुरक्षा और सम्मान का ध्यान रखता है।

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग

उन्होंने कहा कि जिनको भारत में नहीं रहना था या जो पाकिस्तान जाना चाहते थे, वो पहले ही देश को छोड़कर जा चुके हैं। जो भारत में रहना चाहते थे वो यहां आजादी के पहले और उसके बाद भी रह रहे हैं। वहीं पूर्व राष्ट्रपति ने यहां कश्मीर को भारत का हिस्सा बताया। उन्होंने कहा कि यह हमारे देश का अभिन्न अंग है।

ब्रिटेन में पहला हिंदू मंदिर बनाने की मंजूरी

मीडिया रिपोर्ट से मिली जानकारी के मुताबिक ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड शहर में पहला हिंदू मंदिर बनाने की मंजूरी मिल गई है। इसकी मंजूरी ऑक्सफोर्ड की नगर परिषद ने दी है। बताया जा रहा है कि यहां एक स्पोर्ट्स पवेलियन को हिंदू मंदिर में बदल दिया जाएगा। इसके साथ ही सामुदायिक केंद्र भी बनाया जाएगा।

गीता को मिला अहम पद

रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने भारतीय मूल की अमेरिकी गीता राव गुप्ता को अहम पद दिया है। गीता राव को विदेश मंत्रालय में महिलाओं से जुड़ी वैश्विक मुद्दों के लिए एंबेसडर एट लार्ज पद की शपथ दिलाई गई। इस पद के लिए चुनाव में सीनेट में उन्हें 47 के मुकाबले 51 मत मिले।

आज ग्वालियर के दौरे पर रहेंगी राष्ट्रपति

सिंधिया के जयविलास पैलेस में स्थित म्यूजियम का करेंगी भ्रमण

ग्वालियर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू 13 जुलाई को ग्वालियर के दौरे पर रहेंगी। राष्ट्रपति के दौरे की तैयारियों में जिले के सभी अधिकारी बैठकें कर रहे हैं। इसके साथ ही अफसरों के साथ रिहर्सल भी की जा रही है। राष्ट्रपति 13 जुलाई को ग्वालियर के एयरफोर्स स्टेशन पर उतरेंगी। जहां, सड़क मार्ग के जरिए वह ट्रिपल आईटीएम पहुंचेंगी। दीक्षांत समारोह में शामिल होने आ रहीं राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू सिंधिया के जयविलास पैलेस भी जाएंगी, जहां पर वह म्यूजियम का भ्रमण करेंगी। इसके साथ ही जय विलास पैलेस में राष्ट्रपति लंच भी करेंगी। राष्ट्रपति के दौरे को देखते हुए जिले के सभी बड़े अधिकारी बैठक कर उनकी सुरक्षा को लेकर मंथन कर रहे हैं। राष्ट्रपति के दौरे के दौरान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर व ज्योतिरादित्य सिंधिया सहित कई मंत्री साथ रहेंगे। राष्ट्रपति से हवाई अड्डे पर मुलाकात करने वाले भाजपा नेता सहित अन्य लोगों की लिस्ट तैयार की जा रही है। इसके साथ ही सुरक्षा की दृष्टि से मंगलवार को पुलिस के बड़े अधिकारियों की बैठक आयोजित हुई, जिसमें ग्वालियर संभाग और चंबल संभाग के आईजी और डीआईजी शामिल हुए। सुरक्षा की दृष्टि से रिहर्सल का अंतिम रूप दिया जा रहा है।

चंद्रयान -3: कौन हैं रितु कारिधाल जिन्हें चांद पर चंद्रयान को उतारने की मिली थी जिम्मेदारी

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन यानी इसरो 14 जुलाई को अपना महत्वाकांक्षी चंद्रयान मिशन-3 लांच करने वाला है। आंध्रप्रदेश के श्रीहरिकोटा में स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से यह उड़ान भरेगा, जो 23 या 24 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर उतर सकता है। चांद पर चंद्रयान उतारने के इस मिशन की जिम्मेदारी संभाल रही हैं रितु कारिधाल। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से ताल्लुक रखने वाली रितु कारिधाल को रॉकेट वुमन ऑफ इंडिया के नाम से जाना जाता है, अंतरिक्ष के क्षेत्र में काम करने के लंबे अनुभव को देखते हुए इसरो ने चंद्रयान-3 का मिशन डायरेक्टर रितु को बनाया है। इससे पहले वे चंद्रयान-2 समेत कई बड़े अंतरिक्ष मिशनों का हिस्सा रह चुकी हैं, खास बात ये है कि रितु कारिधाल उन वैज्ञानिकों में शुमार हैं जिन्होंने इसरो का युवा वैज्ञानिक पुरस्कार जीता था।

लखनऊ की बेटी हैं रितु कारिधाल

रितु कारिधाल मूलतः लखनऊ की हैं, राजाजीपुरम में उनका आवास है। रितु की शुरुआती पढ़ाई लखनऊ के सेंट एगनिस स्कूल में हुई थी। इसके बाद उन्होंने नवयुग कन्या विद्यालय से पढ़ाई की। लखनऊ विश्वविद्यालय में भौतिकी से एमएससी करने के बाद वह रितु ने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग से एमटेक करने के लिए इंडियन इंस्टीट्यूज ऑफ साइंस बैंगलौर का रुख किया।

इसरो के लिए छोड़ दी थी पीएचडी

एमटेक करने के बाद रितु कारिधाल ने पीएचडी करनी शुरू की और एक कॉलेज में पार्टटाइम प्रोफेसर के तौर पर पढ़ाने लगीं, स्टारसन की रिपोर्ट के मुताबिक इसी बीच 1997 में उन्होंने इसरो में जॉब के लिए अप्लाई किया। वहां उनकी नियुक्ति हो गई। मुश्किल ये थी कि जॉब के लिए उन्हें पीएचडी छोड़नी थी, जिसके लिए वह राजी नहीं थी। जिन प्रोफेसर मनीषा गुप्ता की गाइडेंस वे पीएचडी कर रहीं थीं जब उन्हें ये पता चला तो उन्होंने रितु को इसरो ज्वॉइन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

मंगलयान मिशन में निभाई थी अहम भूमिका

रितु कारिधाल को पहली पोस्टिंग यू आर राव सेटेलाइट सेंटर में मिली थी। यहां उनकी परफॉर्मेंस ने सबको प्रभावित किया। 2007 में उन्हें इसरो युवा वैज्ञानिक का पुरस्कार मिला। ये वो दौर था जब मंगलयान मिशन पर काम शुरू होने वाला था। एक इंटरव्यू में रितु कारिधाल ने बताया था कि 'अचानक ही मुझे बताया कि अब मैं मंगलयान मिशन का हिस्सा हूं, ये मेरे लिए शॉकिंग था, लेकिन उत्साहजनक भी था, क्योंकि मैं एक महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट का हिस्सा बनी थी।

ऐसे मिली चंद्रयान-3 की जिम्मेदारी

रितु कारिधाल चंद्रयान-2 की मिशन डायरेक्टर थीं। उनके अनुभव को देखते हुए 2020 में ही इसरो ने ये तय कर दिया था कि चंद्रयान-3 का मिशन भी रितु के ही हाथों में होगा। इस मिशन के प्रोजेक्ट डायरेक्टर पी वीरामुथुवेल हैं। इसके अलावा चंद्रयान-2 मिशन की प्रोजेक्ट डायरेक्टर रहीं एम वनिता को इस मिशन में डिप्टी डायरेक्टर की जिम्मेदारी दी गई है जो पेलॉड, डाटा मैनेजमेंट का काम संभाल रही हैं।

परिवार को सफलता का श्रेय देती हैं रितु

रितु कारिधाल के परिवार में दो भाई और एक बहन हैं, उनके भाई लखनऊ के राजाजीपुरम में रहते हैं। रितु की शादी अविनाश श्रीवास्तव से हुई है जो बैंगलोर में टाइटन इंडस्ट्री में कार्यरत हैं, इनके दो बच्चे बेटा आदित्य और बेटी अनीषा है। वह अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार को देती हैं, एक इंटरव्यू में रितु ने कहा था कि उनका परिवार ये समझता है कि उनके लिए मिशन कितने जरूरी हैं। वह हर तरीके से मेरी मदद करते हैं, मुझे उनकी चिंता नहीं करनी पड़ती।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

गुरुवार, 13 जुलाई, 2023 3

सुविचार: उफनते तूफान को मात देना है तो अधिक जोखिम उठाते हुए हमें पूरी शक्ति के साथ आगे बढना होगा।

कांग्रेस पार्टी ने रेवंत रेड्डी पर बीआरएस के आरोप के खिलाफ किया प्रदर्शन

खम्मम, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। कांग्रेस पार्टी ने आज तल्लादा मंडल के मल्लावरम गांव में पीसीसी अध्यक्ष रेवंत रेड्डी के खिलाफ सत्तारूढ़ बीआरएस पार्टी द्वारा लगाए गए आरोपों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में पूर्व सांसद पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी ने भाग लिया। किसानों के साथ पोंगुलेटी ने मल्लावरम बिजली उपकेंद्र के सामने धरना दिया।

इस अवसर पर बोलते हुए पोंगुलेटी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी दलितों, आदिवासियों और किसानों के साथ खड़ी रहेगी।

उन्होंने कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री वाईएस राजशेखर रेड्डी के नेतृत्व में मुफ्त बिजली उपलब्ध कराने का श्रेय कांग्रेस पार्टी को दिया जाता है। उन्होंने समृद्ध राज्य तेलंगाना को कर्ज में डूबे राज्य में बदलने के लिए मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव की आलोचना की। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मुफ्त बिजली बंद कर जनता के पैसे का दुरुपयोग किया जा रहा है।

कृषि ऋण माफी के लिए लाभकारी मूल्य प्रदान करने का श्रेय कांग्रेस पार्टी को है। बीआरएस पार्टी के नेता कांग्रेस नेताओं के हर शब्द को तोड़-मरोड़ कर उनकी आलोचना कर रहे हैं। केसीआर ने कहा कि वह कृषि ऋण माफ करेंगे और कहा कि सीएम ने ऐसा नहीं किया है इसे आज भी लागू किया। पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी ने कहा कि लोग रेवंत की बातें सुन रहे थे और उन्होंने कहा कि लोग बीआरएस नेताओं की बातों पर विश्वास करने की स्थिति में नहीं हैं।

किसानों के जीवन में काले दिन लाना चाहती है कांग्रेस : पुव्वाड़ा

खम्मम, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। परिवहन मंत्री पुव्वाड़ा अजय कुमार ने कहा कि कृषि जरूरतों के लिए 24 घंटे बिजली आपूर्ति के खिलाफ टीपीसीसी अध्यक्ष ए रेवंत रेड्डी की टिप्पणी से एक बार फिर साबित हो गया है कि कांग्रेस पार्टी किसान विरोधी है। मंत्री ने बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामा राव के आह्वान पर बुधवार को जिले के रघुनाथपालम में रेवंत रेड्डी की टिप्पणियों के खिलाफ धरने में हिस्सा लिया। विरोध स्वरूप रेवंत रेड्डी का पुतला जलाया गया। सभा को संबोधित करते हुए अजय कुमार ने कहा कि कांग्रेस नेता यह कहकर गरीबों के साथ अन्याय करने की कोशिश कर रहे हैं कि खेती की जरूरतों के लिए तीन घंटे बिजली की आपूर्ति पर्याप्त है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर कांग्रेस सत्ता में आई तो काले दिन फिर आएंगे और किसानों को परेशानी होगी।

फूड डिलीवरी बॉय 20 किलो गांजे के साथ गिरफ्तार

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। रेलवे पुलिस ने सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 10 पर एलटीटी एक्सप्रेस ट्रेन में जांच के दौरान एक फूड डिलीवरी बॉय को 20 किलोग्राम गांजे के साथ गिरफ्तार किया। वह एपी के विशाखापत्तनम से गांजा मुंबई ले जा रहा था। रेलवे पुलिस की माने तो गिरफ्तार कुमार त्र्यंबक उबले, महाणा चॉल, ट्रांजिट कैम, एंटॉप हिल, मुंबई, महाराष्ट्र का रहने वाला है। वह जरूरतमंद लोगों को ऊंची कीमत पर बेचने के लिए एपी राज्य के विशाखापत्तनम से महाराष्ट्र के मुंबई तक गांजा ले जा रहा है। आरोपी ने एपी राज्य के विशाखापत्तनम के वन क्षेत्र से (20) किलोग्राम सूखा गांजा खरीदकर 10 पैकेटों पैंक कर बैग में रखा और विशाखापत्तनम रेलवे स्टेशन चला गया। इसके बाद एलटीटी एक्सप्रेस के कोच संख्या एस-2 में चढ़ गया और अपना गांजा भरा बैग बर्थ के नीचे छिपा दिया और अपनी यात्रा जारी रखी। यात्रा के दौरान ट्रेन सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 10 पर पहुंची। इस दौरान जीआरपी और आरपीएफ स्टाफ ने कोच नंबर एस-2 में चेकिंग के दौरान उसे 20 किलोग्राम गांजे के साथ गिरफ्तार कर लिया। बरामद गांजे का मूल्य लगभग 20 लाख रुपये बतायी जा रही है। एम.श्रीनू, आईआरपी, सिकंदराबाद के साथ एम.ए. मजीद एसआईआरपी, वी. प्रागना आरपीएफ एसआई, सिकंदराबाद पोस्ट, आर. वीरबाबू आरपीएफ इंस्पेक्टर/डी एंड आई/मुख्यालय आदि ने आरोपी की गिरफ्तारी की।

उज्जैनी महांकाली मंदिर में किशन रेड्डी ने की पूजा

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्रीय मंत्री और भाजपा तेलंगाना अध्यक्ष जी. किशन रेड्डी ने आज सिकंदराबाद उज्जैन महांकाली मंदिर का दौरा किया और पूजा की। बाद में मीडियाकर्मियों से बात करते हुए उन्होंने सभी लोगों को बोनालू की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि उन्होंने देवी से तेलंगाना में प्राकृतिक आपदाओं और कोरोना जैसी महामारी को रोकने की प्रार्थना की। बाद में उन्होंने अंबरपेट का दौरा किया और फ्लाईओवर कार्यों का निरीक्षण किया। फ्लाईओवर के निर्माण में हो रही देरी पर प्रतिक्रिया देते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भूमि अधिग्रहण की दिक्कतें थीं। उन्होंने कहा कि इलाके में मुस्लिम कब्रिस्तान के कारण उन्हें दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि पहले तो वे सहमत थे, लेकिन अब वे बाधाएं पैदा कर रहे हैं। उन्होंने राज्य सरकार से इस मुद्दे पर तुरंत प्रतिक्रिया देने और मुसलमानों को समझाने को कहा। उन्होंने मुसलमानों से यह समझने के लिए कहा कि फ्लाईओवर का निर्माण उनके कब्रिस्तान के लिए किसी भी बाधा को दूर करने के लिए किया जा रहा है।

रंगारेड्डी को स्वच्छ सर्वेक्षण प्रतियोगिता में अग्रणी बनाए : प्रतीक जैन

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। रंगारेड्डी जिले के अतिरिक्त कलेक्टर प्रतीक जैन ने कहा कि स्वच्छ सर्वेक्षण प्रतियोगिता में जिले को राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी बनाए। श्री जैन ने यह बात बुधवार को स्वच्छता सर्वेक्षण को लेकर राज्य स्तर पर जूम मीटिंग के माध्यम से हुई बैठक में कहीं। जिला परिषद सीईओ सहित संबंधित अधिकारियों ने भाग लिया। राज्य स्वच्छ भारत मिशन निदेशक सुरेश, आईएफएसए प्रतिनिधि विवेक स्वच्छ सर्वेक्षण ऑनलाइन और ऑफलाइन सर्वेक्षण विवरण समझाया गया। इसके बाद हुई बैठक में अपर कलेक्टर प्रतीक जैन ने जिले की प्रत्येक ग्राम पंचायत में पंचायत विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, एमपीओ एवं एमपीडीओ को संबोधित करते हुए गीला एवं सूखा कचरा पृथक्करण, संग्रहण, शेड का उपयोग, खाद निर्माण, प्लास्टिक की कटौती, सभी संस्थानों में शौचालय, हाथ की सफाई, शौचालय की सुविधा के उपयोग के बारे में चर्चा की। एमपीडीओ और एमपीओ को गड्ढों की स्थापना आदि की लगातार निगरानी करने की सलाह दी। उन्होंने संपूर्ण स्वच्छता को व्यापक स्वास्थ्य की शुरुआत बताते हुए 15 जुलाई से होने वाले स्वच्छता सर्वेक्षण को समाप्त करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में जेडीपी सीईओ दिलीप कुमार डीआरडीए पीडी प्रभाकर, डीपीओ श्रीनिवास रेड्डी, एमपीडीओ, एमपीओ, संबंधित अधिकारी और अन्य लोगों ने भाग लिया।

नगर में फिर नेपाली गैंग सक्रिय, कारोबारी के घर को बनाया निशाना

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। थोड़े समय के अंतराल के बाद, नेपाली गिरोह ने फिर से शहर पर हमला किया और सिकंदराबाद के रामगोपालपेट में एक व्यवसायी को निशाना बनाया। रामगोपालपेट इंस्पेक्टर जी. लिंगेश्वर राव ने कहा कि रामगोपालपेट के रहने वाले कारोबारी राहुल गोयल ने करीब पांच साल पहले नेपाल के मूल निवासी एक चौकीदार को नौकरी पर रखा था। चौकीदार के परिवार के सदस्य व्यवसायी के घर पर घरेलू कामकाज भी देखते थे।

रविवार शाम को, गोयल अपने परिवार के सदस्यों के साथ एक समारोह में भाग लेने के लिए शहर के बाहरी इलाके में एक फार्म हाउस गए थे और दो दिनों तक वहीं रुके थे। मंगलवार शाम को गोयल घर लौटे तो देखा कि चौकीदार और उसका परिवार गायब है। उन्होंने संपत्ति की जांच की और भारी मात्रा में नकदी, सोने के गहने, चांदी के सामान और अन्य महंगी वस्तुएं गायब पाईं, जिनकी कीमत लगभग 4 से 5 करोड़ रुपये हैं।

एक शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज किया और मामले में शामिल संदिग्धों को पकड़ने के लिए कई टीमें गठित कीं। पुलिस को संदेह है कि नौकरानी ने अपने नियोक्ता की अनुपस्थिति के बारे में गिरोह के अन्य सदस्यों को सचेत किया था और उन सभी ने डकैती की योजना बनाई और उसे अंजाम दिया। पुलिस ने घर में लगे निगरानी कैमरों की फ़ीड की जाँच की और नेपाल के रास्ते में अन्य राज्यों की पुलिस से और अपराधियों को पकड़ने के लिए मदद मांगी।

होटल में लगी आग, 40 लोगों को बचाया गया

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। वनस्थलीपुरम पुलिस और अग्निशमन विभाग के कर्मियों ने एक इमारत में फंसे लगभग 40 लोगों को बचाया, जहां कल रात आग लग गई थी। पुलिस के मुताबिक, वनस्थलीपुरम के चिंताकुंटा स्थित होटल की पहली मंजिल पर आधी रात के आसपास आग लग गई। सूचना पर वनस्थलीपुरम पुलिस मौके पर पहुंची और अग्निशमन विभाग को सूचना दी। वनस्थलीपुरम इंस्पेक्टर, डी जालिंदर रेड्डी ने किसी कर्मचारी की मौजूदगी के बारे में पूछताछ की तो पता चला कि चौथी मंजिल पर कुछ लोग थे। तुरंत हम इमारत के पीछे की ओर स्थित सीढ़ियों के माध्यम से चौथी मंजिल पर पहुंचे। वे सभी सो रहे थे और बार-बार प्रयास करने के बाद हम उन्हें जगाने में कामयाब रहे और उन्हें सुरक्षित रूप से भूतल पर ले आए। अग्निशमन कर्मियों ने बताया कि होटल की रसोई पहली मंजिल पर और दूसरी और तीसरी मंजिल पर डाइनिंग हॉल स्थित हैं। चौथी मंजिल पर होटल में काम करने वाले लोग रहते हैं। अधिकारियों को संदेह है कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी होगी। हालांकि सटीक कारणों का पता लगाया जा रहा है।

कांग्रेस हमेशा किसान विरोधी रही : इंद्रकरन रेड्डी

निर्मल, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। वन मंत्री अल्लोला इंद्रकरण रेड्डी ने कहा कि मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव तेलंगाना के किसानों का समर्थन कर रहे हैं, वहीं कांग्रेस कृषक समुदाय को नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर रही है।

उन्होंने एमएलसी दांडे विट्ठल के साथ भारत राष्ट्र समिति और किसानों द्वारा किसानों को मुफ्त बिजली के प्रावधान पर टीपीसीसी अध्यक्ष रेवंत रेड्डी की टिप्पणी की निंदा करते हुए धरना प्रदर्शन में भाग लिया। कार्यकर्ता और किसान नॉर्दर्न पावर डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड के कार्यालय के सामने बैठ गए और रेवंत रेड्डी की विवादास्पद टिप्पणी की आलोचना करते हुए नारे लगाए, जिससे कृषक समुदाय में आक्रोश फैल गया। उन्होंने विरोध प्रदर्शन के तहत टीपीसीसी अध्यक्ष का पुतला जलाया।

इंद्रकरन रेड्डी ने याद दिलाया कि जब पूर्व मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने बशीरबाग में धरना दे रहे प्रदर्शनकारी किसानों पर पुलिस को गोली चलाने का निर्देश देकर तीन किसानों की जान ले ली थी, तो उनके शिष्य रेवंत कृषि क्षेत्र के लिए बिजली के प्रावधान का विरोध कर रहे हैं।

मंत्री ने कहा कि कांग्रेस देश का पेट भरने वाले कृषक समुदाय से हमेशा नफरत करेगी। उन्होंने कहा कि रेड्डी की दिन में तीन घंटे बिजली कृषि क्षेत्र के लिए पर्याप्त है वाली टिप्पणी यह साबित करती है कि कांग्रेस हमेशा किसान विरोधी पार्टी है।

किसानों और बीआरएस के कार्यकर्ताओं ने आदिलाबाद, कुमारम भीम आसिफाबाद और मंचेरियल जिलों में रेवंत रेड्डी के पुतले जलाए।

बंडी ने आरबीओ कार्यक्रम में आमंत्रित न करने के लिए बीआरएस सरकार की आलोचना की

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना राज्य भाजपा नेता बंडी संजय कुमार ने आज सत्तारूढ़ बीआरएस पार्टी सरकार की कड़ी आलोचना की। बुधवार को यहां मीडियाकर्मियों से बात करते हुए, संजय ने सत्तारूढ़ दल से पूछा कि करीमनगर के तिगलगुट्टापल्ली आरबीओ में उनकी कितनी हिस्सेदारी है। उन्होंने कहा कि बीआरएस पार्टी के नेता, जो अपनी महिमा का दंभ भर रहे थे, पिछले आठ वर्षों में आरओबी हासिल करने में विफल रहे। उन्होंने यह भी पूछा कि केंद्र की मंजूरी के आठ महीने बाद भी प्रोजेक्ट पूरा होने में अब तक देरी क्यों हो रही है? उन्होंने कहा कि उन्होंने ही केंद्र को आरबीओ के निर्माण की पूरी लागत वहन करने के लिए राजी किया था।

बंडी संजय ने कहा कि शिलान्यास समारोह में उन्हें निमंत्रण नहीं दिया जाना राज्य सरकार की गिरावट का प्रमाण है। उन्होंने आश्चर्य जताया कि क्या बीआरएस नेता ईमानदार हैं और उन्हें आठ साल तक वारंगल-करीमनगर, एल्कातुर्ती-सिद्दीपेट, करीमनगर-जगित्याला सड़क के विस्तार कार्यों के लिए धन क्यों नहीं मिल सका?

एसएफआई ने राज्य सरकार द्वारा पूरे तेलंगाना में शिक्षा क्षेत्र की समस्याओं को हल करने में विफल रहने का आरोप लगाते हुए बुधवार को बंद का आह्वान किया। बंद के दौरान प्रदर्शनरत एसएफआई कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करते हुए पुलिसकर्मी।

सीएम केसीआर के पोते ने पुनर्निर्मित सरकारी स्कूल का उद्घाटन किया

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के पोते हिमांशु ने शिक्षा मंत्री सबिता इंद्रा रेड्डी के साथ बुधवार को रंगारेड्डी जिले के शेरिलिंगमपल्ली विधानसभा क्षेत्र के गाचीबौली डिवीजन के केशवनगर में पुनर्निर्मित सरकारी प्राथमिक विद्यालय का उद्घाटन किया। मंत्री केटी रामाराव के बेटे हिमांशु ने प्राइमरी स्कूल को गोद लिया था और करीब एक करोड़ रुपये खर्च कर इसे कॉरपोरेट स्कूल की तर्ज पर बदल दिया। खाजागुड़ा के एक निजी स्कूल में पढ़ने वाले हिमांशु क्रिएटिव एक्शन सर्विस के अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं। सीएएस की ओर से, उन्होंने केशव नगर प्राइमरी स्कूल को गोद लिया जो उनके स्कूल के करीब है। एकत्रित धन से, उन्होंने स्कूल में बेंच, लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालयों का निर्माण और एक भोजन क्षेत्र जैसी सुविधाएं प्रदान कीं। इस अवसर को यादगार बनाने के लिए, हिमांशु ने छात्रों को स्कूल बैग वितरित किए और स्कूल परिसर में नवनिर्मित डाइनिंग हॉल में छात्रों के साथ दोपहर का भोजन भी किया।

दक्षिण मध्य रेलवे

हमें @SCRailwayIndia पर फॉलो करें. द.म. रेलवे की निविदा सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट : www.scr.indianrailways.gov.in पर देखा जा सकता है

निविदा सं.जीटीएल-इएम-06, 08 और 10-2023-24 दि.11.07.2023 PUB/0756

भारत के राष्ट्रपति की ओर से व कार्यनिर्वाहक वरिष्ठ मंडल बिजली अभियंता/रखरखाव/गुंटकल व्दारा निम्नलिखित कार्यों हेतु ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं।

क्रम सं. :01 निविदा सं.: जीटीएल-इएम-06-2023-24 कार्य विवरण: गुंटकल डिवीजन- दो वर्ष के लिए टीपीटीवाय, आरयु, पीएके एवं एनआरई सेक्शन में वाटर कूलर तथा एसी प्लांट्स का वार्षिक रखरखाव ठेका। अनुमानित लागत: रु.15,04,561.24 बंद करने की तिथि एवं समय: 31-07-2023 के 15.00 बजे

क्रम सं. :02 निविदा सं.: जीटीएल-इएम-08-2023-24 कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः गुंटकल डिवीजन के अक्षम पम्प्स तथा ऊर्जा सक्षम पम्प्स सहित बहुत पुराने पम्प्स का प्रतिस्थापन करना। अनुमानित लागतः रु. 84,75,870/-
बंद करने की तिथि व समयः 31.07.2023 के 15.00 बजे

क्रम सं.:03 निविदा सं.:जीटीएल-इएम-10-2023-24 कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः पाकाला एवं धर्मावरम में बहुत पुराने डिस्ट्रिब्यूशन पैनल्स तथा अन्य सप्लाई इंस्टाल्लेशन्स का प्रतिस्थापन करना। अनुमानित लागतः रु. 85,20,346.48
बंद करने की तिथि व समयः 31.07.2023 के 15.00 बजे

टेंडर की बिड्डिंग तथा अन्य विवरणार्थ कृपया http://www.ireps.gov.in पर लागिन करें। तत्संबंधित निविदा का शुद्धिपत्र, यदि कोई हो तो, उसे केवल ऑनलाइन पर ही जारी किया जायेगा।
निविदाकर्ताओं व्दारा निविदा दस्तावेज को मुफ्त में http://www.ireps.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है।
टिप्पणी: इस ई-निविदा सहभागिता/बोली में भाग लेने के लिए, निविदाकर्ता के पास वैध डीएससी(डिजिटल सिग्निचर सर्टिफिकेट) प्रमाणपत्र होना चाहिए।

-वरिष्ठ मंडल बिजली अभियंता,गुंटकल

ई-निविदा सूचना सं. 19-डिप्युटी सीई-जीएस-जीएनटी दि.11.07.2023 PUB/0757

अधोहस्ताक्षरी व्दारा निम्नलिखित कार्यों हेतु दि.04.08.2023 के 15.30 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

क्रम सं.1 निविदा आयडीः 48 सेक्शनः डिप्युटी सीइ/जीएस/जीएनटी कार्य विवरणः ट्रैक पोर्शन-गुंटूर यार्ड में 8.20 किमी के लिए मल्टि ट्रैकिंग तथा कनेक्टिविटी की व्यवस्था।
अनुमानित लागत रु. 65375034.51 पूधराः रु.476900.00

ई-बोलियों के लिए ऑनलाइन प्रस्तुति की अंतिम तिथि 04.08.2023 के 15.30 बजे तक है। विस्तृत जानकारी हेतु www.ireps.gov.in पर लागिन करें।
तत्संबंधित और संचार/शुद्धिपत्र होने पर उसे ई-पोर्टल www.ireps.gov.in के माध्यम से सूचित किया जायेगा।

उप मुख्य अभियंता,गति शक्ति, गुंटूर

निविदा सूचना सं.02-मेका- एचसीएआर-टीपीटीवाय-23-24, दि.8-7-2023 PUB/0758

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं के लिए, मुख्य वर्कशाप प्रबंधक, कैरेज रिपेयर शाप, तिरुपति, दक्षिण मध्य रेलवे व्दारा निम्नलिखित कार्य हेतु प्रतिष्ठित ठेकेदारों से आयआरईपीएस के माध्यम से खुली निविदा आमंत्रित हैं।

क्रम सं. 01 निविदा सं. 02-मेका-एचसीएआर-टीपीटीवाय-23-24, दि.8-7-2023 कार्य विवरणः सीआरएस/टीपीटीवाय के आयसीएफ डिजाइन कन्वेन्शनल कोचेस में कोरोशन तथा तत्संबंधित की मरम्मत/प्रतिस्थापन कार्य। अनुमानित लागतः रु. 3,04,10,800.68 (केवल. तीन करोड चार लाख दस हजार, आठ सौ रुपये व सडसठ पैसे), बोली सुरक्षा राशिः रु. 3,02,100/-
निविदा प्रपत्र का मूल्यः रु.शून्य (कृपया निम्न नोट नं.1 देखें), पूरा करने की अवधिः कार्य प्रारंभ होने की तिथि से लेकर 12 महिने।

नोटः जीसीसी 2022 की अनुच्छेद सं..03(भाग-।) नुसार, सभी निविदाकर्ताओं को मुफ्त में ई-निविदा प्रपत्र जारी किया जायेगा। अतः निविदा दस्तावेज में निविदा दस्तावेज का मूल्य उल्लिखित नहीं किया है।

निविदा पेटी बंद करने की तिथि व समयः 31.07.2023 के 11.00 बजे

मुख्य वर्कशाप प्रबंधक, सीआरएस,तिरुपति

एनडब्ल्यू/148/डब्ल्यू।।।/टेंडर नोटिस/जीएस/2023-24 दि.11.07.2023 PUB/0759

तत्संबंधित निविदा के विवरण को पहले ही www.ireps.gov.in पर अपलोड किया गया है।

क्रम सं. 1 टेंडर नं. टी-202324-जीएस-10, एथारिटीः डिप्युटी डीई/जीएस/एनडडी, कार्य विवरणः एनडडी डिवीजनः अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत स्टेशन उन्नयन कार्यों हेतु परियोजना पर्यवेक्षण सेवाओं(पीएसएस) की व्यवस्था व गति शक्ति ईकाइयों से जुडा तत्संबंधित कार्य। विज्ञापित निविदा मूल्यः रु. 15232282.04, पूधराः रु. 226200.00, पूरा करने की अवधिः बारह महिने, निविदा प्रपत्र का मूल्यः रु. शून्य

उपरोक्त निविदा दि.11.08.2023 के 15.00 बजे बंद होगी।

उप मुख्य अभियंता, गति शक्ति, नांदेड

A1063

निविदा शर्तों/ तत्संबंधित अधिक जानकारी तथा निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग हेतु कृपया वेबसाइट्सः www.ireps.gov.in या http://www.scr.indianrail-ways.gov.in देखें।

CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, JC-733337P, Sub (CLK/IM) Arul Kumaran KS R/o. Kannigapuram Village, Genganellore Post, Vellore Taluk, Vellore District (NAA) Tamil Nadu State, PIN - 632101, my daughter name changed from A Bhuvaneshwari to Bhuvaneshwari A (Affidavit No. 16 AC 015007 Dt. 28-06-2023

सावधान

पाठकों को सूचित किया जाता है कि वर्गीकृत विज्ञापन का प्रतिवादन करने से पहले उसकी पूरी तरह से जाँच पड़ताल कर लें। विज्ञापनदाता ने दावा कर रहे हैं या कह रहे हैं, उन बातों से दैनिक समाचार पत्र (स्वतंत्र वार्ता) का किसी भी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं है।

आखिर कहां छुपे हैं शाइस्ता परवीन और गुड्डू मुस्लिम?

साढ़े तीन महीने बाद भी पुलिस के हाथ खाली

प्रयागराज, 12 जुलाई (एजेंसियां)। उमेश पाल हत्याकांड में फरार अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन और शूटर गुड्डू मुस्लिम लगातार पुलिस को चकमा देते फिर रहे हैं। हैरानी की बात है कि साढ़े तीन महीने गुजर जाने के बाद भी पुलिस अब तक इनका सुराग नहीं लगा पाई है। यूपी एसटीफई और पुलिस की टीम लगातार इनकी तलाश में छापेमारी और दबिश दे रही हैं, लेकिन अब तक पुलिस के हाथ खाली है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल ये हैं कि आखिर वो कौन सी जगह है जहां शाइस्ता और गुड्डू मुस्लिम छुपे हुए हैं। क्या उन्हें धरती निगल गई या आसमान। अतीक की पत्नी शाइस्ता और गुड्डू मुस्लिम की तलाश में अब तक यूपी एसटीएफ की टीम यूपी के तमाम जनपदों समेत दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और ओडिशा तक छापेमारी कर चुकी है। कई बात तो ऐसी खबरें भी आईं कि पुलिस की टीम ने उन्हें घेर लिया है और कभी भी उनकी गिरफ्तारी हो सकती हैं, लेकिन हर बार पुलिस के हाथ निराशा ही लगी है।

गुड्डू मुस्लिम की आखिरी लोकेशन ओडिशा में मिली थी, जहां खबर आई कि उसे एक मीट कारोबारी ने शरण दे रखी है। सूचना मिलने पर पुलिस जब वहां पहुंची तो उसका कोई पता नहीं चला। अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता की भी आखिरी लोकेशन प्रयागराज, कौशांबी के आसपास ही पता चली थी। पुलिस ने दो-तीन दिन लगातार इस इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाया। चप्पे-चप्पे की तलाशी ली गई, घर-घर जाकर पुलिस ने पूछताछ की लेकिन शाइस्ता का भी कोई पता नहीं चला है। पुलिस ने शाइस्ता की तलाश में दिल्ली के शाहीन बाग और ओखला में भी छापेमारी की लेकिन हर बार की तरह पुलिस की टीमें खाली हाथ लौटी। खबरें इस तरह की भी आईं कि शाइस्ता गुड्डू मुस्लिम के साथ ही है। हालांकि अब तक इस पर भी पुख्ता तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता है।

ज्योति मौर्य प्रकरण: होमगार्ड कमांडेंट मनीष दुबे पर गिरी गाज, किया गया निलंबित

लखनऊ, 12 जुलाई (एजेंसियां)। देशभर में चर्चित हुए पीसीएस अधिकारी ज्योति मौर्य और होमगार्ड कमांडेंट मनीष दुबे प्रकरण में प्रशासन ने कड़ी कार्रवाई करते हुए होमगार्ड कमांडेंट मनीष दुबे को निलंबित कर दिया है। इस संबंध में डीजी होमगार्ड बीके मौर्या ने अपनी संस्तुतियों के साथ रिपोर्ट मंगलवार शाम को भेज दी थी। जांच रिपोर्ट में डीजी होमगार्ड ने कमांडेंट मनीष को निलंबित करने के साथ मुकदमा दर्ज कर विवेचना की सिफारिश की थी। जांच में सामने आया है कि मनीष दुबे ने अपने कृत्यों से विभाग की छवि भी धूमिल करने के साथ संपर्क में आईं महिलाओं का शोषण किया। वर्ष 2021 में मनीष ने लखनऊ की एक युवती से अलीगंज स्थित आर्य समाज मंदिर में शादी की थी। कुछ दिन बाद ही वह उसे 80 लाख रुपये दहेज में लाने के लिए प्रताड़ित करने लगा था। मनीष की पत्नी ने डीआईजी को दिए अपने बयान में इसकी पुष्टि की है। वहीं, अमरोहा में तैनाती के दौरान मनीष पर एक महिला होमगार्ड के यौन शोषण का आरोप है। डीआईजी के सामने महिला होमगार्ड ने इसकी पुष्टि करते हुए बयान दिया कि उसके विरोध पर मनीष ने उसे नौकरी से निकलवा दिया था। बाद में डीजी होमगार्ड से शिकायत पर वह बहाल हुई थी। इस प्रकरण की जांच कर रहे डीआईजी संतोष कुमार को ज्योति मौर्य के पति आलोक मौर्या ने कुछ कॉल रिकॉर्डिंग दी थी।

चिराग की एनडीए में वापसी तय, चार लोकसभा और एक राज्यसभा सीट पर डील

पटना, 12 जुलाई (एजेंसियां)। एलजेपी (रामविलास) का गठबंधन बीजेपी के साथ लगभग तय हो चुका है। चिराग पासवान जल्द ही इसकी औपचारिक घोषणा करने वाले हैं। वैसे 9 जुलाई को पार्टी की तरफ से चिराग पासवान को अधिकृत किया गया था। इसके बाद चिराग दिल्ली भी पहुंचे हैं। ज़ाहिर है बीजेपी के बड़े नेताओं से औपचारिक मुलाकात के बाद इस डील पर मुहर लगना तय माना जा रहा है। चिराग पासवान एनडीए में जाने को लेकर लगभग तैयार हो चुके हैं।

जानकारी के मुताबिक चार लोकसभा सीट और एक राज्यसभा के एवज में चिराग पासवान और बीजेपी के बीच सहमति लगभग बन चुकी है। पिछले दिनों बीजेपी की तरफ से बिहार के नेता और केन्द्रीय मंत्री नित्यानंद राय चिराग पासवान से बात करने चिराग के आवास पर पहुंचे थे। इसके बाद एलजेपी के पदाधिकारियों के साथ बैठक में चिराग पासवान को बीजेपी के साथ समझौता करने को लेकर अधिकृत किया गया था। 9 जुलाई को चिराग पासवान ने खुद कहा था कि दो तीन बैठकों के बाद कुछ मुद्दे तय हो जाएंगे ऐसी उन्हें उम्मीद है। दरअसल 9 जुलाई को पार्टी के पदाधिकारियों के साथ बैठक करने के बाद चिराग दिल्ली पहुंचे हैं। यहां बीजेपी के केन्द्रीय नेताओं से मुलाकात के बाद औपचारिक घोषणा शेष रह गया है।

चिराग पासवान एनडीए के लिए क्यों हैं अहम ?

दरअसल एलजेपी (रामविलास) के नेता हैं चिराग पासवान जो कि दिवंगत नेता रामविलास पासवान के सुपुत्र हैं। पासवान समाज के तकरीबन पांच फीसदी मतदाताओं पर राम विलास पासवान के निधन के बाद चिराग की पकड़ ही मजबूत बताई जाती है। बीजेपी महागठबंधन के जवाब में चिराग के साथ इन्हीं वजहों से समझौता चाह रही थी। बीजेपी के पाले में हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा पहले ही आ चुकी है। वहीं एलजेपी (रामविलास) के आ जाने के बाद दलित के 12 से 14 फीसदी वोटों पर बीजेपी की पकड़ मजबूत होने का अनुमान लगाया जा रहा है। आरजेडी के एक नेता के मुताबिक आरजेडी चिराग पासवान को अपने पाले में लाने का प्रयास कर रही थी लेकिन चिराग का नीतीश कुमार के साथ खराब समीकरण महागठबंधन में उनके लिए मुश्किलें पैदा कर रहा था। आरजेडी नेता के मुताबिक चंद दिनों पहले ही चिराग पासवान आरजेडी की पहल पर साफ इन्कार कर चुके हैं। इसलिए ये साफ हो गया था कि चिराग एनडी के साथ ही जाने वाले हैं। ज़ाहिर है एनडीए के साथ समझौते को लेकर लगभग तैयार हो चुके चिराग पासवान जल्द ही लोगों के बीच एक बार फिर पीएम मोदी का हनुमान बताने से परहेज नहीं करने वाले हैं।

कहां अटक रही थी बात ?

सूत्रों के मुताबिक चिराग पासवान छह लोकसभा सीट और एक राज्यसभा सीट की मांग पर अड़े थे। बीजेपी के साथ इन मांगों को लेकर लंबे समय से बातचीत चल रही थी। कई मुद्दों पर चिराग बीजेपी का खुलकर समर्थन कर रहे थे लेकिन बीजेपी के साथ एनडीए में जाने के सवाल पर समय के इंतजार करने की बात कह सवाल को टाल जाते थे। केन्द्रीय मंत्री नित्यानंद राय से मुलाकात के बाद दिल्ली पहुंचे चिराग पासवान जल्द ही एनडीए में शामिल होने की घोषणा करने वाले हैं। जानकारी के मुताबिक चिराग पासवान को हाजीपुर लोकसभा सीट भी आंवटित किए जाने की बात तय हो चुकी है। ज़ाहिर है चिराग और बीजेपी के साथ औपचारिक सहमति के बाद हाजीपुर से सांसद और केन्द्र में मंत्री पशुपतिनाथ पारस के लिए एनडीए में बने रहकर हाजीपुर से चुनाव लड़ना संभव नहीं रह जाएगा। बिहार बीजेपी के एक बड़े नेता के मुताबिक पासवान समाज में पकड़ चिराग पासवान की ही मजबूत है। इसलिए बीजेपी के शीर्ष नेता इस बात को अच्छी तरह समझ चुके हैं कि दिवंगत नेता रामविलास पासवान के बाद एलजेपी के असली नेता चिराग पासवान ही हैं।

ज़ाहिर है पशुपतिनाथ पारस गुट के पांच सांसदों के साथ बीजेपी का समझौता किस तरह का होगा इसको लेकर तरह तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। माना जा रहा है कि पारस गुट को एक सीट देकर मैदान में उतारा जा सकता है लेकिन हाजीपुर सीट चिराग पासवान की एलजेपी को देने के लिए बीजेपी तैयार हो चुकी है।

घना जंगल, झाड़ियों से रोने की आवाज; पास जाकर देखा तो पड़ी मिली एक साल की मासूम

मुरादाबाद, 12 जुलाई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में पुलिस को झाड़ियों में एक छोटी बच्ची मिली है। पुलिस ने बच्ची को रेस्क्यू किया और थाने लेकर पहुंची हैं। यहां पर महिला कांस्टेबलों द्वारा बच्ची की देखभाल की जा रही है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक बच्ची को जंगल की झाड़ियों में फेंका गया था। इसकी रोने की आवाज की वजह से किसी यात्री ने पुलिस को इस बात की सूचना दी थी। इसके बाद पुलिस ने बच्ची को रेस्क्यू किया है और इसकी सूचना चाइल्ड लाइन को दी गई है। पुलिस के मुताबिक देर रात मझोला थाना क्षेत्र में डीपीएस स्कूल के पास जंगल की झाड़ियों में एक मासूम की रोने की आवाज सुनाई दे रही थी। यहां से एक साइकिल सवार गुजर रहा था जिसने यह आवाज सुनी और तुरंत ही पुलिस की इस बात की सूचना दी है। जानकारी मिलने के तुरंत बाद पुलिस हरकत में आई और मौके पर पहुंच कर देखा था एक मासूम चीख-चीख कर रो रही थी।

सुप्रीम कोर्ट पहुंचे 'आदिपुरुष' के निर्माता

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने दिया है 27 जुलाई को पेश होने का आदेश

इलाहाबाद, 12 जुलाई (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाई कोर्ट में पेशी के खिलाफ फिल्म आदिपुरुष के निर्माता बुधवार (12 जुलाई) को सुप्रीम कोर्ट पहुंचे। उनके वकील ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश का मामला चीफ जस्टिस के सामने रखने की कोशिश की, लेकिन चीफ जस्टिस ने कहा कि वह सुनवाई का अनुरोध कल उनके सामने रखें। दरअसल, हाई कोर्ट ने फ़िल्म में धार्मिक चरित्रों को गलत तरीके से दिखाने के लिए निर्माता, निर्देशक और संवाद लेखक को 27 जुलाई को व्यक्तिगत रूप से पेश होने के लिए कहा है।

क्या है पूरा मामला

दरअसल, हाल ही में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने फिल्म आदिपुरुष के निर्देशक ओम राउत, निर्माता भूषण कुमार, संवाद लेखक मनोज मुंतशिर उर्फ मनोज शुक्ला को तलब किया था और इन सभी को कोर्ट ने 27 जुलाई को अदालत के समक्ष पेश होने के लिए कहा। इसके साथ ही हाई कोर्ट ने केंद्र सरकार को फिल्म पर अपना विचार पेश करने के लिए एक समिति के गठन का निर्देश भी दिया।

शराबी पिता ने बाप-बेटी के रिश्ते को किया कलंकित नाबालिग की जिंदगी तबाह कर डाली

चित्रकूट, 12 जुलाई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद में एक कलयुगी पिता ने शराब के नशे में अपनी 12 वर्षीय बेटी के साथ दुष्कर्म कर रिश्तों को शर्मसार कर दिया है। पुलिस ने नाबालिग किशोरी की शिकायत पर आरोपी पिता के खिलाफ खुद वादी बनकर मुकदमा दर्ज कर लिया है और उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। दरअसल मामला मऊ थाना क्षेत्र के एक गांव कहां है। जहां एक 12 वर्षीय नाबालिग किशोरी ने आरोप लगाते हुए बताया है कि उसके पिता शराबी हैं। शराब पीकर आए दिन घर में झगड़ा करते थे जिसकी वजह से उसकी मां किसी के साथ भाग गई है। घर पर वह और उसका भाई है। उसका भाई कहीं काम से बाहर चला गया था तभी शाम को उसके पिता शराब के नशे में घर आकर उसके साथ मारपीट की और उसके बाद उसके साथ जबरन दुष्कर्म किया। किसी से बताने पर उसे जान से मारने की धमकी दी।

मुख्तार अंसारी की दिल्ली, पंजाब में 200 करोड़ की संपत्तियां होंगी कुर्क

करीबी ने आयकर विभाग के सामने उगले राज

गाजीपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। बांदा जेल में माफिया मुख्तार अंसारी की मुश्किलें और बढ़ने वाली हैं। आयकर विभाग की पूछताछ में उसके करीबी गणेशदत्त मिश्रा ने कई राज उगले हैं। जनपद और प्रदेश ही नहीं, अन्य प्रांतों में 200 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्तियों का पता चला है। विभाग मुख्तार और उसके गैंग के लोगों के खिलाफ जमीन की कुर्की की कार्रवाई 'पैंथर नामक आपरेशन का हिस्सा है। सूत्रों के अनुसार उप्र के अलावा पंजाब, दिल्ली में भी मुख्तार की करीब 50 बेनामी संपत्तियों में से ज्यादातर गणेशदत्त मिश्रा के नाम से हैं, लेकिन पैसा मुख्तार का लगा है। जांच में इन संपत्तियों के लेन-देन में भी फर्जीवाड़ा पाया गया है। अब तक इनके बारे में पुलिस को पता नहीं था। यह सभी बेनामी संपत्तियां मुख्तार ने अपने गिरोह के किसी न किसी सदस्य के नाम ले रखी हैं।

गाजीपुर में 20 करोड़ की संपत्ति कुर्क

बीते 20 जून को शहर कोतवाली पुलिस गणेशदत्त मिश्रा को गिरफ्तार कर लखनऊ ले गई और आयकर विभाग को सौंप दिया था। मुख्तार अंसारी के रियल एस्टेट का कारोबार गणेशदत्त मिश्रा ही देखता था। जिले में अब तक उसकी 20 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति कुर्क की जा चुकी है। मुख्तार पर विभिन्न राज्यों में 61 आपराधिक मामले हैं, जिनमें से छह में दोषी ठहराया जा चुका है। छह दिसंबर 2020 को गैंगस्टर एक्ट के तहत पुलिस फोर्स ने गणेश के चार मंजिला भवन को ध्वस्त कर दिया था। 12 अक्टूबर 2022 रजदेपुर देहाती में तीन व कपूरपुर मौजा में एक संपत्ति को कुर्क किया था, जिसकी कीमत 14 .20 करोड़ रुपये थी। 11 मई को लखनऊ से पहुंची इनकम टैक्स की टीम ने कपूरपुर में गणेशदत्त की दो संपत्ति को कुर्क किया था। इसी मामले में इनकम टैक्स टीम ने गणेशदत्त को कई बार नोटिस जारी किया था। इस बेनामी संपत्ति के संबंध में स्पष्टीकरण मांगा गया, उसका भी गणेशदत्त ने कोई जवाब नहीं दिया।

मां विंध्यवासिनी देवी कारिडोर के विस्तार का रास्ता साफ, रामपुर में सड़क चौड़ीकरण के लिए 205.36 करोड़ मंजूर

लखनऊ, 12 जुलाई (एजेंसियां)। मीरजापुर में मां विंध्यवासिनी देवी कारिडोर के विस्तार का रासता साफ हो गया है। कैबिनेट बैठक में मां विंध्यवासिनी देवी कारिडोर (परिक्रमा पथ) से लगे चार प्रमुख मार्गों के विस्तार और सुंदरीकरण परियोजना के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र (पार्सल 1, 2, 2ए, 3, 3ए, 4 व 5) में जनसुविधाओं के निर्माण के लिए अतिरिक्त भूमि पर बने भवनों को ध्वस्त करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई है। ध्वस्तीकरण और मलबा निस्तारण पर 63.05 लाख रुपये खर्च होंगे। गौरतलब है कि मां विंध्यवासिनी देवी कारिडोर (परिक्रमा पथ) से लगे चार प्रमुख मार्गों से संबंधित आवश्यक भूमि खरीदने और परिसंपत्तियों का मुआवजा दिए जाने के लिए 25 फरवरी 2021 को जारी शासनादेश के माध्यम से 33.7 करोड़ रुपये जिलाधिकारी मीरजापुर को जारी किये गए थे।

मथुरा में सर्किट हाउस निर्माण के लिए मिली दो हेक्टेयर जमीन

मथुरा में सर्किट हाउस के निर्माण का रास्ता साफ हो गया है। सर्किट हाउस के निर्माण के लिए राज्य सरकार ने मथुरा स्थित उप्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्साविज्ञान विश्वविद्यालय और गौ-अनुसंधान संस्थान की उपलब्ध भूमि में से दो हेक्टेयर जमीन लोक निर्माण विभाग को निशुल्क देने का निर्णय किया है। जिलाधिकारी मथुरा की ओर से इस बाबत भेजे गए प्रस्ताव को मंगलवार को हुई कैबिनेट बैठक में मंजूरी दे दी गई है। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बीती सात जून को उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद की पांचवीं बोर्ड बैठक में मथुरा में आने वाले देश-विदेश के अतिविशिष्ट अतिथियों के ठहरने के लिए उच्च सुविधायुक्त सर्किट हाउस बनाने का निर्देश दिया था।

रामपुर में सड़क को चौड़ा करने के लिए 205.36 करोड़ की परियोजना मंजूर

कैबिनेट ने रामपुर जिले में शाहबाद-रामपुर-बाजापुर मार्ग को 57.59 किलोमीटर की लंबाई में चौड़ा और सुदृढ़ करने के लिए 205.36 करोड़ रुपये की परियोजना को स्वीकृति दे दी है। यह मार्ग रामपुर की तहसील शाहबाद से प्रारंभ होकर रामपुर-स्वार होते हुए उत्तराखंड राज्य के पर्यटन स्थल जिम कार्बेट पार्क रामनगर व नैनीताल को जाता है। इस मार्ग से गुजरने वाला यातायात दिल्ली और लखनऊ भी जाता है। इसके अलावा शाहबाद बिसौली कछला गंगाघाट मार्ग (राज्य राजमार्ग-109) का यातायात भी इसी मार्ग से होकर गुजरता है, जो बाद में जाकर अलीगढ़, चंदौसी, मुरादाबाद मार्ग (राष्ट्रीय राजमार्ग-91) को जोड़ता है। यह मार्ग बरेली के रामनगर को भी जोड़ता है जो जैन धर्म का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है।

रानीपुर टाइगर रिजर्व में पर्यटन विकास के लिए निशुल्क दी 49 हेक्टेयर जमीन

राज्य सरकार ने चित्रकूट के रानीपुर टाइगर रिजर्व में मारकुंडी निरीक्षण गृह और उसके आसपास के स्थानों पर चिन्हित भूमि को पर्यटन के विकास से जुड़ी परियोजना के लिए पर्यटन विभाग को निश्शुल्क हस्तांतरित करने के प्रस्ताव पर मुहर लगा दी है। मंगलवार को कैबिनेट बैठक में यह निर्णय हुआ है। जिले की मानिकपुर तहसील के ग्राम निहीं, गोबरहाई, इटवां डुडैला, टिकरिया जमुनहाई, बम्हिया में उपलब्ध इस जमीन का कुल रकबा 49.36 हेक्टेयर है। खतौनी में ग्राम समाज की यह जमीन बंजर श्रेणी में दर्ज है। गौरतलब है कि दुधवा, पीलीभीत व अमानगढ़ के बाद रानीपुर प्रदेश का चौथा टाइगर रिजर्व है। रानीपुर टाइगर रिजर्व अधिसूचित होने के बाद केंद्र सरकार के प्रोजेक्ट टाइगर का हिस्सा बन गया है।

झगड़े पर पत्नी ने उठाया खौफनाक कदम, ट्रेन के सामने दो बेटियों संग कूदी, मां व एक बेटी की मौत

हाथरस, 12 जुलाई (एजेंसियां)। सहपऊ के जलेसर मानिकपुर रेलवे स्टेशन पर बुधवार सुबह आत्महत्या करने दो बच्चियों को साथ ट्रेन के आगे महिला कूद गई, जिसमें महिला सहित तीन माह की बच्ची की मौत हो गई। जबकि दो साल की बच्ची घायल हो गई। पति से विवाद के बाद महिला ने आत्महत्या करने का कदम उठाया। महिला और बच्ची की मृत्यु से स्वजन का रो-रो कर बुरा हाल है। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। इलाका पुलिस और जीआरपी पुलिस मृतकों के स्वजन से पूछताछ कर मामले की जांच कर रही है। कस्बा के मोहल्ला अहेरियान निवासी सुशील कुमार का पत्नी पिंकी के साथ दो दिन पूर्व किसी बात को लेकर विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि पिंकी मंगलवार शाम घर से दोनों बच्चियों को लेकर घर से चली गई। जब इस बात की जानकारी स्वजन को हुई तो वह महिला को समझाने लगे,लेकिन महिला घर जाने को तैयार नहीं हुई। पुलिस के आने के बाद पुलिसकर्मियों ने महिला को समझाया तब जाकर महिला घर जाने को राजी हुई। बुधवार सुबह पति से फिर विवाद होने पर पिंकी पानीपत अपने मायके के लिए दोनों बच्चियों को लेकर घर से निकल गई।

बच्ची को लेकर रेल लाइन पर चल रही थी महिला

पति व स्वजन ने उसे काफी रोकने का प्रयास किया,लेकिन महिला नहीं मानी और जलेसर मानिकपुर रेलवे स्टेशन पर पहुंच गई। स्टेशन पर मौजूद लोगों ने बताया कि महिला रेलवे लाइन पर बच्चियों को लेकर चल रही थी। ट्रेन के आने पर दोनों बच्चियों को महिला ने रेलवे ट्रैक पर फेंक दिया और खुद भी ट्रैक पर लेट गई। ट्रेन के आते ही महिला और तीन माह की बच्ची की मौत हो गई। जबकि दो साल की जान बच गई। उसके मामूली चोट आई है। फिलहाल इलाका और जीआरपी पुलिस स्वजन से पूछताछ कर रही है।

शादी के दो महीने बाद नवविवाहिता ने दी जान, पति ने भी लगाई फांसी, सामने आई चौंकाने वाली वजह

पीलीभीत, 12 जुलाई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले से हैरान करने वाली खबर सामने आई है। यहां एक नवविवाहित दंपती फंदे पर लटक गए। जिसमें पत्नी की मौत हो गई, जबकि पति को बचा लिया। विवाहिता के परिजनों ने गंभीर आरोप लगाए हैं। जानकारी के अनुसार, पीलीभीत के थाना बिलसंडा इलाके के गांव बबुरा के रहने वाले श्यामू की शादी दो माह पहले सुखरानी से हुई थी। घरेलू कलह के चलते मंगलवार रात सुखरानी ने घर के ही कमरे में कुंडे पर दुपट्टे का फंदा बनाकर आत्महत्या कर ली। बुधवार की सुबह जानकारी लगने पर पति श्यामू ने भी गांव में ही घर से 50 मीटर की दूरी पर स्थित पीपल के पेड़ पर दुपट्टे से फांसी लगाने का प्रयास किया, लेकिन मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने उसे बचा लिया। उसे बिलसंडा के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है।

प्रेमिका के लिए कुछ भी करूंगा: मुस्लिम से हिंदू बनने को शादीशुदा आमिर की डीएम से गुहार, पत्नी बोली नाटक

मुरादाबाद, 12 जुलाई (एजेंसियां)। गाजियाबाद की एक प्राइवेट कंपनी में कार्यरत मुगलपुरा के आमिर ने इस्लाम धर्म छोड़कर हिंदू धर्म अपनाने के लिए डीएम से गुहार लगाई है। बताया कि वह आमिर की जगह अपना नाम अमित माहेश्वरी रखना चाहता है। पुलिस की जांच से पता चला कि आमिर एक बेटी का पिता है। आमिर की पत्नी ने बताया कि उसका पति गर्लफ्रेंड के साथ रहने के लिए धर्म परिवर्तन का नाटक कर रहा है। सुरक्षा की दृष्टि से एसपी ने उसके घर पर फोर्स लगा दी है। मुगलपुरा प्रिंस रोड का रहने वाला आमिर गाजियाबाद की एक प्राइवेट कंपनी में सेल्स एग्जीक्यूटिव के पद पर कार्यरत हैं। उसने मुस्लिम से हिंदू धर्म अपनाने के लिए तीन जुलाई को डीएम कार्यालय में प्रार्थनापत्र दिया था। डीएम ने इस मामले में एडीएम सिटी और एसपी सिटी को जांच करने के निर्देश दिए। पत्र में आमिर ने लिखा है कि वह हिंदू धर्म में आस्था रखता है। वह अपनी इच्छा से बगैर किसी दबाव में हिंदू धर्म अपनाना चाहता है। वह अपना नाम बदलकर अमित माहेश्वरी रखना चाहता है। उसने डीएम से सुरक्षा की भी मांग की। पुलिस की जांच से पता चला कि आमिर शादीशुदा है। उसकी शादी फरवरी 2022 में लाकड़ी वालान निवासी गुलशफां से हुई थी। उसकी चार माह की एक बेटी भी है। पत्नी ने बताया कि वह उसका पति कट्टर मुस्लिम है। वह हिंदुओं से नफरत करता है लेकिन 2014 से वह एक हिंदू लड़की से बातचीत करता है। इस मामले की जानकारी मिलने पर उसने पति से पूछताछ की और विरोध भी जताया था। इसके बाद वह छिपकर बातचीत करता है। उसे पता नहीं है कि हिंदू लड़की ऐसा करने पर उसे लव जिहाद में फंसा देगी। वह हिंदू गर्लफ्रेंड के साथ घर बसाने के लिए नाटक कर रहा है। इस मामले में पत्नी ने भी डीएम कार्यालय में पति के खिलाफ प्रार्थनापत्र दिया है। शहर में धर्म परिवर्तन का मामला सामने आने पर आमिर घर से गायब हो गया है। वह किसी का फोन भी रिसीव नहीं कर रहा है। उसकी पत्नी गुलशफां ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से इस मामले में न्याय की गुहार लगाई है ताकि उसका घर उजड़ने से बच सके। आमिर की गर्लफ्रेंड कासगंज की रहने वाली है लेकिन दोनों की मुलाकात मुरादाबाद में हुई थी। गर्लफ्रेंड ने शहर के एक इंजीनियरिंग कॉलेज से बीटेक की पढ़ाई की थी। 2014 में दोनों की दोस्ती हुई थी। वर्तमान में गर्लफ्रेंड नोएडा स्थित एक कंपनी में जॉब करती है।

श्रद्धा जैसा हत्याकांड

दिल्ली के गीता कॉलोनी फ्लाईओवर के पास टुकड़ों में मिली युवती की लाश, बिखरे मिले अंग

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। दिल्ली में श्रद्धा हत्याकांड जैसी एक और वारदात सामने आई है। दिल्ली के गीता कॉलोनी फ्लाईओवर इलाके के पास से एक लड़की का शव मिला है। बताया जा रहा है कि शव कई टुकड़ों में काटा गया है। सूचना पर पहुंची पुलिस जांच में जुटी है। फिलहाल लड़की की पहचान नहीं हो पाई है। दिल्ली पुलिस ने शव के कई टुकड़े मिलने के बाद जांच शुरू कर दी है। मौके पर फोरेंसिक टीम पहुंची है। पूरे इलाके की घेराबंदी कर तलाशी अभियान शुरू किया गया है। पुलिस को आज सुबह 9.15 बजे सूचना दी गई कि फ्लाइओवर के पास कुछ मानव अंग पड़े हैं। जिसके बाद पुलिस वहां पहुंची। अभी तक महिला की पहचान नहीं हो सकी है।

माइक तोड़ा, महिला रिपोर्टर से बृजभूषण सिंह ने की बदसलूकी, स्वाति मालीवाल ने बताया गुंडा

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। यौन उत्पीड़न के आरोपों का सामना कर रहे बीजेपी सांसद बृज भूषण शरण सिंह अब एक और वजह से चर्चाओं में आ गए हैं। उनका एक वीडियो सामने आया है, जिसमें वह महिला रिपोर्टर के साथ बदसलूकी करते नजर आ रहे हैं। इस वीडियो में वह रिपोर्टर पर गुस्सा करते और उसका माइक तोड़ते भी दिख रहे हैं। इस घटना को लेकर दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल की भी प्रतिक्रिया आई है और उन्होंने बृज भूषण शरण सिंह को गुंडा बताया है। रिपोर्ट के मुताबिक, बृज भूषण शरण सिंह उस वक्त गुस्से में आ गए जब एक रिपोर्टर ने उन पर लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों को लेकर दिल्ली पुलिस की चार्जशीट और सांसद के तौर पर उनके इस्तीफे को लेकर सवाल पूछ लिया। इस सवाल पर वह बहुत ज्यादा भड़क गए। रिपोर्ट में कहा गया कि एयरपोर्ट पर एक पत्रकार ने सवाल किया कि आपके खिलाफ दिल्ली पुलिस की चार्जशीट दायर हो चुकी है और यौन उत्पीड़न का चार्ज लगाया है, तो ऐसी स्थिति में इस्तीफा देंगे।

दिल्ली में उफान पर यमुना, जलस्तर उच्चतम स्तर पर

टूट गया 45 साल का रिकॉर्ड

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। उत्तर भारत के कई राज्यों में लगातार हो रही भारी बारिश से ज्यादातार इलाकों में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। वहीं दिल्ली में यमुना नदी का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर चल रहा है। यमुना के पानी का स्तर 207.55 मीटर पर पहुंच गया है और इसी के साथ 45 साल पुराना रिकॉर्ड टूट गया है। यमुना का जल स्तर अब तक के सबसे उच्चतम स्तर पर है। इसी बीच जानकारी है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इमरजेंसी मीटिंग बुलाई है। यमुना में बढ़ते जलस्तर को लेकर मीटिंग बुलाई है। दिल्ली सचिवालय में 4 बजे इमरजेंसी मीटिंग होगी। फिलहाल बाढ़ के खतरे को देखते हुए यमुना के किनारे रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया हैं। जानकारी के मुताबिक लाल किला के पास पुराने लोहे के पुल से रेल और वाहन संचालन रोक दिया गया है। यमुना का पानी निचले इलाकों को पूरी तरह से अपने कब्जे में ले चुका है। यमुना में 1978 में जलस्तर सर्वाधिक था, जो कि 207।49 के करीब था। निकासी और बचाव कार्य के लिए 45 नावें तैनात की गई हैं।

जलस्तर बढ़ने से बाढ़ के खतरा

दिल्ली के हथिनी कुंड बैराज पर यमुना का जलस्तर मंगलवार को 3 लाख 45 हजार क्यूसेक दर्ज किया गया। वहीं जलस्तर बढ़ने से बाढ़ के खतरे आशंका जताई जा रही है। वहीं सरकार ने स्थानीय लोगों को यमुना के निचले इलाकों से दूर रहने की अपील की है। बता दें कि यमुना का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है।

तीन लाख क्यूसेक से ज्यादा पानी यमुना में छोड़ा

बता दें कि सिंचाई विभाग ने भी यह आशंका जताई है कि नदी का जलस्तर 4 लाख क्यूसेक से पार पहुंच सकता है। जानकारी के मुताबिक पिछले 24 घंटे में हथिनी कुंड बैराज से तीन लाख क्यूसेक से ज्यादा पानी यमुना में छोड़ा गया। माना जा रहा है कि यह 72 घंटे में दिल्ली में पहुंच जाएगा।

हरियाणा के हथिनी कुंड बैराज का भी जलस्तर बढ़ा

रिपोर्ट से मिली जानकारी के मुताबिक उत्तराखंड और हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश की वजह से हरियाणा के हथिनी कुंड बैराज का भी जलस्तर काफी बढ़ गया है। इसके बाद बैराज से पानी को यमुना नदी में छोड़ दिया गया है।

दिल्ली में डेंगू के 136 और मलेरिया के 43 मामले

वहीं राजधानी में इस साल डेंगू के करीब 140 मामले सामने आए हैं। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने मच्छर से होने वाली बीमारियों बढ़ने से रोकने के लिए मंगलवार को अधिकारियों के साथ मीटिंग की। आंकड़ों के मुताबिक आठ जुलाई तक दिल्ली में डेंगू के 136 और मलेरिया के 43 मामले सामने आए हैं। मंत्री ने ट्वीट किया कि उन्होंने डेंगू, चिकनगुनिया और मलेरिया जैसी बीमारियों को फैलने से रोकने का निर्देश अधिकारियों को दिया है।

एक्सपायरी दवाई विक्रय करने की शिकायत निकली सही

मेडिकल स्टोर का लाइसेंस हुआ निलंबित

उज्जैन, 12 जुलाई (एजेंसियां)। उज्जैन में मेसर्स अनूप मेडिकल स्टोर 23/1/1 वराह मिहिर मार्ग फ्रीगंज की शिकायत प्राप्त हुई थी। शिकायत में एक्सपायर हो चुकी औषधियों का विक्रय होना बताया गया था। प्राप्त शिकायत के आधार पर मेडिकल स्टोर का निरीक्षण औषधि निरीक्षक उज्जैन धर्म सिंह कुशवाह और जिला आयुष अधिकारी डॉ। मनीषा पाठक द्वारा की गई। जांच में फर्म के संचालक द्वारा एक्सपायर औषधि का विक्रय होना पाया गया तथा अन्य अनियमितताएं भी पाई गई। इस आधार पर औषधि विक्रेता को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया, जिसका स्पष्टीकरण उनके द्वारा कार्यालय में प्रस्तुत किया गया। जो कि संतोषजनक नहीं पाया गया। अनुज्ञप्तिधारी की फर्म में अनियमितता पाये जाने पर औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 नियमावली 1945 के तहत फर्म अनूप मेडिकल स्टोर, फ्रीगंज के लायसेंस 10 दिवस के लिये निलंबित किये गये। औषधि निलंबन अवधि में किसी भी प्रकार की औषधियों के क्रय-विक्रय का कार्य नहीं किया जाएगा।

इन मेडिकल पर भी हुई कार्रवाई।

फ्रीगंज स्थित अनूप मेडिकल के साथ ही अतिरिक्त प्राप्त शिकायत के आधार पर आंजना मेडिकल एण्ड जनरल स्टोर, पुष्पा मिशन हॉस्पिटल के सामने, उज्जैन के भी जांच की गई है, तथा तीन औषधियों के नमूने लिये गये हैं। आंजना मेडिकल स्टोर को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। उनके द्वारा जवाब प्रस्तुत किए जाने पर अधिनियम के तहत नियमानुसार अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

बेकाबू ट्रक ने 50 से ज्यादा भेड़ों को रौंदा

15 घायल, पशुपालक को हुआ 5 लाख का नुकसान

नागपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के नागपुर में मौदा मौदा पुलिस थाना क्षेत्र के तहत स्थित नागपुर भंडारा हाइवे पर तड़के अज्ञात ट्रक ने सड़क से गुजर रही भेड़ों को कुचल दिया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इनमें से 50 से ज्यादा भेड़ों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि 15 से ज्यादा भेड़ें घायल हो गईं। इन भेड़ों का मालिक मौदा से अपनी भेड़ों को कुही होते हुए नागपुर की ओर ले जा रहा था। भंडारा से नागपुर जा रहे एक अज्ञात ट्रक चालक ने अपने वाहन को काफी तेज गति से चलाते हुए सड़क किनारे से गुजर रही भेड़ों को रौंद दिया। बताया जा रहा है कि ड्राइवर काफी लापरवाही से गाड़ी चला रहा था।

5 लाख रुपये का भारी नुकसान

ट्रक की चपेट में आने के साथ ही 50 से ज्यादा भेड़ों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया, जबकि 15 से ज्यादा भेड़ें घायल हो गईं। गुजरात के रहने वाले पशुपालक गोवा रब्बानी ने बताया कि उसे करीब 5 लाख रुपये का नुकसान हुआ है। घटनास्थल पर दृश्य बेहद भयावह था क्योंकि हाइवे पर तमाम भेड़ों की लाश पड़ी हुई थी और चारों तरफ खून बिखरा हुआ था। इस दौरान जो भी उधर से गुजरा उसके रोंगटे खड़े हो गए। मौदा पुलिस को सूचना मिलने पर थाने के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल पर मेडिकल अफसरों को बुलाकर भेड़ों का पंचनामा किया और पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

ट्रक मिला, ट्रक ड्राइवर फरार

रिपोर्ट्स के मुताबिक, दुर्घटना में घायल हुई भेड़ों का इलाज पशु अस्पताल में किया जा रहा है। मौदा पुलिस ने धारा 279, 429 के तहत मामला दर्ज किया है और फरार ट्रक ड्राइवर की तलाश कर रही है। जांच के दौरान पुलिस को पता चला है कि ट्रक की हेडलाइट फूटी हुई थी, इसीलिए जांच में और तेजी लाई गई है। गुप्त जानकारी के आधार पर पुलिस ने ट्रक के बारे में पता चल गया और उमरेड खदान से ट्रक को बरामद कर मोदा थाने लाया गया है। हालांकि आरोपी ट्रक ड्राइवर अभी भी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है और उसकी तलाश जोरशोर से की जा रही है।

अहमदाबाद में शेयर ब्रोकर के अपहरण मामले में छह गिरफ्तार

सूरत, 12 जुलाई (एजेंसियां)। सूरत पुलिस ने अहमदाबाद के शेयर ब्रोकर शक्तिभाई धडुक के अपहरण के मामले में छह लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान मकबुल जिकरभाई सोलंकी (घांची), साबिर शरीफभाई सोलंकी (घांची), सोहिल उर्फ लट्टू उर्फ गट्टू इकबालभाई शेख, रमीज अहमद उर्फ राजा खान जमील अहमद पठान, फिरोज हुसैनभाई गोगड़ा और फारूक हुसैनभाई गोगड़ा के रूप में हुई है। उन्हें गिरफ्तार किया गया। मामले में आगे की जांच और पूछताछ जारी है। संदिग्धों की गिरफ्तारी के साथ-साथ पुलिस ने अपहरण में प्रयुक्त सभी चार वाहनों को भी सफलतापूर्वक जब्त कर लिया।

सप्तश्रृंगी किले पर घाटी में गिरी बस, एक महिला की मौत, 16 घायल

मुंबई, 12 जुलाई (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के नाशिक के सप्तश्रृंगी किले पर राज्य परिवहन की बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। बताया जा रहै है कि ओवर स्पीडिंग के चलते बस घाटी में जा गिरी। हालांकि गनीमत रही कि बस पूरी तरह घाटी में समा जाती उससे पहले ही वह झाड़ियों में अटक गई। खबर है कि इस बस हादसे में एक महिला की मौत हो गई और 16 लोग जख्मी हुए हैं। इसमें 6 लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं, जिन्हें सिटी अस्पताल रेफर किया गया है। जानकारी मिली है कि नाशिक के सप्तश्रृंगी किले पर ये बस हादसा सुबह 6:45 बजे के आसपास हुआ है। इस बस में कुल 20 यात्री सवार थे। कंडक्टर और ड्राइवर को मिलाकर इसबस में कुल 22 लोग सवार थे। बस एक्सीडेंट की खबर मिलते ही स्थानीय नागरिकों और प्रशासन की ओर से फौरन रेस्क्यू ओपेरेशन पूरा किया गया। घटना के बाद मौके पर इलाके के एसपी और पालक मंत्री दादा भूसे भी घटनास्थल पर पहुंच गए। हादसे के बाद घटनास्थल से सीधे अस्पताल पहुंचे नासिक के संरक्षक मंत्री दादाजी भुसे ने कहा, 22 लोग घायल हुए हैं। उनका अस्पताल में इलाज चल रहा है। हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई। घायलों को सरकार की ओर से इलाज मुहैया कराया जाएगा। मृतकों के परिजनों को 10 लाख रुपये की सहायता राशि दी जाएगी।"

'कलंक' कहलाना बुरा लगता है तो लोगों के पीछे क्यों लगाते हैं ईडी-सीबीआई

फडणवीस को उद्धव ठाकरे का जवाब

मुंबई, 12 जुलाई (एजेंसियां)। शिवसेना (यूटीबी) के चीफ और महाराष्ट्र के पूर्व सीएम उद्धव ठाकरे के देवेंद्र फडणवीस को लेकर दिए बयान पर खूब बवाल मच रहा है। उद्धव ठाकरे ने डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस को कलंक बता दिया था, जिसके बाद से ही बीजेपी नेता उन पर लगातार हमलावर हैं। अब पूर्व सीएम उद्धव ठाकरे ने इन तमाम हमलों का जवाब दिया है। जिसमें उन्होंने कहा है कि बीजेपी ने उन नेताओं को अपने साथ कर लिया, जिनके खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले चल रहे हैं। उन्होंने फडणवीस से कहा कि अगर आपको कलंक कहलाना बुरा लगा तो उन परिवारों के बारे में सोचिए जिनके पीछे आपने ईडी और सीबीआई को लगाया। उद्धव ठाकरे ने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा, मैंने कुछ लोगों को कलंक कहा तो उस पर बवाल मच गया, तरह-तरह के रिएक्शन सामने आए। अगर उन्हें कलंक कहे जाने पर इतना बुरा लग रहा है तो कल्पना कीजिए कि जिनके पीछे आप ईडी और सीबीआई को भेजते हैं, उनके परिवारों का क्या हाल होता होगा। इस दौरान ठाकरे ने एनसीपी के विधायक हसन मुश्रीफ का जिक्र किया, जो अब एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार में मंत्री हैं। एनसीपी विधायक का जिक्र करते हुए उद्धव ठाकरे ने कहा, एक वक्त ऐसा था जब एसीपी विधायक हसन मुश्रीफ के घर पर इतने छापे पड़ रहे थे कि उनकी पत्नी ने आरोप लगाया था कि उनका उत्पीड़न किया जा रहा है और इसे जल्द बंद किया जाए। अब वही हसन मुश्रीफ महाराष्ट्र कैबिनेट में हैं। आप लोगों की जिंदगी और उनके परिवार को बदनाम करने का काम करते हैं, लेकिन अगर कोई आपको कलंक कहे तो आपको बुरा लगता है। ये अच्छा है कि मेरे बयान पर जवाब सामने आ रहे हैं, इससे साबित होता है कि उनमें कुछ तो समझदारी बाकी है।

वोटिंग-काउंटिंग-हिंसा और अब मिला बम क्या बारूद के ढेर पर हुआ पंचायत चुनाव?

कोलकाता, 12 जुलाई (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल पंचायत चुनाव में हिंसा थमने का नाम नहीं ले रहा है। भांगड़ में आईएसएफ और पुलिस के बीच झड़प के बाद अब भांगड़ इलाके में भारी मात्रा में बम बरामद किये गये हैं। बम मिलने के साथ ही इलाके में दहशत फैल गई है। इस बीच जब्त बम को निष्क्रिय करने के लिए बम निरोधी दस्ता पहुंच गया है और बम को निष्क्रिय करने का काम चल रहा है। बता दें कि चुनाव हिंसा में अब तक राज्य में 48 लोगों की मौत हो चुकी है और चुनाव परिणाम आने के बाद तीन लोगों की हत्याएं हुई हैं। पंचायत चुनाव के नतीजे आने के ठीक एक दिन बाद न्यू टाउन के गौरांगनगर में जबरदस्त दहशत का माहौल है। बुधवार की सुबह न्यू पल्ली के साहा मार्केट के पास झाड़ी में एक बैग पड़ा मिला। बैग के अंदर ताज़ा बम थे। सूचना पाकर न्यूटाउन थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। इसको लेकर इलाके में तृणमूल और सीपीएम के बीच तनाव शुरू हो गया है। पंचायत चुनाव के दिन जांगड़ा-हतियारा द्वितीय ग्राम पंचायत के एक क्लब के बूथ संख्या 266 और 267 पर मतदान चल रहा था। आरोप है कि इलाके के लोगों ने बूथों पर तोड़फोड़ की और मतपेटियां फेंक दीं। इसके बाद दोबारा चुनाव का निर्णय लिया गया। सोमवार को दोबारा वोटिंग हुई, मंगलवार को काउंटिंग हुई और फिर बुधवार सुबह बूथों से कुछ दूरी पर ताजा बम बरामद हुए। इसके पहले भांगड़ में आईएसएफ और पुलिसकर्मियों के बीच रात को झड़प हुई थी। इस झड़प के दौरान बमबारी और गोली चलने की घटनाएं घटी थी। उसमें आईएसएफ के दो कार्यकर्ताओं की मौत हो गई थी।

जब्त बम को किया गया निष्क्रिय

सीपीएम नेता परिमल मिस्त्री ने आरोप लगाया कि पुनः चुनाव के दिन कई तृणमूल (टीएमसी) प्रायोजित बाहरी लोग एकत्र हुए। उन्होंने पूरे इलाके को घेर लिया। आरोप है कि उन्होंने ऐसा किया है। सीपीएम ने निवासियों से अनुरोध किया कि वे अपने घरों के आसपास बम और मशीनें देखें। दूसरी ओर, तृणमूल की जवाबी शिकायत यह है कि सीपीआईएम-बीजेपी ने ऐसा किया है। इस बीच कैनिंग में विजय जुलूस के दौरान युवा तृणमूल कांग्रेस के दो गुटों में हुई मारपीट में दो महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गयीं। घटना गुरुवार को कैनिंग थाना क्षेत्र के हाटपुकुरिया पंचायत के डेविसाबाद गांव की है।हामिदा लस्कर और राबिया लस्कर नाम की दो महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं।

कैनिंग में दो गुटों में झड़प

स्थानीय लोगों ने दो घायल महिलाओं को बचाया और इलाज के लिए कैनिंग सब-डिवीजन अस्पताल पहुंचाया। शिकायत स्थानीय युवा तृणमूल नेता रकीबुल सरदार के लोगों ने अचानक महिलाओं को लाठी-डंडों से पीटा। सभी पीड़ित इलाके के युवा तृणमूल नेता जलाल सरदार के अनुयायी हैं। इस हमले में फारूक सरदार नाम का एक और व्यक्ति घायल हो गया। हालांकि, कैनिंग ब्लॉक के तृणमूल नेतृत्व ने अपना मुंह नहीं खोला।

बिहार विधानसभा में हुई कुर्सीबाजी

बीजेपी विधायकों ने वेल में पोस्टर फाड़े सदन की कार्यवाही कल तक स्थगित

पटना, 12 जुलाई (एजेंसियां)। बिहार विधानसभा में आज जमकर हंगामा हुआ देखने को मिला है। बीजेपी ने सत्तारुढ़ दल को पूरक प्रश्न पूछने मे तरजीह देने को लेकर खूब बवाल काटा। बीजेपी के विधायकों ने वेल मे आकर नारेबाजी की। इस दौरान उनके हाथों में पोस्टर भी थे। इतना ही नहीं नीरज बबलू ने इस दौरान पोस्टर फाड़कर उड़ा भी दिया। आज भी सदन में भाजपा विधायक वेल में पहुंचकर नारेबाजी कर रहे थे। इस दौरान कुर्सियां उछाल दी गईं, एक कुर्सी तोड़ भी दी गई। हंगामे के बीच आज भी सदन की कार्यवाही कल तक के लिए स्थगित कर देनी पड़ी।

आज तक के लिए स्थगित हुई कार्रवाई

बीजेपी विधायकों के हंगामे के चलते रिपोर्टर टेबल को मार्शल ने घेर लिया था ताकि विधायक उसे उलट ना सकें। इसके बाद रिपोर्टर टेबल की कुर्सियों को लेकर विधायकों ने मार्शल के साथ खींचतान की, इस दौरान एक कुर्सी टूट भी गयी। इस भारी हंगामे को लेकर सदन की कार्यवाही कल 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई।

नेता प्रतिपक्ष ने सीएम नीतीश को घेरा

वहीं बिहार विधानसभा में हंगामे को लेकर नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा ने कहा कि सरकार सदन चलने नहीं देना चाहती है। विपक्ष का माइक बंद कर दिया जा रहा है। नीतीश कुमार ने ही कई विधायकों, मंत्रियों का इस्तीफा एफआई आर दर्ज होने के बाद लिया है लेकिन अब नीतीश कुमार ही उपमख्यमंत्री को बचा रहे हैं, जिस सवाल पर पिछली बार तेजस्वी से नीतीश जवाब मांग रहे थे।

तेजस्वी बोले- बीजेपी ने हमें शपथ लेने से क्यों नहीं रोका

उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने भारतीय जनता पार्टी के द्वारा इस्तीफा मांगे जाने पर कहा, विपक्ष में जो लोग बैठे हैं उन्हें देख कर लगता ही नहीं है कि वे विधायक हैं। विधायक का जो आचरण होता है वे इनमें नहीं दिखता है। उनका काम केवल उलटी-सीधी बातें करना और कमेंट करना है। 2017 में जब हम पर चार्जशीट हुआ था उस समय लोगों ने क्यों नहीं कहा। हमें शपथ लेने से क्यों नहीं रोका। भाजपा का यह काम ही है। अगवानी घाट पुल जब ध्वस्त हुआ था पहली बार तो हमने ही सवाल उठाया था और उस समय भी कार्रवाई हुई थी।

तेजस्वी यादव के इस्तीफे पर अड़ी बीजेपी

गौरतलब है कि पिछले 2 दिनों से लैंड फॉर जॉब मामले में तेजस्वी के खिलाफ चार्जशीट दर्ज होने के बाद विपक्ष उप मुख्यमंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर सदन की कार्यवाही नहीं चलने दे रहा है। भारतीय जनता पार्टी कल तेजस्वी के इस्तीफे की मांग और 23 साल की उम्र में 52 संपत्तियों का मालिक कैसे बने, इसका हिसाब मांगने के लिए भाजपा विधानसभा मार्च करेगी।

नरेंद्र मोदी की कुर्सी महागठबंधन की हो जाएगी

तेजस्वी जब जवाब दे रहे थे उस समय कुर्सी को लेकर बीजेपी विधायकों और मार्शल के बीच खींचतान भी हो गई। बिहार विधानसभा में हुई कुर्सीबाजी पर तेजप्रताप यादव ने कहा कि बीजेपी के विधायकों ने जो काम किया है, उसपर कारवाई होनी चाहिये। इन लोगों ने अपना असली रूप दिखाया है। मैं विधानसभा में भविष्यवाणी करता हूं कि 2024 में नरेंद्र मोदी की कुर्सी महागठबंधन की हो जाएगी।

सीएम नीतीश और सम्राट चौधरी के बीच नोकझोंक

वहीं बिहार विधान परिषद में सीएम नीतीश कुमार और परिषद के नेता प्रतिपक्ष सम्राट चौधरी के बीच भी नोकझोंक हो गई। सीएम नीतीश कुमार ने जब सम्राट चौधरी से पूछा कि सर में पगड़ी क्यों बांधते हैं? इसके जवाब में सम्राट चौधरी ने कहा कि आपको मुख्यमंत्री के पद से हटाने के लिए। जिस दिन आप मुख्यमंत्री पद छोड़ेंगे पगड़ी उसी दिन खुलेगी और इस काम के लिए आपका आशीर्वाद भी चाहिए।

विपक्षी दलों की अगली बैठक से पहले सोनिया गांधी ने सभी पार्टियों को डिनर पर बुलाया, आप को भी दिया न्योता

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। 2024 में होने वाले आम चुनाव को लेकर सभी विपक्षी दल 18 जुलाई को एक बार फिर बैठक करने वाले हैं। इस बैठक में सोनिया और राहुल गांधी के भी शामिल होने की संभावना है। विपक्षी दलों की यह दूसरी बैठक होगी इससे पहले पटना में सभी विपक्षी दलों ने पिछले महीने ही एक बैठक की है। सूत्रों के अनुसार 18 जुलाई को होने वाली बैठक से पहले सोनिया गांधी ने सभी विपक्षी दलों को डिनर पर भी आमंत्रित किया है। आम आदमी पार्टी को भी न्योता दिया गया है। सूत्रों के एक अनुसार सोनिया गांधी 18 जुलाई को होने वाली इस बैठक से ठीक एक दिन पहले इस डिनर का आयोजन कर सकती हैं।

विपक्षी दलों को एक जुट करने का है प्रयास

सोनिया गांधी द्वारा तमाम विपक्षी पार्टियों को डिनर पर बुलाने को विपक्षी दलों को एक जुट करने और विपक्षी एकता को और मजबूत करने की दिशा में प्रयास के तौर पर देखा जा रहा है। बता दें कि बिहार की राजधानी में पटना में हुई विपक्षी दलों की पहली बैठक में 15 पार्टियों ने हिस्सा लिया था।

8 नई पार्टियां होंगी दूसरी बैठक में शामिल

सूत्रों के अनुसार विपक्षी दलों की दूसरी बैठक में आठ नई पार्टी भी शामिल हो सकती है। दूसरी बैठक में जो पार्टियां शामिल होने वाली हैं उनमें खास तौर पर एमडीएमके, केडीएमके, वीसीके, आरएसपी, एआईएफबी, आईयूएमएल, केरल कांग्रेस (जोसेफ), और केरल कांग्रेस (मणि) मुख्य रूप से शामिल हैं। खास बात ये है कि केडीएमके और एमडीएमके 2014 में बीजेपी के साथ गठबंधन में थी। गौरतलब है कि बिहार की राजधानी पटना में विपक्ष को एकजुट करने और 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए रणनीति बनाने के उद्देश्य से विपक्षी दलों की पहली बैठक का आजोयन किया गया था। बिहार के मुख्यमंत्री और जनता दल यूनाईटेड के नेता नीतीश कुमार की पहल पर आयोजित की गई इस बैठक में 15 विपक्षी पार्टियों के 32 नेता शामिल हुए थे। इस बैठक में चार घंटे तक चर्चा चली। बिहार के मुख्यमंत्री और जेडीयू नेता नीतीश कुमार ने कहा था कि व्यापक विपक्षी एकता की दिशा में यह पहला कदम है। 2024 के करीब आने तक इस गठबंधन में और भी पार्टियां शामिल होंगी। राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के प्रमुख लालू यादव ने कहा था कि राज्य की सबसे बड़ी पार्टी को नेतृत्व करना चाहिए, अन्य दलों को समर्थन देना चाहिए। बड़ी पार्टियों को बड़ा दिल दिखाना चाहिए। सीट बंटवारे में कांग्रेस का खुला और लचीला रुख होना चाहिए। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) प्रमुख शरद पवार ने कहा था कि सिर्फ चुनाव ही नहीं, हमें लोकतंत्र की रक्षा के लिए मिलकर काम करना चाहिए। बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) प्रमुख ममता बनर्जी ने कहा था कि बीजेपी के खिलाफ केवल एक संयुक्त विपक्ष का उम्मीदवार होना चाहिए। यह भारत की जनता बनाम मोदी की लड़ाई है।

स्वतंत्र वार्ता

गुरुवार, 13 जुलाई- 2023

पश्चिम बंगाल में नामांकन से लेकर मतगणना तक हिंसा

अशोक भाटिया

पश्चिम बंगाल में टीएमसी पंचायत चुनाव में जीत का जश्न मना रही है। इस जश्न में उन परिवारों की चीत्कार कहीं खो गई जिनके परिजन चुनावी हिंसा के शिकार हुए। 16 मौतों के लिए के लिए मातम का वक्त अभी खत्म नहीं हुआ है। खून से सने पोलिंग बूथ, टूटी मतपेटियां और बुलेट-बम की खौफनाक तस्वीरें भी जश्न के गुलाबी-हरे रंग में खो जाएंगी। यह जीत इसकी गारंटी नहीं है कि अगले चुनाव में यहां हिंसा नहीं होगी। आखिर चुनावों के दौरान बंगाल में हिंसा क्यों होती है? क्या यह पश्चिम बंगाल की नियति है या सरकारी तंत्र की विफलता। चुनाव आयोग या सरकार, किसी न किसी को इन मौतों की जिम्मेदारी लेनी होगी। बंगाल विधानसभा चुनाव के दौरान 16 लोगों की मौत हुई थी और उसके बाद भी 9 हत्याएं हुई थीं। लोकसभा चुनाव 2019 के बाद भी 9 लोगों को जान गंवानी पड़ी थी। 2018 के पंचायत चुनाव में भी बंगाल में 23 लोग मारे गए थे। इससे पहले भी चुनावों में राजनीतिक हत्याएं होती रही हैं। नक्सलबाड़ी के लिए मशहूर बंगाल में राजनीतिक हत्याओं का इतिहास पांच दशक से ज्यादा पुराना है। 1971 में कांग्रेस के सिद्धार्थ शंकर रे के शासनकाल में शुरू हुआ हिंसा का दौर आज तक नहीं थमा। कांग्रेस के बाद सीपीएम, फिर टीएमसी सत्ता में आई। लंबे समय तक ज्योति बसु, बुद्धदेब भट्टाचार्य और ममता बनर्जी सीएम के तौर पर कुर्सी पर काबिज रहीं मगर इनके राज में हिंसा नहीं रुका। 2011 में वाम दलों का किला ढहा तब यह उम्मीद जताई गई कि ममता बनर्जी इस रक्तरंजित गाथा पर पूर्णविराम लगाएंगी, मगर ऐसा नहीं हुआ। ममता बनर्जी के शासनकाल में भी 12 साल से बंगाल चुनावों में लहूलुहान हो ही रहा है। एनसीआरबी के आंकड़े बताता हैं कि 10 साल के शुरुआती ममता राज में 150 लोग चुनावी हिंसा के शिकार हुए। अब तो चुनावी हिंसा भद्रलोक के बंगाल की संस्कृति बन गई है।पंचायत से आम चुनाव तक हिंसा का दौर जारी रहा और यह हिंसा चुनाव की मतगणना तक चालू है । गणना के बाद जीतने वाले और हारने वालों का हश्र क्या होगा यह तो भगवान ही जाने . दरअसल अब तक बंगाल में हालात कश्मीर से भी बदतर रहे हैं । अंतिम चरण के मतदान से दो दिन पूर्व भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह का यह कहना कि 'पश्चिम बंगाल में भाजपा के 80 कार्यकर्ता मारे गए हैं। हम तो पूरे देश में चुनाव लड़ रहे हैं, कहीं और हिंसा क्यों नहीं होती है। हमारे कारण हिंसा होती तो देश के हर हिस्से में होती', एकबारगी इस पहलू पर सोचने को मजबूर तो करता ही है। स्पष्ट है कि पश्चिम बंगाल में लोकतंत्र को लाठी के बल पर अपहृत करने की कोशिश की गई और राष्ट्रीय चुनाव आयोग भी तनिक देर से जागा। ज्ञात हो कि पश्चिम बंगाल में 1960-70 के दशक के नक्सल आंदोलन से शुरू हुआ हिंसा का ये सिलसिला बदस्तूर जारी है। एक सरकारी आंकड़े के अनुसार 1977 से 2007 तक ही 28 हजार राजनीतिक हत्याएं राज्य में हुईं। इस दौर के बाद सिंगूर और नंदीग्राम के आंदोलन ने हिंसा का नया चेहरा पश्चिम बंगाल में पेश किया। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार 2016 में पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा की कुल 91 घटनाएं हुईं जबकि किसी न किसी रूप में 205 लोग इसका शिकार बने थे। 2015 में कुल 131 घटनाएं दर्ज की गई थीं, जिनमें कुल 184 लोग प्रभावित हुए थे। 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान भी 14 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी और 1100 से ज्यादा राजनीतिक हिंसा की घटनाएं राज्य में चुनाव के दौरान दर्ज की गई थीं। 2013 में राजनीतिक झड़पों में कुल 26 लोगों की जानें गई थीं। आठ वर्ष पूर्व 2011 में ममता बनर्जी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 34 साल के शासन को उन्हीं की तर्ज पर हिंसक आंदोलनों के सहारे खत्म कर सत्ता में आईं तो जरूर लेकिन जनता की उम्मीदों पर खरी नहीं उतरीं। ममता के शासनकाल में पंचायत चुनावों के बाद इस बार आम चुनाव के दौरान भी कहीं न कहीं किसी बहाने हिंसा देखने को मिली। राज्य में संस्कृति के साथ संस्कार भी चुनावी हिंसा की भेंट चढ़ गया। विद्यासागर कालेज में स्थापित 200 साल पुरानी उन्हीं की मूर्ति को उपद्रवियों ने तोड़ दिया। विद्यासागर बंगाल के साथ पूरी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के आदर्श हैं, वह सबसे बड़े समाजशास्त्री और समाज सुधारक थे। पश्चिम बंगाल की राजनीति के जानकारों के अनुसार मौजूदा लोकसभा चुनाव तृणमूल कांग्रेस के लिए करो-या-मरो की लड़ाई रही थी और अगले चुनाव में भी यह बनी रहेगी क्योंकि उसे पता था कि सत्ता में रहकर ही वो प्रासंगिक बनी रह सकती है। संभवतः इसीलिए, तृणमूल सरकार ने भाजपा नेताओं की रैलियों को रोकने तक की कोशिश की। अमित शाह, योगी आदित्यनाथ और शिवराज सिंह चौहान की रैलियों में हेलीकॉप्टर उतरने की अनुमति नहीं दी गई। भाजपा नेता प्रियंका शर्मा को सोशल मीडिया पर ममता दीदी से जुड़ी एक तस्वीर फॉरवर्ड करने की वजह से जेल में डाल दिया गया और सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के 24 घंटे बाद भी उन्हें जेल से रिहा नहीं किया गया। दरअसल, भाजपा-तृणमूल टकराव की शुरुआत अक्टूबर 2014 में हुए बर्धवान विस्फोट की जांच राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी को देने के केंद्र के फैसले से हो गई थी। ममता बनर्जी ने राज्य सरकार को सूचित किए बगैर जांच स्वतः ही एनआईए को दिए जाने के केंद्र के फैसले पर ऐतराज जताया था। इसके बाद सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर चर्चित शारदा घोटाले की सीबीआई जांच के दौरान भाजपा ने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी के करीबियों ने शारदा घोटाले को अंजाम दिया है और लोगों से हड़पा गया धन तृणमूल को मिला है। शारदा घोटाले में तृणमूल के राज्यसभा सांसद कुणाल घोष को नवंबर 2013 में गिरफ्तार किया गया था। कड़वाहट तब और बढ़ गई जब सीबीआई की टीम 3 फरवरी की शाम को कोलकाता पुलिस आयुक्त राजीव कुमार के आधिकारिक निवास पर तलाशी व पूछताछ के लिए पहुंच गई। तब कोलकाता पुलिस सीबीआई टीम को पकड़ कर थाने ले गई और स्थानीय सीबीआई दफ्तर को घेर लिया। इस बीच ममता बड़े ही नाटकीय अंदाज में पुलिस आयुक्त के घर पहुंच गईं। ममता सीबीआई के जरिए केंद्र पर तानाशाही का आरोप लगाते हुए सभी राजनीतिक दलों और देश के सभी सुरक्षाबलों को ललकारते हुए धरने पर बैठ गईं और बाद में पश्चिम बंगाल में सीबीआई के प्रवेश पर रोक लगा दिया। शारदा चिटफंड की तरह ही रोज वैली घोटाले पर भी काफी वक्त से हड़कंप मचा हुआ है। इसमें कई बड़े नेताओं का नाम भी शामिल होने की बात सामने आ चुकी है। तृणमूल के दो सांसदों सुदीप बनर्जी और तापस पाल को तो महीनों जेल में रहना पड़ा था। इसी कड़ी में नारद स्टिंग विवाद का जिक्र भी आता है। पश्चिम बंगाल विधान सभा चुनाव के समय नारद न्यूज पोर्टल ने कई सारे वीडियो अपलोड किए थे, जिनमें तृणमूल कांग्रेस के कई बड़े नेताओं को एक फर्जी कंपनी का पक्ष लेने के बदले रुपये स्वीकारते देखा गया था। इस मामले में अप्रैल 2017 में सीबीआई ने तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं सहित 13 लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की।

हालांकि ये मामले सीबीआई ने कोलकाता हाईकोर्ट के आदेश के बाद दर्ज किए थे, लेकिन ममता बनर्जी शुरू से ही मोदी सरकार पर सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) समेत तमाम एजेंसियों को प्रदेश सरकार के खिलाफ राजनीतिक हथियार बनाने के आरोप लगाती रहीं। भाजपा के लिए पश्चिम बंगाल में अपना जनाधार बढ़ाने का इससे अच्छा मौका और क्या हो सकता था। 2014 में भाजपा को यहां सिर्फ दो सीटों पर जीत मिली थी, लेकिन पांच साल बाद भाजपा मुख्य लड़ाई में आ गई और दीदी के लिए सबसे बड़ी मुसीबत बन गई।

इंसाफ की उम्मीद

काफी कडी मशक्कत और महिला पहलवानों के लंबे धरने के बाद की गई खोजबीन में आखिरकार दिल्ली पुलिस ने मान लिया है कि कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह यौन उत्पीड़न के आरोपी हैं। इसलिए उन पर मुकदमा चलाया जा सकता है। बता दें कि देश भर में प्रसिद्ध छह पहलवानों ने उनके खिलाफ यौन उत्पीड़न, गलत तरीके से छूने, पीछा करने और डराने-धमकाने के आरोप लगाए थे। इसमें पंद्रह मामले यौन उत्पीड़न के थे। दस मामले गलत तरीके से छूने के बताए जा रहे हैं। उसमें भी एक नाबालिग पहलवान के यौन उत्पीड़न का आरोप था। बता दें कि इन्हीं शिकायतों के साथ फरवरी में महिला पहलवानों ने दिल्ली में धरना-प्रदर्शन किया था। तब सरकार ने उन्हें समझा-बुझा कर भरोसा दिलाया था कि धरना उठा लो, इस मामले की जांच एक समिति करेगी और तब तक कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष पद पर बृजभूषण शरण सिंह नहीं रहेंगे। लेकिन जब उक्त समिति ने कोई भी जांच व कार्रवाई नहीं की तो महिला पहलवान फिर से धरने पर बैठ गई। हद तो तब हो गई जब बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की बजाय उनके धरने को ही खत्म कराने के तरह-तरह के जतन किए जाने लगे। सरकार ने भी कोई सकारात्मक रुख नहीं दिखाया। सर्वोच्च न्यायालय ने फटकार के बाद दिल्ली पुलिस ने मामला दर्ज करने की रस्म अदायगी की लेकिन मुकदमा दर्ज नहीं किया। पुलिस ने स्पष्ट किया कि पहले जांच होगी कि महिला पहलवानों के आरोपों में सच्चाई है भी या नहीं। देखा जाए तो जिस तरह के संगीन आरोप बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ लगे थे, उसमें उन पर तुरंत कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए थी। इसके बावजूद दिल्ली पुलिस निष्क्रिय बनी रही ताकि बाहुबली नेता को कुछ गवाहों और आरोपियों को तोड़ने का मौका मिल जाए। इसके बाद देश के सामने आकर नाबालिग पहलवान ने अपना आरोप वापस ले लिया। फिर देश भर से महिलाओं के विरोध का स्वर उभरना शुरू हुआ। फिर भी प्रशासन के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। उलटे पहलवानों के आंदोलन को कमजोर करने के तरह-तरह के हथकंडे अपनाए जाने लगे। बृजभूषण शरण सिंह खुद को बेगुनाह बताते हुए पहलवानों के खिलाफ अनर्गल बयान देते रहे। यहां तक कि उन्होंने अपने पक्ष में अयोध्या में संतों का एक सम्मेलन भी आयोजित कर लिया था लेकिन ऐन वक्त पर उस पर रोक लग गई। इसके बाद उन्होंने खुद एक विशाल रैली का आयोजन कर अपना दम दिखाया। जिस दिन नए संसद भवन का उद्घाटन हो रहा था, महिला पहलवान और देश के विभिन्न हिस्सों से आई महिलाएं विरोध प्रदर्शन करते हुए नए संसद भवन की तरफ बढ़ रही थीं, तब पुलिस ने उनके खिलाफ जिस तरह की दमनात्मक कार्रवाई की, वह इतिहास में दर्ज हो गया। जंतर मंतर के उनके धरना स्थल को पुलिस ने उजाड़ कर उस आंदोलन को कुचल दिया। उसके बाद वे सडक छोड कर महिलाओं ने कानूनी लड़ाई लड़ने की घोषणा कर दी थी। अब पुलिस का कहना है कि यह आरोप पत्र उसने विभिन्न पहलवानों, प्रशिक्षकों, खिलाड़ियों आदि के पूछताछ के आधार पर तैयार किया है। उसने अदालत को कुछ गवाहों के नाम भी सुझाए हैं, जिनसे पूछताछ की जा सकती है। पुलिस ने अब जाकर सही मायनों में बृजभूषण शरण सिंह पर शिकंजा कसना शुरू किया है। अब तक तो वे अपने राजनीतिक रसूख और दबंगई के बल अपने को बेदाग बता कर पर कई तरह की कार्रवाई से बचते रहे। लेकिन अब मामला अदालत में पहुंचने के बाद उनका राजनीतिक रसूख कितना काम आएगा यह तो समय ही बताएगा। एक बात तो तय है कि जिस तरह उन्हें बचाने की कोशिश की जाती रही, उसका लोगों में गलत संदेश गया है। बहरहाल, देर से ही सही,लेकिन दुरुस्त आए हैं। पुलिस की सक्रियता से इस मामले में अब इंसाफ की उम्मीद की जाना चाहिए।

सत्तापक्ष बनाम विपक्षी एकता के अंतर्द्वंद्व

डॉ. चक्रपाल सिंह

देश की 15 विपक्षी पार्टियों की पटना बैठक के फलितार्थ को लेकर सत्तादल, राजनैतिक विश्लेषक, मुख्यधारा के मीडिया, यूट्यूबर के अलावा विभिन्न दल अपने अपने राजनैतिक गुणा भाग में व्यस्त ही थे कि इसी बीच सत्ता की हनक एवं धमक के चलते महाराष्ट्र के राजनैतिक घटनाक्रम ने एक बार पुनः सभी राजनैतिक पंडितों को चौंका दिया। इसने विपक्षी एकता के लिए प्रयासरत दलों में बैचेनी बढ़ा दी है। विभिन्न स्तरों पर विपक्षी एकता को लेकर चलने वाले विमर्श की जगह महाराष्ट्र घटनाक्रम ने ले ली और एक नई तरह की बहस शुरू हो गयी। ऐसा लगा कि भारतीय राजनीति अवसरवादिता एवं अनिश्चितताओं के बीच जुआ बनकर रह गयी है। बदली राजनैतिक स्थितियों एवं परिस्थितिओं को ध्यान में रखते हुए खौफ़जदा विपक्ष द्वारा अगली बैठक का स्थान शिमला से बेंगलुरू में शिफ्ट किया जा चुका है। 18-19 जुलाई 2023 की बेंगलूरु में प्रस्तावित विपक्षी एकता की बैठक को लेकर राजनैतिक अटकलों का बाजार गर्म है। आयाराम गयाराम का राजनैतिक बाजार अपने उफ़ान पर है। वहीं विषम सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों की ठोस हकीकतों को भांपते हुए भाजपा को, अब तक राजनैतिक एवं वैचारिक एकता के अभाव में बिखरे तथा सत्ता की एक बूँद के लिए हाशिए पर तड़पते एनडीए के घटक दलों की याद चुकी है। भाजपा ने अपनी चिर परिचित दूरगामी राजनैतिक रणनीति के तहत, इन दलों पर न केवल डोरे डालना शुरू कर दिए हैं बल्कि आने वाले चुनावी मौसम से पहले ही टर्र टर्र ! की आवाजें देकर आकर्षित करना शुरू कर दिया है। इसी क्रम में विपक्षी बैठक के समानांतर 18 जुलाई 2023 को दिल्ली में बैठक आयोजित करने की घोषणा की जा चुकी है। इतना ही नहीं चुनावी बादलों के उमड़ने घुमड़ने की आश लगाए बैठे राजनैतिक मौसम विज्ञानी भी सक्रिय हो चुके हैं। पूरी बेशर्मी के साथ राजनैतिक, वैचारिक एवं दलीय निष्ठाएं कपड़ों के तरह बदले जाने का सिलसिला शुरू हो चुका है। ऐसे में कोई भी अनुमान लगाना मुश्किल है कि कौन किसके साथ जाएगा । आएं, राजनैतिक धींगामुश्ती के गलगंजन के मध्य सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के उन अंतर्द्वंदों पर विचार करते हैं जो आने वाले चुनावों में विपक्षी एकता तथा सरकार को प्रभावित कर सकते हैं । चूंकि बीते नौ वर्षों में जनता ने भाजपा के शासन को करीब से देखा और परखा है। आज भ्रष्टाचार, शासन के तौर तरीकों, सत्ता जनित ग़रूर तथा आलोचनाओं से बेखबर भाजपा की भी वही स्थिति है, जो सत्ता में रहते कांग्रेस की थी। अंतर सिर्फ इतना है कि आपातकाल के दौरान कांग्रेस ने विपक्ष पर एक तरफ़ा कार्यवाही कर आतंकित किया था, तो आज भाजपा संवैधानिक संस्थाओं तथा एजेंसियों के माध्यम से वैधानिकता की चादर ओड़ कर विपक्ष पर कार्यवाही कर आतंकित किए हुए है। यहाँ लाख टके का सवाल यह है कि 9 वर्षों से केन्द्रीय सत्ता तथा अधिकाँश राज्यों में काबिज भाजपा ने जन भावनाओं को समझने की कोई ईमानदारीपूर्ण कोशिश भी की है? तमाम आत्म्श्लाघीय दावों के बावजूद चुनाव में जनता से किए वादों को समयबद्ध तरीके से कागजों की जगह जमीन पर व्यवहारिक अमली जामा नहीं पहना पाई? इधर हिमाचल एवं कर्नाटक की हार ने सरकार को अन्दर से हिला दिया है। अन्दर के इस राजनैतिक डर को छुपाने तथा किसी भी हालत में आगामी विधान सभा तथा लोक सभा चुनावों में अपनी जीत सुनिश्चित करने की रणनीति के अंतर्गत युद्धस्तर पर तैयारियां शुरू कर दी गईं हैं। जहां संगठन एवं मंत्रिमंडल में अपने पत्तों की फिटाई की प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है। तो दूसरी तरफ प्रधानमंत्री तथा उनके मंत्री नए नए नारे गढ़ने तथा विपक्ष को भ्रष्टाचारियों का समूह साबित करने के प्रयासों में आक्रामकता के साथ अपनी पूरी रौ में नज़र आ रहे हैं। शिक्षा,स्वास्थ्य, रोजगार जैसी मूलभूत जरूरतों का आम जनता के हाथों से फिसलने का कहीं कोई उल्लेख नजर नहीं आता है। दाएं बाएँ से, किसी भी तरह पूरे विमर्श को धर्म तथा राष्ट्र पर केन्द्रित करने का प्रयास नजर आ रहा है। तुष्टीकरण बनाम संतुष्टीकरण जैसे नारे गढ़े जा रहे हैं। भाजपा के अन्दर खदकते विरोध तथा निजी महत्वाकांक्षाओं को दबाने तथा अंतिम समय में सामाजिक समीकरण को साधने जैसे उपाय जारी हैं। इस कड़ी में मंत्रिमंडल में फेरबदल की चर्चाएँ काफी दिनों से हवा में तैर रहीं हैं। प्रधानमंत्री किस समय क्या निर्णय लेंगे, अंदाज लगाना मुश्किल है। फिर, अडानी, मणिपुर, महिला पहलवानों के शोषण, चीन जैसे मुद्दों पर भाजपा तथा माननीय प्रधानमंत्री की रहस्यमय चुप्पी को इन उपायों से क्या उचित ठहराया जा सकता है ? अब छल-कपट आधारित राजनैतिक एवं बौद्धिक बेईमानी से सत्ता को पाना और चलाना न केवल असंभव होगा बल्कि दुश्वार भी होगा। जनता से किए गए वादों को बिना किसी भेदभाव के पूरी पारदर्शिता तथा ईमानदारी से समयबद्ध तरीके से ज़मीनी धरातल पर उतारना होगा। प्रधानमंत्री तथा उनकी पार्टी को जानना होगा कि आखिर धर्म, जाति, राष्ट्र के परम्परागत नारे क्यों बेअसर होते नजर आ रहे हैं? इसके नेपथ्य में क्या है; जिससे जनता का अब भरोसा उठ रहा है? कहीं ऐसा तो नहीं कि सीमांत वर्गीय लोग एवं समाज धीरे धीरे राजनैतिक पार्टियों के प्रतीत्मक प्रतिनिधित्व की नीति एवं नीयत के अंतर्विरोध को समझ रहे हैं। उदाहरणार्थ उन्हें राष्ट्रपति जैसे पद पर समाज के प्रतिनिधित्व से भी भरोसा नहीं हो पा रहा है कि वे भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में सचमुच समावेशी एवं संतुलित सामाजिक व आर्थिक विकास का हिस्सा हैं। इन्हें इस प्रतीतात्मक प्रतिनिधित्व की आड़ में, अपने संविधान प्रदत्त नागरिक अधिकार एवं सुरक्षा दांव पर लगती नजर क्यों आने लगी है? कर्नाटक विधान सभा का मतदान पैटर्न इसकी पुष्टि करता है। हकीकत ये है कि जनता अब ये मान चुकी है कि अब बहुत दिनों तक वह प्रतीतात्मक भव्य काल्पनिक रथों ! पर बैठकर भूख-प्यास को भुलाने के लिए तैयार नहीं है। एक और बात, किसी को इतना नहीं डराओ कि उसका डर ही ख़त्म हो जाए। इसके परिणामों के तमाम ऐतिहासिक उदाहरण मौजूद हैं। शायद ! राहुल गांधी के साथ ऐसा ही होता, जनता को नजर आ रहा है। वहीं दूसरी तरफ अपने दीर्घकालिक राजनैतिक हितों के दृष्टिगत विपक्ष को अपनी-अपनी स्वनिर्मित छवियों तथा अहम् को त्यागना होगा। अपने सभी स्थानीय, क्षेत्रीय तथा विचारगत मतभेदों को भुलाकर किसी न्यूनतम साझा कार्यक्रम पर आम सहमति के साथ एक मंच पर आना होगा होगा। राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष एवं उसके नेतृत्व को जनता को भरोसा दिलाना होगा कि वह सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय समरसता के प्रति न केवल प्रतिबद्ध है वल्कि वचनवद्ध भी है। अब किन्ही धार्मिक, पार्टीगत, जातिगत तथा विचारगत दृश्य-अदृश्य कारणों एवं बहानों की आड़ में वह अपने वादों से विचलित नहीं होगा।

सामाजिक समरसता के संदर्भ में गुरुजी

वीरेंद्र सिंह परिहार

कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह का कहना है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक गोलवलकर ने अपनी किताब में लिखा है, " मैं सारी जिंदगी अंग्रेजों की गुलामी करने को तैयार हूं, लेकिन जो दलितों पिछड़ों और मुसलमानों को अधिकार देती हो ऐसी आजादी मुझे नहीं चाहिए। "दिग्विजय ने यह भी कहा –" श्री गोलवलकर ने यह भी लिखा है, जब भी सत्ता हाथ लगे, देश की धन संपत्ति, राज्यो की जमीन और जंगल 2 -3 विश्वसनीय व्यक्तियों को सौंप दो, और 95% जनता को भिखारी बना दो, उसके बाद सात जन्मों तक सत्ता हाथ से नहीं जाएगी। दिग्विजय ने श्री गुरुजी पर ऐसे आरोप लगाते हुए यह बताने की जरूरत नहीं समझी कि श्री गुरुजी ने अपनी किस किताब में किस पेज नंबर में ऐसी बातें लिखी हैं। जबकि गुरु जी का स्पष्ट रूप से मानना था कि समाज का विघटन होने के चलते हिंदू समाज का जो पतन हुआ, उसी के कारण राष्ट्र का पतन हुआ है। बहुत से लोग श्री गुरु जी पर यह आरोप लगाते हैं कि गुरुजी वर्णव्यवस्था के पक्षधर थे और उसे देश में पुनः वापस लाना चाहते थे। इस संबंध में श्री गुरु जी का स्पष्ट रूप से कहना था –" एक ही चैतन्य का विविधता पूर्ण आविष्कार ही आत्मा का आधार है, क्योंकि आत्मा सम है और यही समता का आधार है। जैसे एक वृक्ष की शाखाएं पत्तियां फूल और फल सभी एक दूसरे से भिन्न है लेकिन यह देखने वाली विविधता उस वृक्ष की भांति भारत की अभिव्यक्ति है।शरीर के विभिन्न अवयव है, जिनके कार्य अलग-अलग हैं लेकिन शरीर का कोई भी अंग शरीर के विरोध में कार्य नहीं करता, परस्पर पूरक तथा अनुकूल व्यवहार करता है। " इन्हीं संदर्भ में श्री गुरु जी का कहना था यही सामंजस्य अथवा एकात्म का भाव समाज में भी परस्पर एक दूसरे के प्रति होना चाहिए। गुरुजी की दृष्टि में समाज ही भगवान है, उसका कोई अंश अछूत या हेय नहीं, एक-एक अंग पवित्र है। पुरानी जाति व्यवस्था की तुलना वह आधुनिक आर्थिक गिल्डो से करते थे, उनका स्पष्ट कहना था कि ऐसी व्यवस्था ने एक समय समाज का उपकार किया, अब अपकार कर रही है तो उसे तोड़कर नई व्यवस्था बनाएंगे। उनका कहना कि सबसे बुरी बात है कि अस्पृश्यता को धर्म से जोड़ दिया गया। अस्पृश्यता को वह छुद्र भाव और मानसिक विकृति का प्रतीक मानते थे। उनका मानना था कि यदि इस मामले में धर्माचार्य आगे आएं तो इसका समाधान आसानी से निकल सकता है। इसीलिए विश्व हिंदू परिषद के माध्यम से उन्होंने सभी संतो एवं धर्माचार्यो को इकट्ठा किया और वर्ष 1966 के प्रयाग के विश्व हिंदू परिषद के माध्यम से कोई हिंदू पतित नहीं, ऐसी उद्घोषणा धर्माचार्यो के माध्यम से कराई। इससे आगे बढ़ते हुए 1969 में उडुपी में विश्व हिंदू परिषद के सम्मेलन में धर्माचार्यों एवं संतो के माध्यम से अस्पृश्यता को धर्म विरुद्ध बताते हुए 'हिंदवा सोदरा सर्वे ' यानी सभी हिंदू एक हैं, ऐसा उद्घोष कराया। उनका कहना था कि रामायण एवं महाभारत के रचयिता उच्च जातियों के नहीं थे। रामायण के रचयिता बाल्मीकि तो शूद्र जाति के थे, फिर भी उन्हें महर्षि के रूप में स्वीकार किया गया, जो पूरे हिंदू समाज के लिए आदरणीय हैं। गुरु जी के लिए अस्पृश्यता का विरोध मात्र भाषण और उपदेश में ही नहीं, उसे उन्होंने अपने जीवन में भी एका कार किया था। एक बार जब वह बिहार में वंचितों की बस्ती में गए। वहां से चाय पान कर जब लौटने लगे तो अन्य लोगों को उल्टियां होने लगी, पर श्री गुरु जी सामान्य ही बने रहे। श्री गुरु जी ने कहा कि आप लोगों का ध्यान बस्ती की गंदगी पर ही बना रहा, इसलिए आप लोगों ने वहां की गंदगी पी डाली और मैंने उनका स्नेह और प्यार पी डाला। उसी से मुझे अमृततुल्य पोषण प्राप्त होता है। वनवासी बांधवों का विचार करते हुए उन्होंने बताया की अंग्रेजों ने उन्हें आदिवासी की संज्ञा दी ताकि यह प्रचारित किया जा सके कि देश से बाहर से आर्यों ने आकर उन पर आक्रमण कर उन्हें जंगलों में धकेल दिया। उनका हिंदू धर्म से कोई रिश्ता नहीं है। श्री गुरु जी के इन्हीं प्रयासों के चलते राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना हुई, जिसमें वनवासियों को शिक्षित करने के लिए विद्यालय, छात्रावास, प्रशिक्षण केंद्र, चिकित्सा सुविधा, खेलकूद एवं सांस्कृतिक उन्नयन के लिए अनेक प्रतिष्ठान सफलतापूर्वक देशभर में चल रहे हैं। इस संदर्भ में एक प्रसंग उल्लेखनीय है, एक बार एक साधु पुरुष ने श्री गुरु जी से कहा कि असम में जो वनवासी रहते हैं वह तो गौमांस खाते हैं, उनको हम हिंदू कैसे कह सकते हैं?

श्री गुरुजी ने इस पर कहा – क्या वे लोग शौक से गौ मांस खाते हैं, उनको दूसरा कुछ खाने को मिलता नहीं, क्या हम लोगों ने उनकी भोजन व्यवस्था के लिए कुछ किया? हम उनको कोई शिक्षा दीक्षा एवं संस्कार देने नहीं गए। इसलिए यह उनका नहीं, हमारा दोष है। श्री गुरुजी समन्वय के सुमेरु थे। सिख, जैन, बौद्ध, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन के संबंध में उनका मत था के समय-समय पर अपने समाज में आई हुई कमियों को दूर करने के लिए ऐसे अनेक पंथों का उदय हुआ।

भारतीय पृष्ठभूमि में आध्यात्म और चिंतन

संजीव ठाकुर

भारतवर्ष सदैव आध्यात्मिक और वैदिक भारत के रूप में संपूर्ण विश्व में जाना जाता रहा है। अध्यात्म से जुड़े हुए हमारे ऐतिहासिक महापुरुषों के कारण भारत सदैव आदर की दृष्टि से देखा जाता है। अध्यात्म और नैतिक शिक्षा भारत के लिए एक बहुत बड़ी पूंजी तथा संपत्ति है, जो हमें विरासत में प्राप्त हुई है। आध्यात्मिकता के दम पर ही भारत ने विश्व में वैदिक शास्त्र, अध्यात्म का परचम लहराया है। वैदिक दर्शन और अध्यात्म दर्शन भारतीयता का ऐतिहासिक परिचायक है। आध्यात्मिक शक्ति एवं वैदिक ऊर्जा के कारण भारत के महापुरुष सदैव सच्चरित्र और ब्रह्मचर्य का पालन करते आए हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने भी सत चरित्र को अपने जीवन का अंग बना कर अनेक वैदिक ग्रंथों की रचना भी की है जो प्रत्येक भारतीय जनमानस के लिए, मार्गदर्शक ग्रंथ बन गए हैं। रामकृष्ण परमहंस, मां शारदा, विवेकानंद, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं अनेक ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने सत्चरित्र और अध्यात्म के दम पर भारत को विश्व में सर्वोच्च मुकाम भी दिलाया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा है की सच्चरित्र केवल एक व्यक्ति का ना होकर संपूर्ण राष्ट्र का होना चाहिए। अनेक यूरोपीय विद्वानों ने और भारतीय अध्यात्म के मनीषियों ने सत और चरित्र को अपने जीवन में आत्मसात करने के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए, और दोनों को मिलाकर सत्चरित्र शब्द को बड़े विस्तार से समझाया है। अध्यात्म और योग शक्ति ही मनुष्य को सच्चरित्र बनाने में हमेशा मददगार रही है क्योंकि अध्यात्म से व्यक्ति की एकाग्रता तथा ज्ञान में वृद्धि होकर मन ईश्वर के प्रति श्रद्धानवत होता है और ईश्वर के प्रति जो व्यक्ति अगाध श्रद्धा रखता है वह सदैव अपने चरित्र के प्रति विशेष सावधान रहकर सच्चरित्र व्यक्तित्व ही बनाता है।वह कहावत एकदम सत्य प्रतीत होती है की सद्गुण है सच्ची संपत्ति दुर्गुण बड़ी विपत्ति यह तो निश्चित है की सदाचारी परोपकारी संयमशील, इमानदार ,निष्ठावान नागरिक सच्चरित्र होकर एक महान राष्ट्र को जन्म देता है।वहीं दुष्ट चरित्र व्यक्ति काम, क्रोध, कामना और लालच में पड़कर अपनी जिंदगी को नर्क बना कर दिया सदैव अशांत रहता है, अशांत नागरिक किसी भी कार्य में स्थिरता अथवा प्रगति प्रदान नहीं कर सकता है, वह अपने समाज तथा देश को कमजोर करने का ही कार्य करता है। धन और संपत्ति से ज्यादा महत्वपूर्ण चरित्र को बलवान बनाने वाली आध्यात्मिक शिक्षा ही है। धन-संपत्ति नष्ट होने पर किसी भी व्यक्ति का बड़ा नुकसान नहीं होता पर यदि चरित्र चला जाए तो उसका सम्मान यश तथा सामाजिक स्थिति एकदम निकृष्ट बन जाती है उसका समाज में अपमान होने लगता है, ऐसे में कोई भी व्यक्ति या नागरिक समाज में सिर उठाकर नहीं चल सकता ऐसा व्यक्ति समाज के उत्थान में कोई योगदान देने के काबिल नहीं रह जाता। इसलिए मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण आवश्यकता आध्यात्मिक शिक्षा एवं चरित्रवान जीवन है।

सरकारी बैल

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

सरकारी बैल ने इस वर्ष भी गोबर ही किया। चलो किया तो किया पर समय से तो करता !! जब देखो तब खेत चरने में मशगूल। खेत जोत सकता है लेकिन जोतता नहीं, चुपके से खेत में घुसा रहता है। खुशी इस बात की है कि वह गोबर तो करता है। नहीं तो उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया तो उल्टे खर्चे हमारे जेब से लगेंगे। वैसे उसकी कोई गलती नहीं है, वो तो अभी पैर पसारना सीख रहा है। लेकिन है खानदानी, खाने का मौका मिल जाए तो चारा-चंदी ऐसा साफ करे कि पूछो मत। भूखे विरोधी जब इसे रात-दिन पगुराते देखते हैं तो मारे गुस्से के उनके खाली मुंह से भी झाग निकलने लगता है। पास पडौस के सब बोलने लगे हैं कि मिश्राजी, निकाल बाहर करो इस बैल को, क्या काम का ससुरा, खाती बहोत है, देती कुछ नहीं है। सिरफ गोबर-गैस के भरोसे खूंटे से बांधे रखना कोई समझदारी तो है ना! हम तो ठहरे सीधे-सादे, इज्जतदार भी। खयाल कहीं न कहीं इज्जत का भी है। हमारे दादा काठियावाड़ बैल ले आए थे। तभी से उसी की पीढ़ी चली आ रही है। पीढ़ी दर पीढ़ी खूंटे पर बांधे रखा है। पहले वालों ने तो समय पर खेत जोत दिया करते थे, कभी कम कभी ज्यादा, पर बाद में नस्ल बिगड़ती गई।

इधर मंहगाई के साथ साथ इसकी खुराक भी बढ़ती जा रही है और काम के नाम पर ठन-ठन गोपाल। बैल का पेट भरने में पुश्तैनी जमीन बिकती जा रही है परंतु दादा की निशानी है सो घर में जजमान समझ कर बांध रखा है। लोगों के कहने सुनने से कई दफा मन हुआ कि हाट बता ही दें। पर बैल सरकारी है, बड़ा चतुर चालाक, दो पीढ़ी पहले वाले ने मौका मिला तो संविधान चबा कर महीनों जुगाली किया था, उसका असर अभी भी बना चला आ रहा है। उसके कामकाज की भाषा अंग्रेजी जैसी कुछ भी हो पर लगता है कि वो हिन्दी भी समझता है। हाट के दो दिन पहले से वह खूब मेहनत करने लगता है और बात को सफलतापूर्वक टलवा देता है। घर वाले अंदर ही अंदर चिंतित हैं, माना कि ईंधन की बड़ी समस्या है पर कंडे-उपले से बैल का खर्चा नहीं निकल सकता है। मुंह आगे कोई बोलता नहीं है परंतु सच बात ये है कि बैल को पोसने में खुद मैं दुबला होता जा रहा हूँ।

सिर्फ निकालते रहने से तो कुबेर का खजाना भी खाली होने लगता है। उधर मीडिया में किसी ने कह दिया कि गरीबी एक मानसिक अवस्था है। यानी अगर आदमी को लगे कि उसकी आमदनी से खर्चा ज्यादा है और हाथ लगातार खाली हो रहे हैं तो वह गरीब है। चिंता चिता समान होती ही है। उनकी सेहत सेंसेक्स के साथ गिर रही थी कि एक संशोधित बयान और आ गया कि गरीबी का कारण बीमारी है।

यानी जो बीमार हैं वो गरीब हैं। या यों कह लीजिए कि जो चिंतित हैं वो गरीब हैं। सरकारी बैल के कारण मैं चिंतित और बीमार हूँ, और मेरे कारण सारा गांव चिंतित यानी बीमार है।

वाजपेय यज्ञ का पुण्य देने वाला व्रत

कामिका एकादशी पर उपवास से गौ दान जितना पुण्य और दीपदान करने से पितरों को मिलता है अमृत

कामिका एकादशी 13 जुलाई, गुरुवार को है। ये वार और तिथि दोनों ही भगवान विष्णु को समर्पित है, इसलिए इस दिन की गई भगवान विष्णु की पूजा और व्रत-उपवास का शुभ फल और बढ़ जाएगा।

सावन महीने के दौरान आने वाली कामिका एकादशी पर शंख, चक्र और गदाधारी भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। भीष्म पितामह ने नारदजी को इस एकादशी का महत्व बताया है। उन्होंने कहा कि जो मनुष्य इस एकादशी को धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, उन्हें गंगा स्नान के फल से भी उत्तम फल की प्राप्ति होती है।

इस एकादशी की कथा सुनने से ही वाजपेय यज्ञ का फल मिल जाता है। भीष्म कहते हैं कि सूर्य और चंद्रग्रहण के वक्त स्नान करने से जितना पुण्य मिलता है। उतना ही महापुण्य सावन महीने में आने वाली कामिका एकादशी पर व्रत और भगवान विष्णु की पूजा करने से मिल जाता है। इस दिन तुलसी पत्र से भगवान विष्णु की पूजा करने का भी विधान बताया गया है।

उपवास से मिलता है गौ दान का पुण्य

पितामह ने बताया कि पूरे साल भगवान विष्णु की पूजा न कर सकें तो कामिका एकादशी का उपवास करना चाहिए। इससे बछड़े सहित गौदान करने जितना पुण्य मिल जाता है। सावन महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी पर भगवान विष्णु की पूजा और उपवास करने से सभी देवता, नाग, किन्नर और पितरों की पूजा हो जाती है। जिससे हर तरह के रोग, शोक, दोष और पाप खत्म हो जाते हैं।

व्रत करने से मिलता है स्वर्ग

कामिका एकादशी के व्रत के बारे में खुद भगवान ने कहा है कि मनुष्यों को अध्यात्म विद्या से जो फायदा मिलता है उससे ज्यादा फल कामिका एकादशी का व्रत करने से मिल जाता है। इस दिन व्रत करने से मनुष्य को यमराज के दर्शन नहीं होते हैं। बल्कि स्वर्ग मिलता है। जिससे नरक के कष्ट नहीं भोगने पड़ते।

दीपदान का पुण्य

भीष्म ने नारदजी को बताया कि कामिका एकादशी की रात में जागरण और दीप-दान करने से जो पुण्य मिलता है। उसको लिखने में चित्रगुप्त भी असमर्थ हैं। एकादशी भगवान विष्णु के सामने घी या तिल के तेल का दीपक जलाना चाहिए। जो ऐसे दीपक लगाता है उसे सूर्य लोक में भी हजारों दीपकों का प्रकाश मिलता है। ऐसे लोगों के पितरों को स्वर्ग में अमृत मिलता है।

कामिका एकादशी की पूजा विधि...

1. इस तिथि पर सूर्योदय से पहले उठकर पानी में गंगाजल की कुछ बूंदे मिलाकर नहाएं। इसके बाद उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दें। फिर एकादशी व्रत, पूजा और दान का संकल्प लें। पीपल और तुलसी में जल चढ़ाकर घी का दीपक लगाएं और पेड़ की परिक्रमा करें।

2. भगवान विष्णु की पूजा करने से पहले घी का दीपक लगाएं। फिर शंख में पहले शुद्ध पानी भरकर भगवान का अभिषेक करें। फिर दूध और पंचामृत से दोबारा अभिषेक करें और बाद में शुद्ध पानी से भगवान को नहलाएं। भगवान का श्रंगार करें।

3. भगवान विष्णु को चंदन, अक्षत, गुलाब और पारिजात के फूल चढ़ाएं। मंजरी सहित तुलसी पत्र चढ़ाएं। अबीर, गुलाल और इत्र सहित पूजन

सामग्री अर्पित करें। मौसमी फल, हलवा या किसी भी मिठाई का नैवेद्य लगाकर आरती करें और प्रसाद बांटे।

सावन में आने वाली एकादशी होती है पर्व

सावन महीने में आने वाली एकादशियों को पर्व भी कहा जाता है। इस पवित्र महीने में भगवान नारायण की पूजा करने से सभी देवों, गंधर्व और सूर्य की भी पूजा हो जाती है। सावन के कृष्ण पक्ष में आने वाली इस एकादशी पर भगवान विष्णु को तुलसी पत्र चढ़ाने से जाने-अनजाने में हुए पाप खत्म हो जाते हैं। इस दिन तीर्थ स्नान और दान से कई गुना पुण्य फल मिलता है।

स्कंद पुराण में बताया गया है कि सावन महीने के कृष्ण पक्ष में आने वाली एकादशी पर व्रत, पूजा और दान से जाने-अनजाने में हुए पाप खत्म हो जाते हैं, लेकिन जानबूझकर दोबारा कोई पाप या अधर्म नहीं होगा, ऐसा संकल्प भगवान विष्णु के सामने लेने पर ही इसका फल मिलता है। ये व्रत साल की सभी एकादशियों में खास माना गया है।

यहाँ है दुनिया का पहला शिव लिंग भगवान शिव ने की थी स्थापना

दुनिया का पहला शिवलिंग मंडलेश्वर के दारुकावन में स्थित है, जो खरगोन जिला मुख्यालय से 50 किमी दूर है। वर्तमान में यह क्षेत्र श्री गुप्तेश्वर महादेव मंदिर के रूप में पहचाना जाता है। मान्यता के अनुसार हजारों साल पहले ऋषि-मुनियों के श्राप को तोड़ने के लिए भगवान शिव और माता पार्वती ने इस शिवलिंग की स्थापना की थी। हर साल सावन के महीने में बड़ी संख्या में श्रद्धालु इस मंदिर में आशीर्वाद लेने आते हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने आधिकारिक तौर पर इस मंदिर को पवित्र स्थल घोषित कर दिया है। इस स्थान पर स्थित शिवलिंग की स्थापना स्वयं भगवान भोलेनाथ और माता पार्वती ने की थी। नर्मदा पुराण, रेवाखंड और भगवत गीता में भी कहा गया है कि नर्मदा परिक्रमा के दौरान इस शिवलिंग का दर्शन और दर्शन आवश्यक होता है। मंदिर के भीतर एक नर्मदा कुंड है जो हमेशा नर्मदा नदी के पानी से भरा रहता है। इसके अतिरिक्त, शिवलिंग के पास ही माता पार्वती की एक प्रतिमा भी स्थित है। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर का नाम गुप्तेश्वर महादेव इसलिए पड़ा क्योंकि यहां शिवलिंग एक गुफा के भीतर स्थित है।

पौराणिक कथा- यह क्षेत्र पहले दारुकावन के नाम से जाना जाता था. भ्रमण के दौरान भगवान शिव और माता पार्वती यहां पहुंचे। ऋषि-मुनि जंगल में ध्यान कर रहे थे और उनकी पत्नियाँ भी वहाँ मौजूद थीं। माता पार्वती ने भगवान शंकर से ऋषियों का ध्यान भंग करने का आग्रह किया। जवाब में, भगवान शंकर ने एक बच्चे का रूप धारण किया और नग्न अवस्था में नृत्य करने लगे। ऋषियों की पत्नियाँ भगवान के नृत्य से मोहित हो गईं।

यह देखकर ऋषि-मुनियों को क्रोध आ गया और उन्होंने भगवान शंकर को श्राप दे दिया। परिणामस्वरूप, भगवान का लिंग गिर गया। ब्रह्मा और विष्णु प्रकट हुए और बताया की जिसे श्राप दिया गया था वह वास्तव में स्वयं भगवान शिव थे। हालाँकि, श्राप को पूर्ववत नहीं किया जा सका। तब ऋषियों ने भगवान को एक समाधान दिया, जिसमें बताया गया कि वह लिंग को कैसे पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

ऋषियों ने कहा कि भगवान शंकर को यहीं पर शिवलिंग के रूप में रहना होगा। जैसे-जैसे महिलाएं शिवलिंग पर जल चढ़ाएंगी और पूजा करेंगी, श्राप का प्रभाव धीरे-धीरे कम हो जाएगा। परिणामस्वरूप, भगवान शंकर और माता पार्वती ने नर्मदा से एक पत्थर प्राप्त किया और उसे यहां चिरस्थायी लिंग के रूप में स्थापित किया, जो वर्तमान में गुप्तेश्वर महादेव के रूप में पहचाना जाता है।

भगवान शिव की पुत्री की करें पूजा

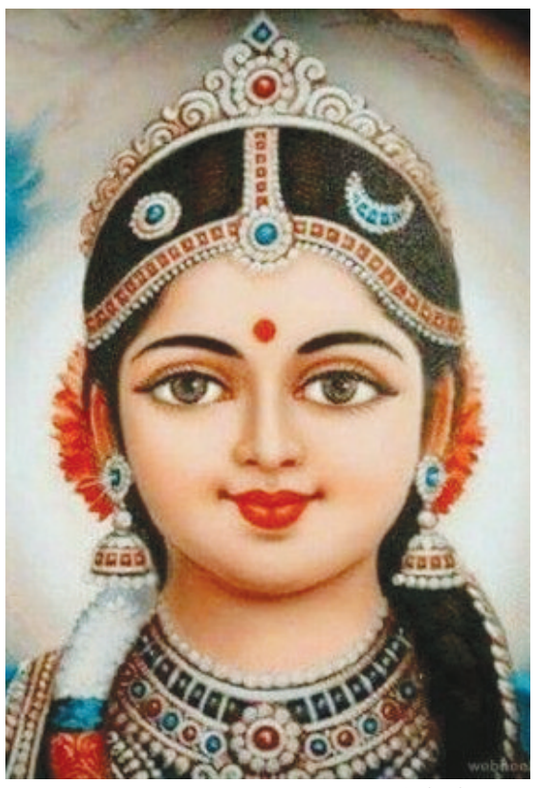

हिंदू धर्म में सावन के महीने का बहुत महत्व है और इसे एक पवित्र और शुभ अवधि माना जाता है। यह पूरा महीना भगवान भोलेनाथ को समर्पित है और महादेव को विशेष प्रिय है। कई अनुयायी केवल शिव परिवार में भगवान शिव, माता पार्वती और उनके दो पुत्रों, भगवान कार्तिकेय और भगवान गणेश से ही परिचित हैं। हालाँकि, ध्यान देने वाली बात यह है कि भगवान शिव की एक पुत्री भी थीं जिनका नाम अशोक सुंदरी था। अशोक सुंदरी की कहानी भारत के विभिन्न हिस्सों में व्यापक रूप से जानी जाती है।

पौराणिक कथाओं - पुराण के अनुसार, एक समय था जब माता पार्वती ने भगवान शिव से दुनिया का सबसे उत्तम उद्यान देखने की इच्छा व्यक्त की थी। उनकी इस इच्छा को पूरा करने के लिए भगवान भोलेनाथ उनके साथ नंदनवन गए। अपनी यात्रा के दौरान, माता पार्वती एक कल्पवृक्ष पर मोहित हो गईं, जिसके बारे में मान्यता है कि यह एक ऐसा वृक्ष है जो मनोकामनाएं पूरी करने में सक्षम है माता पार्वती अपना अकेलापन दूर करना चाहती थीं, इसीलिए उन्होंने कल्पवृक्ष से एक पुत्री की इच्छा व्यक्त की। माता पार्वती के अनुरोध को पूरा करने के लिए, कल्पवृक्ष ने अशोक सुंदरी को जन्म दिया।

शिवलिंग में अशोक सुंदरी

हम अक्सर शिवलिंग पर जल चढ़ाते हैं और जहां से जल निकलता है उस स्थान को अशोक सुंदरी के नाम से जाना जाता है।

अशोक सुंदरी की पूजा किस दिन करनी चाहिए

धार्मिक ग्रंथों के आधार पर भगवान शिव की पुत्री अशोक सुंदरी की पूजा के लिए सोमवार का दिन सबसे उपयुक्त माना गया है। इस दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करने और फिर भगवान शिव, माता पार्वती और शिवलिंग की स्थापना करने की सलाह दी जाती है। बाद में, इन देवी देवताओ के सामने एक दीपक जलाएं और प्रसाद के रूप में फूल और फल चढ़ाएं। याद रखें कि जिस शिवलिंग पर अशोक सुंदरी भी विराजमान हों, वहां फल और फूल विशेष रूप से चढ़ाएं।

महा उपाय -एक उत्तम उपाय यह है कि जिस प्रकार भगवान शिव को बेलपत्र चढ़ाया जाता है, उसी प्रकार अशोक सुंदरी को भी बेलपत्र चढ़ाया जाए। ज्योतिष शास्त्र कहता है कि धन प्राप्ति और व्यापार में सफलता के लिए अशोक सुंदरी की पूजा करना महत्वपूर्ण है। इनकी पूजा करने से व्यक्ति धन संबंधी समस्याओं से बच सकते हैं।

इस रंग की कुर्सी पर बैठें, नहीं आएगी धन की कमी

भारतीय वास्तुशास्त्र के वास्तु पुरूष सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का कार्य क्षेत्र उसका आफिस तथा वो जहां बैठकर अपना रोजगार कमाता है दक्षिण दिशा को संबंधित करते हैं। इन स्थानों पर मूलतः मंगल का निवास होता है।

काले रंग के आसन लगी हुई काली कुर्सियों का इस्तेमाल करने से व्यक्ति के कार्यक्षेत्र में दुर्भाग्यपूर्ण हादसे होते हैं।

- अगर आपके भी बैठक की कुर्सी भुरी, काली, नीली या लोहे अथवा अल्मिनियम की बनी है तो ये उपाय करके आप भी अपने रोजगार और धन के आगमन को बढ़ा सकते हैं।

- लोहे की कुर्सी पर बैठने से व्यक्ति का कारोबार मंदा पड़ता है।

- ऐल्युमिनियम की कुर्सी पर बैठने से व्यक्ति को अचानक से हानि का सामना करना पड़ता है।

- भुरे अथवा नीले रंग की कुर्सी पर बैठने से अत्यधिक हानि अथवा लाभ की संभावनाएं बनती हैं।

- हरे रंग की कुर्सी पर बैठकर कार्य व्यापार करने से धन का आगमन बढ़ता है।

- लाल रंग का आसन अथवा कुशन प्रयोग करने से जल्दी प्रमोशन होता है और बिजनेस अच्छा चलता है।

- हरे रंग का आसन अथवा कुशन इस्तेमाल करने से धन का आगमन बढ़ता है और रोजगार में विस्तार होता है।

- पीले रंग का कुशन इस्तेमाल करने से रोजगार से बाधाएं दूर होती हैं।

- सफेद रंग की कुशन इस्तेमाल करने से कार्य स्थल से समस्याएं खत्म होती हैं।

क्या तुलसी का पौधा उपहार में देना चाहिए? गिफ्ट करने का सही दिन और नियम

कुछ ऐसे पेड़ पौधे हैं जिन्हें हिंदू धर्म में बेहद पवित्र माना जाता है। इन्हीं में से एक है तुलसी का पौधा। हिंदू धर्म में मान्यता है कि तुलसी के पौधे में माता लक्ष्मी का वास होता है। इसलिए तुलसी को घर में लगाते समय विशेष सावधानी और सही दिशा की जानकारी होना बहुत जरूरी है। मान्यताओं के अनुसार जिस घर में तुलसी का पौधा लगा होता है। वहां हमेशा सुख और समृद्धि बनी रहती है। तुलसी के पौधे को लगाने के लिए सबसे अच्छी दिशा उत्तर पूर्व मानी जाती है। इसके अलावा तुलसी के पौधे की पूजा के भी कुछ विशेष नियम हैं लेकिन सवाल उठता है कि क्या तुलसी के पौधे को किसी को उपहार में देना सही है या नहीं? भोपाल निवासी ज्योतिषी एवं वास्तु विशेषज्ञ पंडित हितेंद्र कुमार शर्मा बता रहे हैं कि तुलसी का पौधा किसी को उपहार में दिया जा सकता है या नहीं? तुलसी का पौधा उपहार में देना ठीक है या नहीं ?

वास्तु शास्त्र की मानें तो तुलसी का पौधा किसी व्यक्ति को उपहार में देना बहुत शुभ होता है। तुलसी को हिंदू धर्म में पवित्र माना गया है। इसको घर में लगाने से घर में समृद्धि आती है। यह पौधा घर की नकारात्मकता को नष्ट करता है और सकारात्मकता को बढ़ाता है। यदि किसी व्यक्ति को उपहार देते हैं। तो इसका सम्मान करें। विज्ञान भी मानता है कि तुलसी का पौधा घर में लगाने से घर का वातावरण शुद्ध और सकारात्मकता बढ़ाता है।

उपहार में किस दिन दें तुलसी का पौधा

तुलसी का पौधा उपहार में किसी को देना शुभ होता है, लेकिन इसे उपहार में देते समय दिन का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए और यह ध्यान रखें कि जब आप किसी को पौधा उपहार में दे रहे हैं तो यह बिल्कुल स्वस्थ हो और पाने वाला व्यक्ति इसकी अच्छी तरह से देखभाल करें। इसके अलावा तुलसी के पौधे को रविवार या एकादशी के दिन उपहार में दे सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र में कुछ ऐसे दिन बताए गए हैं, जिसमें तुलसी के पौधे को स्पर्श करने की मनाही होती है। ध्यान रखें ऐसे किसी भी दिन तुलसी के पौधे को किसी दूसरे व्यक्ति को उपहार स्वरूप ना दें।

जिन लोगों को खुद की योग्यता और कार्यक्षमता पर भरोसा है, वे आगे जरूर बढ़ते हैं। अपनी योग्यता और कार्यक्षमता से ज्यादा काम हाथ में लेंगे तो दिक्कतों के साथ ही असफल होने की संभावनाएं बढ़ेंगी।

जीवन अनमोल है। गुजरा समय लौटकर नहीं आता है, इसलिए एक भी पल व्यर्थ कामों में खर्च नहीं करना चाहिए। वर्ना समय गुजरने के बाद निराश होना पड़ता है।

ऐसा सुपरस्टार जिसके नाम सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार के लिए 10 से अधिक बार नॉमिनेट हुआ

सलमान ने दी कई ब्लॉकबस्टर फिल्में... फिर भी इस मामले में रह गया सबसे पीछे

भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में फिल्मफेयर पुरस्कार सबसे सम्मानित पुरस्कारों में से एक है. 1954 में अपने पहले समारोह में केवल पांच पुरस्कारों से शुरुआत करने के बाद इवेंट के 68वें एडिशन में 29 अलग- अलग केटेगरीज में पुरस्कार दिए गए. जब यह पुरस्कार दिलीप कुमार को दिया गया था, तबसे सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार फर्स्ट एडिशन के बाद से लगातार जारी है. दिलीप कुमार के पास शाहरुख खान के साथ इस केटेगरी में सबसे ज्यादा बार पुरस्कार जीतने का एक रिकॉर्ड है.

हालांकि, एक सुपरस्टार ऐसा भी था जिसके नाम सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए 10 से अधिक बार नॉमिनेट होने का रिकॉर्ड है लेकिन वो उनमें से एक भी भी नहीं जीत सका. जी हां और वो कोई और नहीं बल्कि दबंग हीरो सलमान खान हैं जो 57 साल की उम्र तक लीड स्टार पर्दे पर राज कर रहे हैं. हालांकि, उनके साथ ऐसा कई दफा हुआ, जब उनका नाम फिल्म फेयर अवॉर्ड में नॉमिनेट किया गया लेकिन अवॉर्ड कोई दूसरा हीरो ले गया. और वे सिनेमा पर राज करने और ब्लॉकबस्टर फिल्में देने के बावजूद इस मामले में पीछे रह गए.

सलमान खान का पहला नॉमिनेशन 1989 की म्यूजिकल रोमांटिक फिल्म मैंने प्यार किया के लिए था, लेकिन जैकी श्रॉफ को उस साल क्राइम-ड्रामा परिंदा के लिए पुरस्कार मिला था. साल 1995 की एक्शन फिल्म करण अर्जुन में करण के रूप में अपनी गहन भूमिका के लिए, सलमान को रोमांटिक ड्रामा 'तेरे नाम' में उनके

को अपना दूसरा नामांकन मिला, लेकिन वो शाहरुख खान से हार गए, उसी फिल्म में अर्जुन की भूमिका निभाने के लिए नहीं, बल्कि ब्लॉकबस्टर रोमांस ड्रामा दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे के लिए बादशाह को ये अवॉर्ड मिला.

इसके बाद अगले साल 2000 में, सलमान यह पुरस्कार संजय दत्त से हार गए, जिन्होंने 'वास्तव' के लिए ब्लैक लेडी की प्रतिमा यानी फिल्म फेयर अवॉर्ड को हासिल किया, जब संजय को 'हम दिल दे चुके सनम' ईमानदार अभिनय के लिए हुई, जब ऋतिक रोशन ने 'कोई मिल गया' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार जीता. 2011 में 56वें फिल्मफेयर पुरस्कारों में, शाहरुख को 'माई नेम इज़ खान' के लिए सम्मान मिला, जब सलमान को 'दबंग' में उनके हास्यपूर्ण पुलिस अभिनय के लिए नामांकित किया गया था. अगले साल 2012 में, खान को 'बॉडीगार्ड' के लिए नामांकित किया गया था, लेकिन रणबीर कपूर से हार गए, जिन्होंने 'रॉकस्टार' के लिए पुरस्कार जीता था. 2013 में, जब खान को 'दबंग 2' के लिए नामांकित किया गया, तो रणबीर ने एक बार फिर 'बर्फी' के लिए ब्लैक लेडी का खिताब जीता. सलमान 2016 में 61वें एडिशन में अपनी सबसे सराही गई फिल्मों में से एक 'बजरंगी भाईजान' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार भी नहीं जीत सके, क्योंकि रणवीर सिंह को 'बाजीराव मस्तानी' के लिए यह सम्मान दिया गया था. खान की दसवीं हार 2017 में 62वें फिल्मफेयर अवार्ड्स में हुई जब आमिर खान ने दंगल के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार जीता.

लेकिन, सलमान खान अपने अब तक के करियर में दो फिल्मफेयर अवॉर्ड जीत चुके हैं. सबसे पहले, उन्होंने 1990 में 35वें फिल्मफेयर अवार्ड्स में सूरज बड़जात्या की फिल्म 'मैंने प्यार किया' के लिए सर्वश्रेष्ठ डेब्यू मेल का पुरस्कार जीता. नौ साल बाद 1999 में 44वें फिल्मफेयर अवार्ड्स में, खान ने करण जौहर के निर्देशन में बनी पहली रोमांटिक ड्रामा कुछ कुछ होता है के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार जीता था. 1999 में 44वें के फिल्म फेयर एडिशन में शाहरुख ने एक बार फिर सलमान से फिल्मफेयर ट्रॉफी छीन ली, जब उन्होंने 'कुछ कुछ होता है' के लिए इसे जीता और बाद में 'प्यार किया तो डरना क्या' के लिए हार गए.

सुपरस्टार की बेटी होने की भारी कीमत चुका रही हैं आयरा खान!

डिप्रेशन पर कहा- मेरी ऐसी हालत का जिम्मेदार मेरा परिवार भी है!

आमिर खान की बेटी आयरा खान ने इंडस्ट्री से दूरी बनाई हुई है लेकिन वह हमेशा सुर्खियों में रहती हैं. सोशल मीडिया पर उन्हें लाखों लोग फॉलो करते हैं और उनके पोस्ट का इंतजार करते हैं. आयरा अपने फैंस के साथ अपनी पर्सनल लाइफ से जुड़ी बातें भी शेयर करती रहती हैं.आयरा खान डिप्रेशन का शिकार हो चुकी हैं और इस मानसिक बीमारी से झूझने के बाद वह मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरुकता फैला रही हैं. स्टारकिड होने के नाते आयरा सुर्खियों में रहती हैं और ये उनकी जिंदगी को बहुत प्रभावित करता है जिससे उनकी समस्या और खराब हो जाती है.

एक इंटरव्यू में आयरा खान ने बताया डिप्रेशन का कोई एक कारण नहीं है. आपके जिन चीजों

के आस-पास पले-बढ़े होते हैं तो आपकी पर्सनालिटी वैसा ही आकार ले लेती है. ये कहना बहुत ही गलत होगा कि जिस परिवार में पली-बढ़ी हूं, उसका मेरी मानसिक स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा. आयरा ने आगे कहा- मेरे जीवन में जो कुछ भी घटित हुआ, वह हुआ है. तो हां, मेरे परिवार का हिस्सा होने के कारण मेरे मानसिक स्वास्थ्य पर 100 प्रतिशत प्रभाव पड़ा है. इस परिवार में पैदा होने के बहुत सारे फायदे हैं तो नुकसान भी है.

क्लिनिकल डिप्रेशन का हुईं शिकार

आयरा ने उस समय के बारे में भी बात की जब उन्हें पता चला था कि वह क्लिनिकल डिप्रेशन की शिकार हुई हैं. उन्होंने कहा- उनके पास उस समय इलाज के लिए फाइनेंशियल रिसोर्स थे और लोग भी थे जो उनका ध्यान रखें. डिप्रेशन और डर ने उन्हें अपंग कर दिया था. इसके चलते उन्हें इसी तरह के डर का सामना करने वाले अन्य लोगों की मदद करने के लिए 2021 में अगस्तू फाउंडेशन बनाया.

आयरा ने आगे कहा लेकिन उन्होंने डेढ़ साल तक इस फाउंडेशन को लेकर कुछ नहीं किया. ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि वह जुलाई 2022 तक डिप्रेशन में थीं. उन्होंने कहा क्लिनिकल डिप्रेशन में कुछ महीनों बाद मैं एक डिप में चली जाती थी. ये करीब 2 हफ्तों तक रहता है. उसके बाद मैं कुछ करती थी तो मुझे इससे बाहर आने में मदद मिलती थीं. बता दें आयरा अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर सुर्खियों में रहती हैं. उन्होंने कुछ समय पहले ही नुपुर शिखरे के साथ सगाई की है.

पासपोर्ट के बिना एयरपोर्ट पहुंचीं मौनी रॉय

बॉलीवुड एक्ट्रेस मौनी रॉय बुधवार सुबह मुंबई पासपोर्ट पर स्पॉट हुईं। एयरपोर्ट एंट्रेंस पर पहुंचकर मौनी को याद आया कि वो पासपोर्ट घर भूल आई हैं। इसके बाद वो काफी देर तक परेशान होती दिखीं।

सोशल मीडिया पर सामने आए एक वीडियो में मौनी ब्लू एंड व्हाइट आउटफिट में एयरपोर्ट पर नजर आईं। वो एंट्रेंस गेट पर वेट करती दिखीं। जब चेंकिंग पर उनका पासपोर्ट मांगा गया तो उन्होंने उसे अपने पर्स में ढूंढना शुरू कर दिया। काफी देर तक पर्स में पासपोर्ट ढूंढने के बाद वो पीछे पलटीं और पैपराजी को देखकर बोलीं- 'हो गया पासपोर्ट भूल गई..।' इसके बाद भी मौनी काफी देर तक अपने पर्स में पासपोर्ट ढूंढती रहीं। बाद में वो किसी से कॉल पर बात करती नजर आईं। वहीं सोशल मीडिया पर इस वीडियो के वायरल होने के बाद यूजर्स ने मौनी को ट्रोल करना शुरू कर दिया। एक यूजर ने लिखा, 'पैपराजी को फोन करने के चक्कर में पासपोर्ट भूल गई होगी।' वहीं एक अन्य ने कमेंट किया, 'कितना क्या क्या याद रखे बेचारी... मेकअप, हेयरड्रेस, बैग या फिर पार्सपोर्ट और इम्पॉर्टेंट पेपर्स'। मौनी इन दिनों अपनी अगली फिल्म 'द वर्जिन ट्री' की शूटिंग कर रही हैं। हाल ही में वो रियलिटी शो 'डांस बांग्ला डांस 12' में जज बनी नजर आईं थीं। पिछले साल रिलीज हुई रणबीर कपूर और आलिया भट्ट स्टारर 'बह्मास्त्र' में मौनी विलेन के रोल में दिखी थीं।

फिल्मों से ब्रेक ले सकते हैं थलापति विजय

पॉलिटिकल एंट्री से पहले तमिलनाडु की पदयात्रा का प्लान

साउथ के सुपरस्टार थलापति विजय ने हाल ही में विजय मक्कल इयक्कम के मेंबर्स ने मुलाकात की है। इसके साथ उनके पॉलिटिकल डेब्यू की चर्चा शुरू हो गई है। अब सुनने में आ रहा है कि विजय अपनी पॉलिटिकल एंट्री से पहले पूरे तमिलनाडु की पदयात्रा करेंगे। इतना ही नहीं खबरें तो यहां तक हैं कि अपनी पॉलिटिकल एंट्री के बाद विजय फिल्म इंडस्टी से ब्रेक भी ले सकते हैं।

'लियो' की रिलीज से पहले करेंगे पदयात्रा

विजय की अगली फिल्म 'लियो' है जो इस साल 19 अक्टूबर को

रिलीज होनी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक विजय 'लियो' की रिलीज से पहले तमिलनाडु की पदयात्रा पर जाएंगे। हालांकि, इस मामले पर अभी तक कोई ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं हुई है।

जून से लग रहे हैं कयास

इससे पहले जून में भी विजय ने तमिलनाडु के सभी 234 निर्वाचन क्षेत्रों से 10वीं और 12वीं कक्षा के टॉपर्स को सुविधा प्रदान की थी। इसी के बाद से उनके पॉलिटिकल डेब्यू के कयास लगाए जा रहे हैं।

'लियो' के बाद एक अनटाइटल्ड फिल्म भी है

वर्क फ्रंट की बात करें तो विजय इन दिनों 'लियो' की शूटिंग कर रहे हैं। फिल्म में विजय के अलावा संजय दत्त और तृषा भी होंगे। वो शाहरुख खान स्टारर 'जवान' में भी कैमियो रोल में होंगे। इसके बाद वे नवंबर में डायरेक्टर वेंकट प्रभु की अनटाइटल्ड फिल्म पर जुटेंगे। इस प्रोजेक्ट के बाद वो फुल टाइम पॉलिटिक्स में उतर सकते हैं।

तीन साल का ब्रेक भी ले सकते हैं

कुछ रिपोर्ट्स में यह भी कहा गया है कि विजय अपने पॉलिटिकल करियर के लिए फिल्मों से 3 साल का ब्रेक भी ले सकते हैं। इससे पहले इंडिया टुडे की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि विजय 2024 में अपनी पॉलिटिकल पार्टी बना सकते हैं और 2026 के चुनाव में हिस्सा भी ले सकते हैं।

तमन्ना ने इस मामले में शाहरुख खान को दिया पछाड़, हासिल किया टॉप स्थान

तमन्ना भाटिया इन दिनों कई वजहों से सुर्खियों में छाई हुई हैं. वे इन दिनों जहां एक ओर विजय वर्मा के साथ रिलेशनशिप को लेकर चर्चा में हैं तो वहीं अपकमिंग फिल्म पैन-इंडिया जेलर को लेकर भी साइमलाइट ले रही हैं. हाल ही में अभिनेत्री का उनकी तमिल फिल्म जेलर का नया गाना फुट-टैपिंग नंबर रिलीज हुआ है. तमन्ना के लेटेस्ट रिलीज जेल के गाने में वे सुपरस्टार रजनीकांत के साथ परफोर्म करते देखी जा सकती हैं. म्यूजिक वीडियो की मोहक धुनों और अभिनेत्री के हुक स्टेप के लोग दिवाने हो गए हैं जिस पर कई रील्स बन रहे हैं. इसी बीच तमन्ना ने एक नई उपलब्धि हासिल की है और इंडस्ट्री के कई स्टार्स को पछाड़ दिया है.

तमन्ना ने हाल ही में आईएमबीडी की लोकप्रिय भारतीय सेलिब्रिटी सूची में शीर्ष स्थान हासिल किया है. साउथ अभिनेत्री ने 'बॉलीवुड के किंग' शाहरुख खान को पछाड़ दिया है, जो सूची में दूसरे नंबर पर हैं.

तमन्ना ने सूची में टॉप स्थान हासिल करने के लिए मृणाल ठाकुर, कियारा आडवाणी, राम चरण, रणवीर सिंह और थलापति विजय सहित अन्य को भी पीछे छोड़ दिया है. एक अभिनेत्री के रूप में उनकी बहुमुखी प्रतिभा तमन्ना को अलग करती है.

तमन्ना ने फिल्मों में अलग-अलग तरह के किरदारों को सहजता से निभाया है और अपनी एक अहम पहचान बनाई है. अभिनेत्री ने विभिन्न फिल्म उद्योगों और भाषाओं के बीच भी सहजता से बदलाव किया है, जो उनकी अभूतपूर्व अभिनय क्षमता का प्रमाण है. जैसे-जैसे तमन्ना अपनी यात्रा पर आगे बढ़ रही हैं, उनके पाइपलाइन में कई परियोजनाएं जैसे मलयालम में 'बांद्रा', तमिल में 'जेलर' और 'अरनमनई 4' और तेलुगु में 'भोला शंकर' शामिल हैं. आजकल तमन्ना कुछ बुरी वजहों से भी सुर्खियों में बनी हुई हैं.

दरअसल, हाल ही में वे वेब सीरीज जी करदा और लस्ट स्टोरीज 2 में दिखी थीं. इन दोनों ही वेब स्टोरीज में उन्होंने जबरदस्त बोल्ड सीन्स दिए हैं और इस बात से उनके फैंस भी खफा है. अभिनेत्री को जबरदस्त ट्रोल भी किया जा रहा है

और उनकी तुलना सनी लियोनी से हो रही है.

मयंक मधुर बोले- कंगना को 24 घंटे में सुरक्षा दिलाई : राजनाथ सिंह से मीटिंग फिक्स कराई; शूटिंग के लिए परमिशन दिलाई..बदले में मिला धोखा

कंगना रनोट के पॉलिटिकल एडवाइजर और बीजेपी नेता मयंक मधुर ने फिल्म 'तेजस' के मेकर्स के खिलाफ शिकंजा कस लिया है। मयंक ने कहा कि कंगना और तेजस के मेकर्स ने उनके साथ धोखा किया है। वो अब जल्द ही इनके खिलाफ कोर्ट जाएंगे।

मयंक का कहना है कि उन्होंने कंगना के लिए तमाम राजनेताओं से मीटिंग फिक्स कराई। उन्हें एक दिन में Y श्रेणी की सुरक्षा दिला दी। यहां तक कि कंगना का फेमस लाइन- 'आज मेरा घर टूटा है, कल तेरा घमंड टूटेगा' भी मयंक ने ही लिखा है। कंगना ने ये बात BMC द्वारा उनकी ऑफिस तोड़े जाने के बाद उद्धव ठाकरे के लिए कही थी।

मयंक ने कहा कि उन्हें तेजस के डायरेक्टर सर्वेश मेवाड़ा की तरफ से फिल्म में 15 मिनट का रोल देने की बात की गई थी। हालांकि बाद में उस रोल को एक से दो मिनट का कर दिया गया। मयंक के मुताबिक, कंगना ने भी उन्हें फिल्म में बड़ा रोल दिलाने का वादा किया था, लेकिन वो अपनी बात से मुकर गईं।

मयंक मधुर ने कहा- मैं कंगना से तब मिला था जब वो थिएटर करती थीं। मैं उस वक्त देशबंधु में पत्रकार हुआ करता था। मैंने 156 से ज्यादा केंद्रीय मंत्री, विधायक और राज्यपालों के लिए भाषण लिखे हैं। वो सोशल मीडिया पर क्या पोस्ट करेंगे, ये भी मैं ही तय करता था।

इसके अलावा मैंने कविता और शायरियां भी लिखी हैं। जब कंगना का ऑफिस गिराया गया तो मैंने ही वो लीजेंड्री डायलॉग, 'आज मेरा घर टूटा है, कल तेरा घमंड टूटेगा' लिखा था। उन्होंने इसे सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था। मैंने ही

उन्हें 24 घंटे में Y श्रेणी की सुरक्षा दिलाई थी।

मयंक ने आगे कहा- कंगना पिछले दो साल से तेजस की शूटिंग के लिए परमिशन मांग रही थीं। हालांकि, उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी। मैंने एक दिन में परमिशन दिला दी। राजनाथ सिंह के साथ उनकी मीटिंग 10 मिनट के लिए रखी गई थी, लेकिन ये मीटिंग 2 घंटे तक सिर्फ मेरी वजह से चली थी। मैंने राजनाथ जी से कहा कि, अपनी ही बच्ची है, इनकी हेल्प कर दीजिए। मैंने राजनाथ सिंह जी से ये भी अनुरोध किया कि वे खुद आकर फिल्म तेजस का मुहूर्त कर दें। हालांकि, वे बिजी होने की वजह से नहीं आ पाए।

इसके बाद कंगना ने मुझसे कहा कि आप लखनऊ, मुरादाबाद और दिल्ली में शूट करने की परमिशन दिला दीजिए। इसी बीच कंगना ये भी दिलासा देती रहीं कि मेरे हिस्से वाला शूट जल्द ही शुरू करा देंगी। हालांकि, मेकर्स ने मेरा रोल 15 मिनट से एक-दो मिनट का कर दिया। मैंने उनसे कह दिया कि एक-दो मिनट का रोल करने के लिए मैं इंटरेस्टेड नहीं हूं।

कंगना ने कहा मेरी फीस दिला देंगी, अब उन्होंने चुप्पी साधी

मयंक के मुताबिक कंगना ने उनसे कहा था कि फिल्म के रिलीज होने से पहले वे उनकी फीस दिला देंगी। हालांकि, उन्होंने इस पर भी अब चुप्पी साध ली है। इसलिए मैंने फैसला किया कि इन सभी के खिलाफ कोर्ट जाऊंगा। इनके खिलाफ एक्शन कैसे लेना है, इसके लिए पूर्व चीफ जस्टिस से राय भी ली है।

हालांकि, अभी मैं मीडिया को ये नहीं बताऊंगा कि केस कब और किस कोर्ट में करूंगा। मैं चाहता हूं कि फिल्म के मेकर्स सलाखों के पीछे जाएं। इन लोगों की गिरफ्तारी कैसे होगी, इसके लिए कई मुख्यमंत्रियों, PMO और होम मिनिस्ट्री से बात कर ली है।

लेदर जैकेट में स्टाइलिश दिखीं रवीना टंडन की बेटी राशा

रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी जल्द ही बॉलीवुड डेब्यू करने जा रही हैं। हाल ही में उन्हें मुंबई के एक सैलून के बाहर स्पॉट किया गया, जिसका एक वीडियो सामने आया है। वीडियो में राशा काफी स्टाइलिश लुक में दिखाई दीं। इस वीडियो में राशा ब्लैक एंड व्हाइट कलर के आउटफिट में बेहद खूबसूरत लग रही हैं। उन्होंने व्हाइट टीशर्ट के साथ ब्लैक लेदर जैकेट और मैचिंग पैंट पहनी हुई है। राशा ने पैपराजी को स्माइल करते हुए पोज भी दिए।

फैंस तारा सुतारिया से कर रहे तुलना

वीडियो सामने आते ही फैंस राशा की तुलना एक्ट्रेस तारा सुतारिया से कर रहे हैं। वीडियो पर एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा, 'राशा हूबहू तारा की सेम टू सेम फोटो कॉपी लगती हैं'। दूसरे यूजर ने राशा की तारीफ करते हुए लिखा, 'वह बहुत सुंदर हैं और एक अभिनेत्री बनने की हकदार हैं'। तो वही तीसरे ने लिखा, 'ये तारा सुतारिया जैसे लगती है अगर किसी ने नोटिस किया हो तो'। राशा थडानी ने हाल ही में मुंबई के धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल से अपना ग्रेजुएशन पूरा किया है। ग्रेजुएशन पूरा होते ही राशा अजय देवगन के भतीजे अमन देवगन के साथ बॉलीवुड में डेब्यू कर रही हैं। निर्देशक अभिषेक कपूर इस नई जोड़ी को लॉन्च करने वाले हैं।

हैकर्स की नजर हमेशा हम पर रहती है इसलिए इंटरनेट पर कुछ भी पोस्ट करने से पहले सोच लें

हम सोशल मीडिया पर अपनी कई तस्वीरें और वीडियो पोस्ट करते हैं। कभी घर में खींची हुई सेल्फी, कभी दोस्तों के साथ कैफे वाली फोटो और कभी घूमने-फिरने की तस्वीरें। परंतु कहते हैं न कि सोशल मीडिया पर तस्वीर हमेशा सोच-समझकर डालनी चाहिए। सिर्फ़ इसलिए नहीं कि इन तस्वीरों का ग़लत इस्तेमाल हो सकता है, बल्कि इसलिए कि इनमें मौजूद छोटी-छोटी जानकारियां आपका बड़ा नुक़सान कर सकती हैं। इन जानकारियों की बदौलत हैकर्स आप पर और आपके खाते पर नज़र रख सकते हैं। यहां हम उन्हीं जानकारियों की बात करेंगे जिसका अंदाज़ा आपने पहले कभी नहीं लगाया होगा।

इसे उदाहरण से समझते हैं...

आपने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट किया जिसमें आपकी दोस्त या साथी आपका पूरा नाम ले रही है। सोशल मीडिया पर कई लोग रोचक नाम चुनकर यूज़र आईडी बनाते हैं इसलिए असली नाम का अंदाज़ा लगाना मुश्किल होता है। परंतु साथी ने जब आपको पुकारा तो आपने हैकर को अपने सही नाम की पुष्टि कर दी।

हैकर आपकी प्रोफाइल पर जाएगा और सारी तस्वीरें और वीडियो देखेगा। एक तस्वीर आपने अपने ग्रैजुएशन की भी डाली है जिसमें आप अपना सर्टिफिकेट लेकर खड़ी हैं। यहां से हैकर टीसी नंबर निकाल सकता है जिससे आपकी अन्य जानकारी भी मिल जाएगी।

घर के बाहर ली गई सेल्फी घर का पता उजागर कर सकती है।

दोस्तों के साथ फोटो खींचते समय यदि ग़लती से भी आपका एटीएम कार्ड या कोई दस्तावेज़ उसमें आते हैं तो हैकर इसे चुरा सकता है। कार्ड नंबर पता चल सकता है। जन्मदिन की तस्वीरें जिनमें केक में उम्र की संख्या वाली मोमबत्ती है, हाथ में अंकों के गुब्बारे पकड़े हुए आपकी तस्वीर है, हैकर को आपकी आयु का पता देगी। तस्वीर किस दिन पोस्ट की गई है उससे जन्म तिथि निकाली जा सकती है।

अब आपका नाम, एटीएम कार्ड का नंबर, जन्म तिथि, घर का पता आदि सब हैकर के पास है।

सुरक्षा का ध्यान रखें

अपनी प्रोफाइल पब्लिक न रखते हुए प्राइवेट रखें ताकि कोई अनजान व्यक्ति पोस्ट न देख पाए। क्योंकि अगर यह पब्लिक होगी तो आपके दोस्त के द्वारा तस्वीर को लाइक और कमेंट करने पर ये उससे जुड़े लोगों तक पहुंच जाएगी। इसलिए इसे निजी रखने की कोशिश करें।

केवल उन्हीं की फ्रैंड रिक्वेस्ट स्वीकार करें जिन्हें आप जानते हैं, क्योंकि ठग आपको फॉलो करके आप पर नज़र रख सकता है।

अगर आपको तस्वीरें और वीडियो डालने का शौक़ है, बिज़नेस प्रोफाइल या सोशल मीडिया ब्लॉग है तो ऐसी सामग्री डालने से बचें जिससे आपको नुक़सान पहुंच सकता है।

निजी ज़िंदगी से जुड़े कोई भी पल साझा करने से बचें।

पहले जांच लें कि...

सोशल मीडिया या मैसेंजर पर, कुछ भी पोस्ट करने से पहले उसे अच्छी तरह से जांच लें। आपने अपनी कोई तस्वीर खींची है तो उसके आसपास मौजूद वस्तुओं को एक बार देख लें। कहीं आपके पीछे, बगल या फिर टेबल पर कोई ऐसी वस्तु तो मौजूद नहीं जिसमें ज़रूरी जानकारी नज़र आए, जैसे दस्तावेज़, घर का पता या तस्वीर आदि। यहां तक कि घर के अंदर भी तस्वीर लेने से पहले देख लें कि आसपास अलमारी, तिजोरी या सोने-चांदी की मूर्ति या तस्वीर जैसी क़ीमती वस्तुएं तो इसमें नज़र नहीं आ रहीं, क्योंकि इससे अपराधी को आपकी आर्थिक स्थिति के बारे में पता चल जाएगा और आपके बारे में अधिक से अधिक जानकारी बटोर सकेगा।

सीमित रखें जानकारी

तस्वीर और वीडियो इस तरह पोस्ट करें कि उसमें अधिक जानकारी न हो। उदाहरण के लिए, तस्वीर कहां ली है उस जगह का नाम नहीं लिखें। कई बार लोग लोकेशन डाल देते हैं। कहां जा रहे हैं और कैसे जा रहे हैं, सब कैप्शन में लिखते हैं। ऐसा करके आप ख़ुद को जोखिम में डालते हैं। यह ख़ासतौर पर उन लोगों के लिए ख़तरनाक साबित हो सकता है जो अकेले सफ़र करते हैं। इसलिए इनके अलावा सोशल मीडिया पर लाइव होने से भी बचें।

आपकी खर्च करने या बचत करने की आदत से बच्चे सीखते हैं, इसलिए अपने धन प्रबंधन पर नजर डालें

हमारे पारिवारिक मूल्यों का निबाह जैसे होता है, नई पीढ़ी उसे ही देखती और सीखती है। ख़ुद को अभिव्यक्त करना, समस्याओं को हल करना, ग़लतियों से आगे बढ़ना और कौशल व क्षमताएं अर्जित करना आदि देखकर ही सीखे जाते हैं। वित्तीय प्रबंधन इन्हीं महत्वपूर्ण सीखों में से एक है। बड़े जिस तरह पैसों के साथ पेश आते हैं, बच्चे उसी को दोहराते हैं। उस समय वित्त से जुड़े फैसले जो हम करते हैं, हमें सही लगते हैं, लेकिन जब बच्चे भी वही दोहराते हैं तो हम उन्हें ग़लत ठहराने लगते हैं।

बच्चों में वित्तीय समझ विकसित करने से पहले एक बार ख़ुद से पूछें कि आप जिस तरह से पैसे ख़र्च कर रहे हैं और उनका इस्तेमाल कर रहे हैं, वह कितना सही है? आप वित्तीय रूप से कितने जागरूक हैं, पहले इस पर ग़ौर करें।

बजट बनाकर स्थिर नहीं रहना

महीने का बजट आप बनाते हैं, लेकिन बाज़ार में या ई-कॉमर्स वेबसाइट पर कोई वस्तु पसंद आती है तो आप बिना कुछ सोचे-समझे ख़रीद लेते हैं। बजट की अहमियत पसंद के आगे कितनी है, यह बच्चा सीख लेता है। उसे लगता है कि अगर कोई चीज़ पसंद आ रही है तो उसे कभी भी ख़रीद सकते हैं। गाहे-बगाहे घर में कुरियर से पार्सल आते हैं, तो समझ में आ जाता है कि बिना हिसाब-किताब के घर चलाया जा सकता है। क्या करें... पूरे महीने का बजट बनाने से पहले कुल कमाई में से बचत की रक़म निकाल लें। उसके बाद बची हुई रक़म में 60-40 का गणित रखें, जिसमें 60 ख़र्च करने के बाद 40 को आपात ख़र्चों के लिए रखें।

इच्छाओं पर पैसे उड़ाना

हर महीने नए-नए कपड़े और जूते-सैंडल ख़रीदते हैं। अगर कोई परिधान ढीला हो गया है या कस रहा है तो उसे ठीक न करवाते हुए नया ख़रीद लेते हैं। अगर कहीं से ख़राब हो गया है तो उसे सुधरवाने के बजाय नया ख़रीद लेते हैं। जब यही समस्या बच्चे को होती है तो अभिभावक उसे सुधारकर पहनने की सलाह देते हैं। परंतु बच्चा तो आपको देख ही रहा है। नतीजतन कई बार बच्चे इस तरह जवाब देते हैं कि- आप तो इतनी साड़ियां ख़रीदती हो, मुझे क्यों नए नहीं दिला सकतीं? उसके लिए ये अनावश्यक ख़र्च नहीं है बल्कि सीख है कि किसी वस्तु के ख़राब होने पर उसे फेंककर नया ख़रीदा जाता है। क्या करें... कपड़े आदि के ख़र्च के मामले में संयम बरतें। जब नए परिधान को मन ललचाए, तो उसे ख़रीदने के बजाय, उसके मूल्य को एक पर्स में रख दें। ग़ैरज़रूरी शॉपिंग को रोकना ही कई बार बहुत पैसा बचा देता है।

जितना चाहा उतना ख़र्च किया

जब आप कोई ख़रीदारी करते हैं और सीधा डेबिट या क्रेडिट कार्ड से भुगतान करते हैं तो एहसास नहीं होता कि हम कितना ख़र्च कर रहे हैं। यह ख़रीदारी को तब तक सीमित नहीं करता जब तक कि खाते में पैसे ख़त्म न हो जाएं या क्रेडिट सीमा समाप्त न हो जाए। ये देखकर बच्चों को लगता है कि हम जब चाहे, जो चाहे ख़रीद सकते हैं।

क्या करें... ख़रीदारी के लिए नक़द का इस्तेमाल करें।

बचत कम और ख़र्च अधिक करना

कुछ लोग अपनी हैसियत या आवश्यकता से अधिक ख़र्च करते हैं। वे उन उपकरणों या निजी गैजेट्स को अक्सर बदलते रहते हैं। आवेगपूर्ण ख़र्च करने की उनकी आदतों के कारण वे ख़ुद को रोक नहीं पाते। इस चक्कर में कई बार महीने का ही नहीं, महीनों का बजट बिगड़ जाता है।

क्या करें... उन चीज़ों पर भी ख़र्च करने से बचें जिन पर आप दोबारा ख़र्च नहीं कर सकते, जैसे लाखों के टीवी, मोबाइल, मंहगी कार को आप दोबारा नहीं ख़रीद सकते, तो उन्हें न ख़रीदें। आप जितना फिर से चुका सकते हैं उसके अनुसार ही ख़रीदें। याद रखें, गैजेट्स कालजयी नहीं होते हैं।

छोटे-छोटे कामों पर व्यय

यह बूंद-बूंद बचाने का उपाय है। ऐसे बहुत से छोटे-छोटे काम हैं जिन्हें आप स्वयं कर सकते हैं लेकिन उनके लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। अगर आपके पास ख़ुद कर लेने का समय है, तो आप सहायकों की संख्या कम कर सकते हैं।

क्यों ज़रूरी है वित्तीय संभाल?

धन अर्जन की मेहनत बच्चे नहीं समझते। ख़र्च के हिसाब की समझ भी उन्हें नहीं होती। वे केवल यह देखते हैं कि घर में सामान कब, कितना और कैसा आ रहा है। पैसा जीवन का अहम हिस्सा है। हर छोटी से लेकर बड़ी ज़रूरत के लिए इसकी आवश्यकता होती है। यदि हम इसे आज बचाएंगे और बढ़ाएंगे तो आने वाले कल में हमें वित्तीय समस्याओं से जूझना नहीं पड़ेगा। ख़र्चों का बजट, पैसों की बचत और निवेश, वित्तीय समझ का हिस्सा है। जब यह समझ आपके अंदर होगी तो आपको देखते हुए बच्चों में भी यह सोच विकसित हो जाएगी।

वक़्त है इन आदतों को अपनाने का

महीने का बजट बनाएं और उन पैसों को पहले ही अलग कर लें। अगर कोई वस्तु बजट के अंदर नहीं है तो उसे नहीं ख़रीदें। बजट बनाते समय बच्चों को भी इसमें शामिल करें। बजट क्यों और कैसे बनाया जाता है, वे सीख सकेंगे। ख़र्चों से जुड़े नियम बच्चों पर भी लागू होंगे।

हमेशा पर्स में खुल्ले पैसे लेकर चलें ताकि अगर किसी दुकानदार या ऑटो चालक के पास एक-दो रुपये न हों तो आप उसे दे सकें। पर्स में कुछ सिक्के और दस-बीस रुपये के नोट हमेशा रखें। अगर कम क़ीमत का सामान ख़रीद रहे हैं तो खुल्ले पैसे इस्तेमाल करें।

बच्चों पर मां की मौजूदगी का असर ताउम्र रहता है

हर चीज में मदद करने वाली मांओं के बच्चे ज्यादा बुद्धिमान होते हैं

इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकते कि बच्चे के जीवन में मां की भूमिका अहम होती है। नैपी बदलने से लेकर खेलों में उत्साह बढ़ाने तक मां बेहतर तरीके से मल्टीटास्किंग होती हैं। पर क्या आप जानते हैं कि उनका समर्थन बच्चों के लिए मौजूद रहने से कहीं ज्यादा होता है।

मां जब छोटी-छोटी चीजों में बच्चों का ज्यादा सहयोग करती हैं, तो बच्चों का सामान्य बुद्धि स्कोर भी ज्यादा होता है। भले ही मां की बुद्धिमत्ता का स्कोर कम हो, तो भी बच्चों पर इसका असर नहीं पड़ता। यह प्रभाव बच्चे पर ताउम्र बना रहता है। यह दावा जर्नल इंटेलिजेंस में प्रकाशित ताजा स्टडी में किया गया है।

14 माह से 10 साल तक के बच्चों पर हुई स्टडी

शोधकर्ताओं ने 1,075 बच्चों को स्टडी में शामिल किया था। इनमें अलग-अलग और जातीय पृष्ठभूमि के लड़के और लड़कियां शामिल थे। नतीजों से पता चलता है कि सहायक मां होने का सीधा असर बच्चे की बुद्धि पर पड़ता है। जब माताओं ने अपने बच्चों के प्रति अधिक समर्थन दिखाया, तो बच्चे सामान्य बुद्धि होने पर भी ज्यादा अंक हासिल करने लगे।

स्टडी के लेखक और शोधकर्ता कर्टिस डंकल कहते हैं,'जीवन की शुरुआत में सामान्य बुद्धि में व्यक्तिगत अंतर काफी हद तक एक ही घर में रहने वाले लोगों द्वारा साझा किए गए वातावरण के कारण होता है। जबकि वयस्क होने पर बड़े पैमाने पर मतभेद, आनुवंशिकी की वजह से होते हैं।'

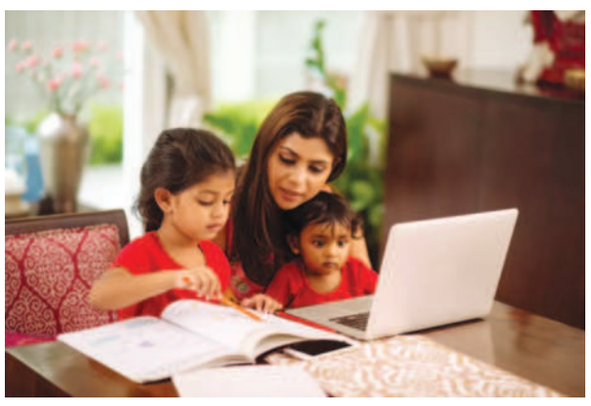

स्टडी के दौरान बच्चों (14 माह से 10 साल वाले) की बौद्धिक क्षमता का मूल्यांकन शब्दावली बनाने और उसकी समझ, प्रारंभिक इशारों व मानसिक विकास परीक्षणों की मदद से किया गया।

40 साल की उम्र में सामान्य बुद्धि के लिए मां का समर्थन मायने नहीं रखता

डंकल कहते हैं, कुछ स्टडी बताती है कि बच्चों पर यह प्रभाव वयस्कता की शुरुआत होने तक ज्यादा रहता है। यह उम्र का अहम पड़ाव है, जब बौद्धिक प्रदर्शन में थोड़ी बढ़त भी महत्वपूर्ण हो सकती है। जैसे प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी या कॉलेज में प्रवेश की यही उम्र होती है। हालांकि 40 साल की उम्र में सामान्य बुद्धि के लिए मां का समर्थन मायने नहीं रखता, पर यह किसी व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण हो सकता है। मां के सहयोग को बढ़ावा देकर, माता-पिता संभावित रूप से बच्चों की दीर्घकालिक बौद्धिक बेहतरी में अहम योगदान दे सकते हैं।

जो बच्चे माता-पिता से ज्यादा जुड़े रहते हैं, उन्हें सहयोग भी भरपूर मिलता है

डंकल कहते हैं,'मां का सहयोग भले ही कम समय का हो, पर महत्वपूर्ण है। लंबी अवधि में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मां कितनी सहायक थीं। स्टडी के दौरान यह भी पता चला कि जो बच्चे अपनी सोच को प्रोत्साहित करने के लिए अपने माता-पिता की कोशिशों में ज्यादा रुचि रखते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं, उन्हें अपनी माताओं से अधिक प्रोत्साहन मिल सकता है।

यह सामान्य बुद्धि स्कोर को ऊंचा करने में अहम योगदान दे सकता है। उम्र बढ़ने के साथ भले ही मां का सहयोग कम होता है पर इसने समग्र प्रभाव को खत्म नहीं होने दिया।

बारिश के मौसम में बिस्किट-कुकीज हो जाते हैं नम, फॉलो करें सिंपल ट्रिक्स

एयर टाइट कंटेनर का इस्तेमाल करें: ज्यादातर घरों में बिस्किट और कुकीज़ को स्टोर करने के लिए, प्लास्टिक के डब्बों या फिर एल्युमिनियम के कंटेनर का इस्तेमाल किया जाता है. ऐसे में नमी की वजह से ये सॉफ्ट हो जाते हैं और इनका कुरकुरापन ख़त्म हो जाता है. साथ ही इनका स्वाद भी बेकार हो जाता है, जिससे ये खाने के लायक नहीं रहते हैं. ऐसे में बिस्किट और कुकीज़ को स्टोर करने के लिए एयर टाइट कंटेनर का इस्तेमाल करना बेहतर होता है. इससे ये लम्बे समय तक क्रिस्पी रहते हैं. टिश्यू पेपर का यूज करें: बरसात के मौसम में बिस्किट या कुकीज़ को क्रिस्पी बनाए रखने के लिए आप टिश्यू पेपर की मदद भी ले सकते हैं. इसके लिए बिस्किट या कुकीज़ को कंटेनर में रखने के लिए पहले इसके अंदर टिश्यू पेपर की दो-तीन लेयर बिछा लें. इसके बाद बिस्किट या कुकीज़ को इसमें रखकर ऊपर से भी टिश्यू पेपर की कुछ परतें लगा कर इनको कवर कर दें. इसके बाद ही कंटेनर का ढक्कन टाइट करके इनको स्टोर करें. इससे ये लम्बे समय तक क्रिस्पी रहते हैं. ज़िप पाउच आएगा काम: कुकीज़ और बिस्किट्स को स्टोर करने के लिए ज़िप पाउच का इस्तेमाल भी आप कर सकते हैं. इसके लिए आप बिस्किट्स और कुकीज़ को हवा के संपर्क में आने से रोक सकते हैं. ज़िप पाउच में रखने से ये नम नहीं होते हैं और इनका स्वाद भी बेकार नहीं होता है. अगर जिप पाउच उपलब्ध नहीं है तो आप बिस्किट्स और कुकीज़ को क्रिस्पी बनाये रखने के लिए प्लास्टिक के नार्मल पाउच का इस्तेमाल भी कर सकते हैं. कांच के कंटेनर में स्टोर करें: कुकीज़ और बिस्किट्स को सीलने से बचाने के लिए कांच के कंटेनर का इस्तेमाल भी किया जा सकता है. कांच के कंटेनर में रखने से न तो इनका कुरकुरापन कम होता है और न ही इनका स्वाद ही ख़राब होता है. इसलिए बारिश के इस सीजन में बिस्किट्स और कुकीज़ को कांच के कंटेनर में स्टोर करना बेस्ट होगा.

इम्युन रेजीलेंस की वजह से बार-बार बीमार पड़ते हैं लोग

इस सिस्टम के कमजोर होने से शरीर बीमारियों से लड़ नहीं पाता

देर-सबेर बीमारी हम सबका दरवाजा खटखटाती है, लेकिन कुछ लोगों पर इसका असर नहीं दिखता, कुछ ऐसे भी होते हैं, जो अक्सर बीमार पड़ते-रहते हैं। पहली बार इसकी सटीक वजहों का पता चला है। नेचर में प्रकाशित स्टडी के मुताबिक इसके लिए हमारे शरीर में मौजूद 'प्रतिरक्षा लचीलापन' सिस्टम जिम्मेदार है।

यह शरीर की प्रतिरक्षा गतिविधियों को बहाल करने, सूजन/जख्म को नियंत्रित करने की क्षमता, संक्रमण या अन्य बीमारियों को प्रभावित कर सकता है। जिन लोगों में यह सिस्टम मजबूत होता है, उनमें रोगों से लड़ने की क्षमता अधिक होती है। यह लंबे जीवन के लिए सबसे अहम फैक्टर है।

स्टडी के मुख्य शोधकर्ता और टेक्सास यूनिवर्सिटी में मेडिसिन के प्रोफेसर कहते हैं- इस खोज से दिल की बीमारी, संक्रमण, कैंसर जैसे रोगों की रोकथाम के लिए नए कारगर इलाज तलाशने में मदद मिलेगी। शोधकर्ताओं ने सभी उम्र के 50 हजार लोगों के ब्लड सैंपल को एनालाइज करके

ये रिजल्ट निकाला है।

अनुशासन : नियमित व्यायाम से ही इस सिस्टम को और प्रभावी बना सकते हैं

डॉ.बताते हैं कि मुझे खुशी होती है जब मैं अब भी बुजुर्ग दिग्गजों को मास्क में देखता हूं क्योंकि वे मूल सिद्धांत को समझते हैं कि उनका प्रतिरक्षा सिस्टम कमजोर है। यह सिस्टम आनुवंशिक है। अच्छे भोजन और नियमित व्यायाम से इसे और प्रभावी बना सकते हैं। मध्यम आयु वर्ग के समूह को छह महीने कसरत कराई और फिर दो हफ्ते के लिए प्रैक्टिस रोक दी।

व्यायाम करते वक्त और न करने के दौरान लिए गए ब्लड सैंपल के विश्लेषण से पता चलता है कि जब लोग लगातार व्यायाम करते हैं, तो मृत्यु दर और दीर्घायु से जुड़े मापदंड़ों में सुधार होता है। जैसे ही व्यायाम बंद करते हैं तो दोबारा प्वाइंट जीरो पर पहुंच जाते हैं। यानी व्यक्तिगत अनुशासन बेहद अहम है।

'प्रतिरक्षा लचीलापन': ये सिस्टम ही तय करता है शरीर बीमारी से कैसे निपटेगा

ज्यादा बीमार पड़ने के 3 फैक्टर हो सकते हैं। पहला आनुवंशिक संवेदनशीलता, दूसरा माहौल (पर्यावरण या गंदगी) और तीसरा किसी इनफ्लेमेटरी स्ट्रेस (सूजन या जख्म) पर शरीर किस तरह प्रतिक्रिया देता है। जब शरीर चोट या किसी संक्रमण पर प्रतिक्रिया देता है तो 'सूजन का विस्फोट' होता है।

जख्मी या संक्रमित जगह सूज जाती है, लाल हो जाती है। इसे फैलने से रोकने के लिए सफेद रक्त कोशिकाओं की जरूरत होती है। कीमोकाइन्स प्रक्रिया श्वेत रक्त कोशिकाओं को आकर्षित करती हैं। स्टडी बताती है कि मजबूत 'प्रतिरक्षा लचीलापन' सिस्टम वाले लोग संक्रमित होते हैं फिर भी बीमार नहीं पड़ते हैं।

मातृत्वशक्ति : महिलाओं में पुरुषों से ज्यादा मजबूत यह सिस्टम, यही लंबी उम्र का राज

हम लोगों को 4 समूहों में बांट सकते हैं। जिनमें उच्च प्रतिरक्षा लचीलापन व संक्रमण जोखिम कम होता है, वे दीर्घायु होते हैं। कम प्रतिरक्षा क्षमता व उच्च संक्रमण वाले लोग दुर्भाग्य से कम जीते हैं। जिनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा और संक्रमण का जोखिम उच्च है, उनका जीवनकाल मध्यम होता है।

चौथा ऐसा वर्ग है जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम व संक्रमण का जोखिम कम होता है। ऐसे लोग भी मध्यम जीवन जीते हैं। महिलाओं में यह क्षमता पुरुषों से अधिक मिली। मातृ और भ्रूण के स्वास्थ्य के लिए प्रतिरक्षा क्षमता के महत्व को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रतिरक्षा संबंधी गुण इनमें अधिक प्रमुखता से विकसित हुए होंगे। यही लंबी उम्र का राज है।

विविधता से परिपूर्ण उल्लेखनीय कृति

निबंध हिन्दी साहित्य की आधुनिक गद्य विधा है। भाषा की दृष्टि से निबंध गद्य साहित्य का सबसे अधिक परिपक्व रूप है। अन्य गद्य रूपों में भाषा केवल साधन न रहकर साध्य का एक अंग बन जाती है। किंतु निबंध में वह पूर्णरुपेन साधन ही बनी रहती है। वैयक्तिकता निबंध का सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण गुण है। साहित्य की अन्य विधाओं की ही भांति निबंध में भी रसात्मकता का होना अनिवार्य है। यही निबंध को साधारण लेख से भिन्न और श्रेष्ठ रूप प्रदान करती है। इसी रसात्मकता से परिपूर्ण है सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ अहिल्या मिश्र द्वारा रचित निबंध। इसको पुष्टी इनकी सब प्रकाशित निबंध कृति मील का पत्थर के निबंधों को पढकर की जा सकती है। कुल 227 पृष्ठीय इस निबंध कृति में 21 निबंध संग्रहीत है। डॉ. मिश्र ने स्वयं इन 21 निबंधों को तीन खंडों में वर्गीकृत किया है - विवरणात्मक, विचारात्मक एवं विश्लेषणात्मक। पुस्तक को 5 खंडों में प्रस्तुत किया गया है।

लेखिका डा. मिश्रा ने अपनी अभिप्रेरण प्रस्तावना में इन निबंधों के लेखन को पृष्ठभूमि को स्पष्ट कर दिया है। निबंधकार के शब्दों

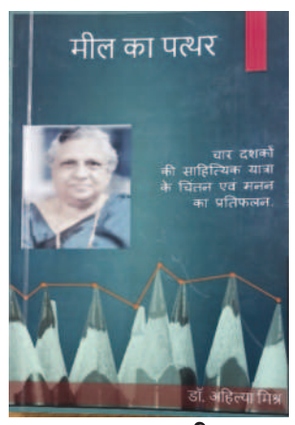

पुस्तक समीक्षा

में -निबंध लेखन किसी कपोल कल्पनावश नहीं की गई है। पूर्व में इसमें से कई निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशीत एवं चर्चित भी हो चुके हैं। कुछ ऐसे निबंध है जो साहित्यिक चेतना से ओतप्रोत हैं जिन्हें तात्कालिक विषयों के प्रबोधन एवं सोच की परिकल्प स्वरूप लिखे गए हैं। कुछ निबंध प्रवत्र के रुप में तैयार किए गए हैं। यही इन लेखों के विस्तार से आगे चलकर निबंध बन पाए हैं। लेखिका ने प्रत्येक खंड से पूर्व अपनी प्रेरणास्पद काव्य पक्तियों को प्रस्तुत किया है। यह एक नई परिपाटी है।

द्वितीय खंड के निबंध विचारात्मक शैली के हैं। इनसे भारतीय साहित्य और संस्कृति, प्रचीन भारत में वैज्ञानिक चिंतन, भारतीय भाषाओं में बोली की भूमिका, नागरीलिपी का संपर्कलिपी के रूप में उपयोग और जनसंचार माध्यमों का बढता वर्चस्व जेसे विषयों पर मौलिक चिंतन प्रस्तुत किया गया है। नागरीलिपी परिषद के महामंत्री और नागरी संगम पत्रिका के संपादक के रूप में डॉ अहिल्या मिश्रा से नागरीलिपी का संपर्कलिपी के रूप में उपयोग निबंध से विशेष रूप से प्रभावित किया है। नागरी लिपी के पक्ष में निबंधकार ने जिन तथ्यों और साक्ष्यों को प्रकाशित किया है वे अनुकरणीय व प्रशंसनीय है। इस कृति का खंड तृतीय विशेष रुप से साहित्यिक विमर्श को समर्पित है। इस खंड के निबंधों में काव्य में राष्ट्रीय चेतना शमशेर के काव्य में प्रगतिवादी चेतना 21वीं सदी में व्यंग्य, और कविता में भारतीय नारी की अस्मिता, नई कविता के उपक्रम, कविता में यथार्थ एवं सामाजिक चेतना, कविता के पक्ष में एक विवेचन और महिला लेखन की चुनौतियां और संभावना जैसे विषयों का प्रतिवादन किया गया है।यद्यपि इस खंड के अंतिम निबंध को प्रथम खंड का हिस्सा बनाया जाता तो अधिक समाचीन रहता क्योकि इस व्येक्तिकता का अधिक प्राचुर्य है।

चतुर्थ खंड समसामायिक विषय यथा गांधी, अंबेडकर एवं भारतीय साहित्य, वर्तमान युग में गांधी विचार धारा की आवश्यकता और गिरिमिटिया मजदूर एवं शक्कर उद्योग जैसे विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

इस कृति के अंतिम दो निंबध हैदराबाद को धरती पर राजस्थानी संस्कृति एवं होली के रंगों की ठिठोली, विशुद्ध संस्कृति परक विवरणात्मक निबंध है। इनके माध्यम से पाठकों को नई जानकारी मिलती है कि किस प्रकार देश प्रवासी भारतीय अपनी संस्कृति की अक्षुण्य रखते हैं, चाहे वे देश के किसी भी भाग में रहते हों। राजस्थानी व्यापारियों ने समस्त भारत को पूर्व से पश्चिम और पूर्वोत्तर से दक्षिण तक अपनी संस्कृति को पल्लवित और पुष्पित किया है। प्रसंगवश हमने अपनी डिब्रुगढ यात्रा में देखा कि राजस्थानी उद्योगपति ने वहां जगन्नाथपुरी को हूबहू प्रतिकृति का जगन्नाथ मंदिर स्थापित किया है।

-डॉ हरिसिंह पाल

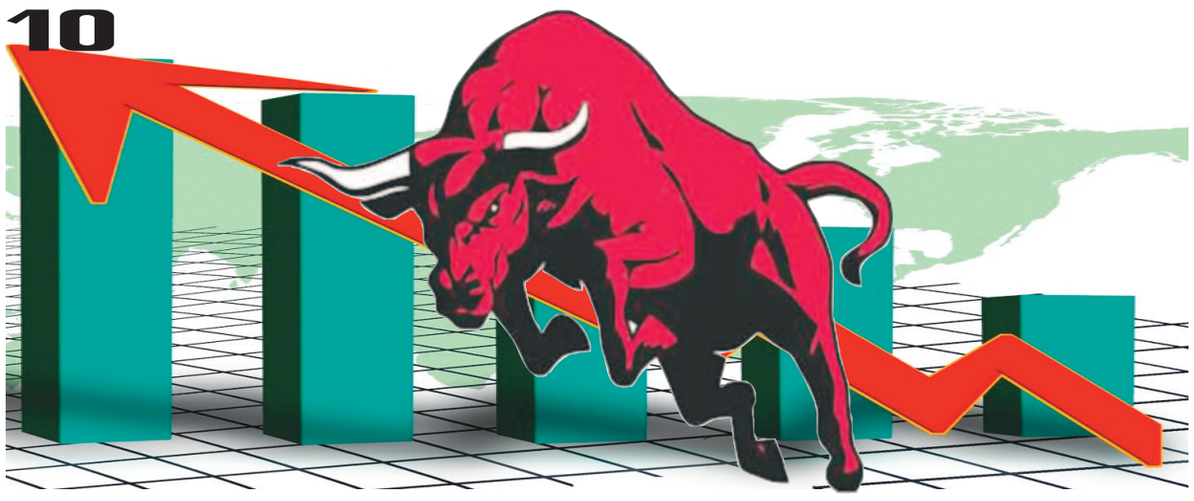

ऑनलाइन गेमिंग पर 28 फीसदी जीएसटी को देख अश्नीर ग्रोवर को आया गुस्सा, काउंसिल की कडी आलोचना

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। जीएसटी काउंसिल की 50वीं बैठक में ऑनलाइन गेमिंग पर 28 फीसदी की दर से जीएसटी लगाने का फैसला हुआ है। सरकार के इस कदम के बाद इस गेमिंग इंडस्ट्री के कई दिग्गजों ने इस फैसले के प्रति अपनी तीखी प्रतिक्रिया और अपनी अस्वीकृति दिखाई है। इसी कड़ी में भारतपे के को-फाउंडर और शार्क टैंक इंडिया के पूर्व जज अश्नीर ग्रोवर ने फैसले को लेकर नाखुशी जाहिर की है और ट्वीट के जरिए इसकी आलोचना की है.

अश्नीर ग्रोवर ने जीएसटी काउंसिल के फैसले की कड़ी आलोचना की

भारतपे के को-फाउंडर अश्नीर ग्रोवर ने ऑनलाइन गेमिंग की फुल वैल्यू पर 28 फीसदी की दर से टैक्स लगाने के जीएसटी काउंसिल के फैसले की कड़ी आलोचना की है। इस दौरान वो

ये भी कह गए कि इस समय स्टार्टअप फाउंडर्स को राजनीति में सक्रिय रूप से प्रवेश करना होगा और अपने उचित रीप्रेसेंटेशन को सुनिश्चित करना होगा वर्ना सरकार अन्य उद्योगों के साथ भी ऐसा ही करेगी।

अश्नीर ग्रोवर ने अपने ट्वीट में क्या लिखा

अश्नीर ग्रोवर ने अपने ट्वीट में लिखा कि- RIP- भारत में रियल मनी गेमिंग इंडस्ट्री के लिए। अगर सरकार सोच रही है कि लोग 72 रुपये पॉट एंट्री (28 फीसदी ग्रॉस जीएसटी) पर खेलने के लिए 100 रुपये लगाएंगे और अगर 54 रुपये जीतते हैं तो (प्लेटफॉर्म फीस के बाद) तो इसके बाद उन्हें 30 फीसदी टीडीएस भी अदा करना होगा। इसके लिए उन्हें पहले मानसून में अपने लिविंग रूम में फ्री स्विमिंग पूल मिलेगा- तो ऐसा नहीं होने जा रहा है।

इसके आगे उन्होंने लिखा कि फैंटेसी गेमिंग इंडस्ट्री का हिस्सा बनना मजेदार था, जिसकी अब हत्या हो चुकी है। इस मानसून में 10 अरब डॉलर बर्बाद हो गए हैं। अब समय आ गया है कि स्टार्टअप्स फाउंडर को राजनीति में प्रवेश करना चाहिए और अपना प्रतिनिधित्व दिखाना चाहिए, वर्ना ये उद्योग के बाद उद्योग तक जारी रहेगा।

अश्नीर ग्रोवर ऑनलाइन गेमिंग इंडस्ट्री में उतर चुके हैं

दरअसल अश्नीर ग्रोवर ने हाल ही में अपना फैंटेसी गेमिंग लॉन्च किया है जिसका नाम क्रिकपे है। इस गेम में यूजर्स को वर्चुअल टीम बनाने, फॉर्म में चल रहे बेस्ट प्लेयर्स को चुनने, कॉन्टेस्ट को जॉइन करने के अलावा अपने वास्तविक गेम परफॉरमेंस के आधार पर पॉइंट्स को हासिल करने की भी सुविधा मिलती है.

जीएसटी काउंसिल का क्या है फैसला

जीएसटी काउंसिल ने कल फैसला लिया है कि ऑनलाइन गेमिंग, कसीनो, हॉर्स रेसिंग यानी घुड़दौड़ पर 28 फीसदी जीएसटी लगाया जाएगा। इसे इनपर लगने वाले दांव के पूरे फेस वैल्यू के एंट्री पॉइंट पर लगाया जाएगा। माना जा रहा है कि इससे ऑनलाइन गेमिंग इंडस्ट्री को बड़ा धक्का पहुंचेगा जो कि साल 2027 तक 25,000 करोड़ रुपये के राजस्व को हासिल करने की उम्मीद लगाए बैठा था।

बैंक ऑफ अमेरिका पर 820 करोड़ का जुर्माना

इनाम का बोनस रोकने पर हुई कार्रवाई; सेबी ने भी लगाया अर्थदंड

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। कुछ शुल्कों में दोगुनी कटौती, इनाम का बोनस रोकने और ग्राहकों की सहमति के बिना खाता खोलने के मामले में बैंक ऑफ अमेरिका पर 10 करोड़ डॉलर से अधिक (820 करोड़ रुपये) का जुर्माना लगा है। बैंक को जुर्माने की यह रकम ग्राहकों को देनी होगी। अमेरिका के मुद्रा नियंत्रक कार्यालय (ओसीसी) ने अपनी जांच में यह भी पाया कि शुल्क में बैंक की दोगुनी कटौती अवैध थी। उपभोक्ता वित्तीय संरक्षण ब्यूरो ने मंगलवार को कहा कि बैंक ऑफ अमेरिका अपने संगठन को 9 करोड़ डॉलर और ओसीसी को 6 करोड़ डॉलर का जुर्माना देगा। 31 मार्च तक बैंक की समेकित संपत्ति 2.4 लाख करोड़ डॉलर और घरेलू जमा 1.9 लाख करोड़ डॉलर थी। हिरन ऑर्गेनिक के ग्लोबल डिपॉजिटरी रिसीट (जीडीआर) के शेयरों में हेराफेरी मामले में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने दो लोगों पर 25.20 करोड़ का जुर्माना लगाया है।

बंद हुए दो सहकारी बैंक, कई लोगों के डूबे पैसे, आरबीआई ने उठाया कडा कदम

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। सेंट्रल बैंक आरबीआई देश के बैंकिंग जगत का नियामक है। आरबीआई ग्राहकों के हितों की सुरक्षा करने के लिए विभिन्न बैंकों की कार्यप्रणाली की निगरानी करता है और कोई खामी पाए जाने पर कार्रवाई करता है। अक्सर कई बैंक विभिन्न मामलों को लेकर रिजर्व बैंक की कार्रवाई की जद में आते रहते हैं। ताजा मामले में शिकार बने हैं दो सहकारी बैंक, जिनका लाइसेंस ही रद्द कर दिया गया है।

इन दोनों बैंकों पर कार्रवाई

भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई ने मंगलवार को दो अलग-अलग बयानों में बताया कि दो सहकारी बैंकों के लाइसेंस रद्द किए गए हैं। इनमें कर्नाटक के तुमकुर स्थित श्री शारदा महिला सहकारी बैंक और महाराष्ट्र में सतारा स्थित हरिहरेश्वर बैंक शामिल है। रिजर्व बैंक का कहना है कि दोनों बैंकों के पास परिचालन जारी रखने के लिए पर्याप्त पूंजी नहीं थी। इसके अलावा दोनों बैंकों

के लिए अब कमाई की संभावनाएं नहीं बची थी। ऐसे में उनका लाइसेंस रद्द करना जरूरी हो गया था।

इतनी रकम होती है सुरक्षित

आरबीआई ने बताया कि हरिहरेश्वर सहकारी बैंक का कारोबार बंद करने का आदेश 11 जुलाई, 2023 से प्रभावी हो गया है। आपको बता दें कि बैंकों में ग्राहकों के 5 लाख रुपये तक के जमा सुरक्षित होते हैं, क्योंकि डिपॉजिट इंश्योरेंस एंड क्रेडिट गारंटी कॉरपोरेशन के पास इतनी रकम का बीमा होता है। जिनका जमा 5 लाख रुपये से ज्यादा होता है, उनका इस सीमा से ऊपर का पैसा डूब जाता है।

इतने लोगों को ही मिल पाएगा पैसा

रिजर्व बैंक के अनुसार, हरिहरेश्वर सहकारी बैंक के 99.96 फीसदी डिपॉजिटर्स को डीआईसीजीसी से उनका कुल पैसा मिल जाएगा। इस बैंक के ग्राहकों को 8 मार्च 2023 तक डीआईसीजीसी से 57.24 करोड़ रुपये मिल चुके हैं। वहीं श्री शारदा महिला सहकारी बैंक के मामले में करीब 97.82 प्रतिशत डिपॉजिटर्स को डीआईसीजीसी से पूरा पैसा वापस मिल जाएगा। डीआईसीजीसी 12 जून 2023 तक इस बैंक के ग्राहकों को 15.06 करोड़ रुपये लौटा चुका है।

इन कामों पर लग गया प्रतिबंध

रिजर्व बैंक ने कहा है कि लाइसेंस रद्द होने के बाद दोनों बैंकों को बैंकिंग से जुड़ी सभी गतिविधियों से प्रतिबंधित कर दिया गया है। ये बैंक अब ग्राहकों से किसी प्रकार का डिपॉजिट नहीं ले सकते हैं। रिजर्व बैंक ने कमिश्नर ऑफ को-ऑपरेटिव एंड रजिस्ट्रार ऑफ को-ऑपरेटिव सोयायटीज को भी संबंधित बैंकों का परिचालन बंद करने का आदेश जारी करने के लिए कहा है।

आयकर रिटर्न भरने समय क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने वाले सही आय करें घोषित, वर्ना बढ़ सकती है मुश्किलें

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। क्या वित्त वर्ष 2022-23 में आपने क्रिप्टोकरेंसी या नॉन फंजीबल टोकन जैसे वर्चुअल डिजिटल एसेट में निवेश कर मुनाफा बनाया है? तो याद रखिए आयकर रिटर्न भरने के दौरान इसी जानकारी टैक्स विभाग को देना बेहद जरुरी है। और ये जरुरी है कि वर्चुअल डिजिटल एसेट में हुए सही आय को आप घोषित करें साथ ही मुनाफे पर टैक्स का भुगतान करें। वर्ना आपकी मुश्किलें बढ़ सकती हैं। एसेसमेंट ईयर 2023-24 के लिए इनकम टैक्स विभाग ने नए आईटीआर फॉर्म 2, आईटीआर फॉर्म 3, आईटीआर फॉर्म 5, 6 और आईटीआर फॉर्म संख्या 7 में शेड्यूल वीडीए यानि वर्चुअल डिजिटल एसेट को शामिल किया है। आयकर रिटर्न भरने के दौरान क्रिप्टोकरेंसी या नॉन फंजीबल टोकन में निवेश से होने वाले मुनाफे को टैक्सपेयर्स को घोषित करना होगा। टैक्सपेयर्स याद रखें क्रिप्टोकरेंसी या फिर नॉन फंजीबल टोकन से होने वाले मुनाफे की पूरी जानकारी टैक्स विभाग के पास है। वर्चुअल डिजिटल एसेट एक्सचेंज सभी जानकारी टैक्स विभाग को उपलब्ध कराते हैं। आप इस जानकारी को आयकर रिटर्न फाइलिंग वेबसाइट के एआईएस में टैक्स इनफॉर्मेशन स्टेटमेंट में जाकर देख सकते हैं। टैक्सपेयर्स को बताना होगा कि वीडीए एसेट से होने वाले को आय को बिजनेस इनकम में दिखाना है या कैपिटल गेन के तौर पर। इस एसेट से होने वाले इनकम को रिपोर्ट करना होगा। आपके द्वारा घोषित इनकम में कोई चूक ना रह जाए इसके लिए टैक्स क्रेडिट स्टेटमेंट यानि फॉर्म 26 एएस को जरुर एक बार देख लें। इसके अलावा आयकर रिटर्न भरने के दौरान एनुअल इंफॉर्मेशन स्टेटमेंट को जरुर देख लें। 194एस के तहत टैक्स कटौती यानि टीडीएस की पूरी जानकारी उपलब्ध होती है।

भारत में 12.5-लाख तक की कारें सबसे ज्यादा बिक रहीं

5 साल में 7.5 लाख से कम कीमत वाली कारों की सेल्स 58% से घटकर 30% हुई

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। कार खरीदने का ट्रेंड बदल रहा है। पांच साल पहले देश में कारों की कुल बिक्री में 7.5 लाख रुपए से कम दाम के मॉडल की हिस्सेदारी 58% से ज्यादा थी। अब इनकी हिस्सेदारी करीब 50% घटकर 26-30% रह गई है। दूसरी तरफ 7.5-12.5 लाख की कॉम्पैक्ट और मिड साइज कारों की कुल बिक्री में हिस्सेदारी बढ़कर 42-52% हो गई है।अब 7.5-25 लाख की कारों की बिक्री 67% हो गई है। वाहन कंपनियों के संगठन सियाम और ऑटोमोबाइल विश्लेषक जैटो डायनेमिक्स के ये आंकड़े दर्शाते हैं कि 2021-22 के मुकाबले 2022-23 और चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में भी कार खरीदने को लेकर लोगों की पसंद तेजी से बदली है।

जून महीने में खाने-पीने की चीजों की कीमतों में उछाल, खुदरा महंगाई दर 4.81 फीसदी

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। चार महीने तक लगातार घटने के बाद महंगाई दर के आकड़ों ने फिर से यूटर्न ले लिया है। जून 2023 में खाद्य वस्तुओं की कीमतों में तेज उछाल के चलते खुदरा महंगाई दर में फिर से इजाफा देखने को मिला है। जून महीने में खुदरा महंगाई दर 4.81 फीसदी रहा है, जबकि मई 2023 में खुदरा महंगाई दर 4.31 फीसदी रहा था।

महंगी हुई खाने-पीने की चीजें

सांख्यिकी मंत्रालय ने जो आंकड़ा जारी किया है उसके मुताबिक खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर में भारी बढ़ोतरी देखने को मिली है। जून में खाद्य महंगाई दर बढ़कर 4.49 फीसदी पर जा पहुंची है जो मई 2023 में 2.96 फीसदी रही थी। जून 2022 में खाद्य महंगाई दर 7.75 रही थी।

महंगी हुई दाल - सब्जी

जून महीने में महंगाई दर में

बढ़ोतरी की बड़ी वजह अरहर समेत अन्य दालों की कीमतें हैं। जून में दालों की महंगाई दर 10.53 फीसदी रही है जबकि मई में 6.56 फीसदी रही थी। साग-सब्जियों की महंगाई दर जून में -0.93 फीसदी रही है जबकि मई में -8.18 फीसदी रही थी। मसालों की महंगाई बढ़कर 19.19 फीसदी रही जो मई में 17.90 फीसदी रही थी। दूध और उससे जुड़े प्रोडक्टस की कीमतें अभी भी 8.56 फीसदी पर बनी हुई है जबकि मई में 8.91 फीसदी थी। अनाज और उससे जुड़े प्रोडक्ट्स की महंगाई दर 12.71 फीसदी रही जो मई में 12.65 फीसदी रही थी। हालांकि ऑयल एंड फैट्स की महंगाई दर -18.12 फीसदी पर आ गई जो मई में -16.01 फीसदी रही थी। चीनी की महंगाई दर 3 फीसदी रही जो बीते महीने 2.51 फीसदी रही थी।

सस्ते कर्ज की उम्मीदों को झटका!

खुदरा महंगाई दर का आंकड़ा जून में 4.81 फीसदी यानि आरबीआई के टोलरेंस बैंड 2 से 6 फीसदी के बीच है। लेकिन इस वर्ष देश के कई राज्यों में तेज बारिश से खरीफ की फसल और सब्जियों के उत्पादन पर खराब असर पड़ने की आशंका जताई जा रही है। अल नीनो का खतरा है। ऐसे में महंगाई बढ़ने का खतरा बना हुआ है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास खुद कह चुके हैं कि महंगाई के खिलाफ युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ है।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	मिथुन में	मेष--	00-11 बजे
चंद्र-	वृष में	वृष--	01-56 बजे
मंगल	सिंह में	मिथुन..	03-57 बजे
बुध-	कर्क में	कर्क...	06-09 बजे
गुरु-	मेष में	सिंह...	08-21 बजे
शुक्र-	सिंह में	कन्या..	10-28 बजे
शनि-	कुंभ में	तुला...	12-33 बजे
राहु-	मेष में	वृश्चिक.	14-43 बजे
केतु-	तुला में	धनु.....	16-56 बजे
		मकर..	19-03 बजे
		कुंभ...	20-54 बजे
		मीन ..	22-32 बजे

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- 2080
शक संवत् -1945, सूर्य - दक्षिणायने ,ऋतु-वर्षा
महावीर निर्वाण संवत् -2549,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 सूर्योदय- 05-52 सूर्य अस्त- 18-50
भोग्य कलि वर्ष-426876
कलियुग संवत् -5124 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949124
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885124
दिशाशूल -- दक्षिण - जीरा खाकर घर से निकले
तिथि- एकादशी - 18 -25 तक उपरान्त द्वादशी
मास - प्र.श्रावण कृष्ण पक्ष , गुरूवार July 13
नक्षत्र - कृत्तिका - 20- 52 - तक उपरान्त रोहिणी
योग - शूल - 08 - 51 - तक उप गण्ड
करण- बव - 06 -08 - तक उप- बालव
विशेष:-
व्रत -त्योहार - एकदा एकादशी व्रत सर्वे

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 13:59 से 15:38 तक

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
शुभ	05:52 - 07:28 शुभ	अमृत	18:51 - 20:15 शुभ
रोग	07:28 - 09:06 अशुभ	चंचल	20:15 - 21:38 शुभ
उत्पात	09:06 - 10:44 अशुभ	रोग	21:38 - 22:59 अशुभ
चंचल	10:44 - 12:22 शुभ	काल	22:59 - 00:22 अशुभ
लाभ	12:22 - 13:59 शुभ	लाभ	00:22 - 01:44 शुभ
अमृत	13:59 - 15:38 शुभ	उत्पात	01:44 - 03:06 अशुभ
काल	15:38 - 17:15 अशुभ	शुभ	03:06 - 04:29 शुभ
शुभ	17:15 - 18:50 शुभ	अमृत	04:29 - 05:50 शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,)

आज आप बहुत जल्दी में हैं । आपको अपने सब कामों को निपटाने की गति जरा धीमी करनी होगी क्योंकि जल्दी मे काम निपटाने के चक्कर में आपसे गलतियाँ हो सकती हैं । इसीलिए धीमे चलें । इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आप क्या कह और कर रहें हैं । आपको अपने कार्य को संतोषजनक ढंग से पूरा करने के लिए सभी बारीकियों पर ध्यान देने की जरुरत है ।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,)

कुछ समय से अपने कार्यालय में आप काफी अच्छा काम कर रहे है और ये खूबी आज आपको अपने मालिक की नजरो में काफी ऊपर उठाएगी । पदोन्नति भी आपका इतंजार कर रही है परन्तु आपके सहकर्मियों की द्वेष एवं जलन आपका मन ख़राब कर सकती है । ये आपके लिए एक मुश्किल चुनौती की तरह है और आपको इस बात का ध्यान रखना है की ये चीज़ आपके मन और मस्तिस्क पर बुरा प्रभाव न डाले ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,)

आप इस वक़्त अलौकिक घटनाओं से प्रभावित रहेंगे । आप आज अपना दिन किसी रहस्यमयी मुद्दे की खोजबीन में बिताना चाहते हैं और कोई रहस्यमयी फिल्म या उपन्यास देख/पढ़ सकते हैं ।आप किसी रहस्य पर से पर्दा उठाने का फैसला भी ले सकते हैं या किसी स्थिति/व्यक्ति के बारे में और अधिक जानने की कोशिश करेंगे । हालांकि,आपको यह सब करते हुए सावधान रहना होगा ।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,)

कुछ वित्त और कैरियर के विभिन्न अवसर आज आपके सामने आ सकते हैं और आप उन्हें लेने के लिए अभिभूत होंगे लेकिन थोड़ा उलझन भी महसूस कर सकते हैं की किस दिशा में जाये ।सावधान रहें की ये अनिर्णय आपको पंगु न बनाये । अगर आप सही दिशा में आगे बढ़ते है , तो यह पूरी तरह से आपके वित्तीय भविष्य को बदल सकता हैं।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,)

आज आप एडजस्ट करने के मूड में रहेंगे । आपकी लोगों से मिलकर और बातचीत के जरिये किसी समझौते पर पहुचने की कोशिश से आप सबको बहुत अच्छे लगेंगे । आप तुरंत किसी भी समस्या का समाधान निकाल लेंगे । आप इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि किस तरह आपके आसपास और खुद को भी खूबसूरत बनाकर रखा जाए।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे ,पो,)

आप पुराने विचारों को छोड़कर नए विचारों को अपना रहे हैं । आज कुछ अलग ना सोचें,इसका प्रभाव औरों पर अच्छा न पड़ेगा । कोई भी काम करने से पहले ये मूल्यांकन दुबारा कर लें कि आप वास्तव में चाहते क्या हैं। घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए नया वाहन और दूसरी चीजें खरीदने हेतु समय उपयुक्त है ।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,)

आज अप्रत्याशित रूप से काफी खर्च हो सकता है । आप कोई ऐसी चीज खरीद सकते हैं जिसकी आपको जरुरत नही है लेकिन आपको अच्छी लगती है,इससे आपकी वित्तीय स्थिति काफी प्रभावित भी होगी । अपनी इस खर्च करने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें तो दिन शांति से गुजर जाएगा । आपको आज कुछ नयी वित्तीय योजनायें भी पता चलेंगी ।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,)

काफी समय से जिन्दगी एक ही ढर्रे पर चल रही है,कुछ मजेदार भी नही हो रहा । अपनी नीरस जिंदगी में कुछ साहसिक गतिविधि शामिल करें ।अपने पसंदीदा पर्यटन स्थल पर जा सकते हैं या कहीं भी बाहर घूम आयें । महत्वपूर्ण कामों को पूरा करने के लिए कुछ समय तक खुद को कुछ सामाजिक और निजी गतिविधियों से दूर कर लें ताकि एकाग्रता से काम कर पायें ।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे)

आप ऊर्जा से भरे हैं और बहुत अच्छे मूड में भी हैं । दोस्तों को पार्टी दे सकते हैं । अपनी ख़ुशी में खोकर आपका ध्यान भविष्य के खतरों से हट सकता है । घबराए नही,किसी आदमी से कोई नुक्सान होने की आशंका नही है ,केवल आपका पेट अपच वाला अधिक भोजन करने के कारण खराब हो सकता है,जिससे आपकी सेहत पर असर पड़ सकता है ।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी)

संबंधों में उलझन ,दोहरे अर्थों वाली बातचीत तथा गलतफहमियां आज पूरे दिन आप पर हावी रहेंगी । लेकिन इससे किसी नुक्सान की बजाय मनोरंजन की उम्मीद ज्यादा है । इसीलिए इनके बारे में चिंता करने की बजाय अपने मूड को हल्का फुल्का रखें और हो रही घटनायों का आनंद उठायें । यदि आप ऐसा करेंगे तो दिन बहुत खुशगवार गुजरेगा ।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,)

आपकी अपने पिछले समय में से किसी पुराने व्यक्ति से मिलने की सम्भावना है और यह व्यक्ति आपके भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा । सहायता करने और लेने में अपने पूर्वाग्रहों को आड़े ना आने दें ,इससे आपकी प्रगति के नए रास्ते खुल सकते हैं । अब कोई भी बदलाव नयी सफलता ही लाएगा ।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची)

आज ग्रहों की दशा आपको शांत तरीके से अपने बारे में सोचने का मौका देगी ।आपने पिछले समय में कई मौकों पर काफी कठोर ढंग से अपनी प्रतिक्रिया दी है लेकिन अब आप मानसिक रूप से काफी शांत स्थिति में हैं । सुलह करने और सम्बन्ध सुधरने के लिए बहुत अच्छा समय है। ख़ुशी पाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि खुद को भी और दूसरों को भी एक दूसरा मौका जरुर दें ।

पं. महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

आईफोन बनाने वाली पहली भारतीय कंपनी बनेगी टाटा, अगस्त तक खरीद सकती है विस्ट्रॉन की फैक्टरी

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। टाटा समूह जल्दी ही भारत में आईफोन बनाने वाली एपल के कारखाने का अधिग्रहण कर सकता है। टाटा इसके समझौते के करीब है। यह पहली बार होगा जब कोई भारतीय कंपनी आईफोन बनाने का काम करेगी। एपल की आपूर्तिकर्ता विस्ट्रॉन की फैक्टरी कर्नाटक में है। सौदे की कीमत करीब 60 करोड़ डॉलर हो सकती है। यहां पर 10,000 लोग काम करते हैं। विस्ट्रॉन ने चालू वित्त वर्ष में इस फैक्टरी से कम से कम 1.8 अरब डॉलर के आईफोन बनाने का लक्ष्य रखा है, ताकि उसे सरकारी प्रोत्साहन मिल सके। इस फैक्टरी से आईफोन 14 मॉडल की एसेंबलिंग होती है। अगले वर्ष तक कर्मचारियों की संख्या तीन गुना करने की भी योजना बनाई है। विस्ट्रॉन भारत में आईफोन कारोबार से बाहर निकलना चाहती है। सूत्रों के मुताबिक, विस्ट्रॉन ने एपल के कामकाज से पूरी तरह बाहर निकलने का फैसला किया है। टाटा समूह ने हाल में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादन में प्रवेश किया है। तमिलनाडु में कंपनी की फैक्टरी में आईफोन का मेटल बैकबोन बनता है।

60,000 रुपये तक पहुंचा सोने का भाव

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोना और चांदी दोनों कीमती मेटल्स तेजी के साथ कारोबार कर रही हैं. सोने के रेट ग्लोबल बाजार में तो चढ़ ही रहे हैं-घरेलू बाजार में भी ऊंचाई पर जा रहे हैं. चांदी भी आज जोरदार बढ़त के साथ कारोबार कर रही है और इसके दाम में तेजी के पीछे घरेलू इंडस्ट्रियल डिमांड को कारण माना जा सकता है.

कैसे हैं आज सोने के दाम

एमसीएक्स पर आज सोने के दाम 111 रुपये या 0.19 फीसदी की बढ़त के साथ कारोबार कर रहा है. सोना 58884 रुपये प्रति 10 ग्राम के रेट पर है और ये इसके अगस्त वायदा के दाम हैं. सोना आज नीचे में 58854 रुपये तक गया था और ऊपर में 58910 रुपये प्रति 10 ग्राम तक ऊपर था.

कहां पहुंचे चांदी के दाम

चमकीली मेटल चांदी के दाम आज 300 रुपये से ज्यादा चढ़ चुके हैं. चांदी में आज 333 रुपये या 0.47 फीसदी की उछाल देखी जा रही है और ये 71450 रुपये प्रति किलो के रेट पर कारोबार कर रही है. चांदी के ये दाम इसके सितंबर वायदा के लिए हैं. चांदी में आज नीचे की तरफ 71333 रुपये प्रति किलो और ऊपर की तरफ 71454 रुपये प्रति किलो के रेट देखे गए हैं.

रिटेल बाजार में भी सोना महंगा

रिटेल बाजार में भी सोना आज महंगा हो चुका है और चेन्नई में तो इसके दाम 60,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के पार जा चुके हैं. वहीं कई अन्य शहरों में भी इसी लेवल के पास जा रहे हैं.

देश के चार प्रमुख महानगरों में सोने के दाम

दिल्ली- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,770 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है मुंबई- सोना 210 रुपये की उछाल के

साथ 59,620 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है चेन्नई- सोना 200 रुपये की उछाल के साथ 60,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है कोलकाता- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,620 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है

देश के अन्य शहरों के भी गोल्ड रेट जानें

अहमदाबाद- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,670 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है बंगलुरू- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,620 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है चंडीगढ़- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,770 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है गाजियाबाद- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,770 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है

हैदराबाद- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,620 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है जयपुर- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,770 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है लखनऊ- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,770 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है पटना- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,670 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है पुणे- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,620 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है सूरत- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,620 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है नोएडा- सोना 210 रुपये की उछाल के साथ 59,770 रुपये प्रति 10 ग्राम पर है

दो दिनों की तेजी के बाद बाजार में लौटी मुनाफावसूली

डे हाई से 400 अंक गिरकर बंद हुआ सेंसेक्स

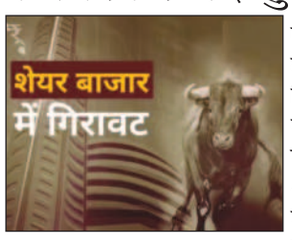

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। दो दिनों की तेजी बाद भारतीय शेयर बाजार के बुधवार के सेशन में मुनाफावसूली के चलते गिरावट के साथ बंद हुआ है। इस गिरावट के चलते सेंसेक्स अपने हाई से 400 अंक तो निफ्टी हाई से 125 अंक नीचे गिर गया। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 210 अंकों की गिरावट के साथ 65,393 अंक पर क्लोज हुआ है तो नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 56 अंकों की गिरावट के साथ 19,382 अंकों पर बंद हुआ है। आज के ट्रेड में बैंकिंग, आईटी, मेटल्स, एनर्जी और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स सेक्टर के शेयर गिरावट के साथ क्लोज हुआ है। जबकि फार्मा, एफएमसीजी, रियल एस्टेट, मीडिया हेल्थकेयर और ऑयल एंड गैस सेक्टर के शेयर तेजी के साथ बंद हुए। बाजार में गिरावट के बावजूद स्मॉल कैप और मिड कैप स्टॉक्स तेजी के साथ बंद हुए। सेंसेक्स के 30 शेयरों में 7 शेयर तेजी के साथ तो 23 गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी के 50 शेयरों में 18 शेयर तेजी के साथ तो 32 गिरकर बंद हुए। बाजार के लिए आज का दिन बेहद खास है। एचडीएफसी बैंक में एचडीएफसी के विलय के चलते एचडीएफसी के स्टॉक में ट्रेडिंग का आज आखिरी दिन था। गुरुवार को सेंसेक्स में एचडीएफसी की जगह जेएसडब्ल्यु स्टील और निफ्टी में एलटीआई माइंडट्री शामिल होगा। 45 वर्षों से एचडीएफसी में ट्रेडिंग हो रही थी। आज के ट्रेड में बाजार में गिरावट के बावजूद बीएसई मार्केट कैप में उछाल देखने को मिला है। बीएसई पर लिस्टेड शेयरों का मार्केट कैप 301.61 लाख करोड़ रुपये मार्केट कैप रहा है जबकि पिछले ट्रेडिंग सेशन में मार्केट कैप 301.31 लाख करोड़ रुपये रहा था। यानि आज के ट्रेड में निवेशकों की संपत्ति में 30,000 करोड़ रुपये का उछाल देखने को मिला है। आज के ट्रेड में 0.62 फीसदी, एशियन पेंट्स 0.48 फीसदी, सन फार्मा 0.42 फीसदी, नेस्ले 0.39 फीसदी की तेजी के साथ बंद हुआ। जबकि इंफोसिस में 1.17 फीसदी, टाटा मोटर्स 1.15 फीसदी, अल्ट्राटेक सीमेंट 1.14 फीसदी, एचडीएफसी बैंक 0.95 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ है।

चीन से मुकाबले को फ्रांस से 26 राफेल-एम खरीदेगा भारत

ये आईएनएस विक्रांत-विक्रमादित्य से उड़ेंगे, भारत के लिए यह क्यों जरूरी

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एक्सक्लूसिव डेस्क)। 'एक वक्त पर हिंद महासागर में चीन के 3-6 युद्धपोत रहते हैं। इनमें से कुछ गल्फ ऑफ ओमान के पास तैनात रहते हैं, तो कुछ महासागर के पूर्वी तरफ। यहां संघर्ष का खतरा कम है, लेकिन फिर भी हम युद्ध की आशंका से इनकार नहीं कर सकते। पाकिस्तानी नौसेना बहुत तेजी से डेवलप हो रही है और वह अपने बेड़े में लगातार नए युद्धपोत जोड़ रही है। चीन ने पिछले 10 सालों में कई जहाजों और पनडुब्बियों को शामिल किया है। इसके अलावा चीन तीसरे एयरक्राफ्ट कैरियर पर भी काम कर रहा है।'

भारत के नौसेना प्रमुख एडमिरल हरि कुमार ने 29 अप्रैल को यह बयान दिया था। दो महीने बाद 13-14 जुलाई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फ्रांस दौर पर जा रहे हैं। फ्रांस के 'बैस्टिल डे' परेड समारोह में उन्हें बतौर चीफ गेस्ट आमंत्रित किया गया है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक भारत अपनी नौसेना के लिए फ्रांस से 26 राफेल-एम यानी मैरीटाइम लड़ाकू विमान खरीदने जा रहा है। इसके साथ ही इस दौरे पर मोदी 3 स्कॉर्पीन क्लास की पनडुब्बी की डील भी कर सकते हैं। राफेल-एम लड़ाकू विमान की खासियत, ये भारत के लिए कितना अहम है और यह पहले से मौजूद राफेल से कितना अलग है? स्कॉर्पीन क्लास पनडुब्बी क्या है और फ्रांस से इस डील के क्या मायने हैं?

राफेल-एम यानी राफेल का नौसेना वर्जन। इसे एयरक्राफ्ट कैरियर्स यानी विमानवाहक पोत पर तैनात करने के हिसाब से तैयार किया गया है। अगर फ्रांस से डील पक्की होती है तो राफेल-एम लड़ाकू विमान को आईएनएस विक्रांत और आईएनएस विक्रमादित्य पर तैनात किया जाएगा। इन दोनों विमानवाहक पोत पर फिलहाल मिग-29 लड़ाकू विमान तैनात हैं।

रिपोर्ट्स के मुताबिक भारत 26 राफेल-एमखरीदेगा, इनमें 22 सिंगल सीटेड राफेल-एम के साथ चार ट्रेनर विमान शामिल हैं। इसे फ्रांस की कंपनी दसॉ एविएशन ने बनाया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के नेतृत्व में 13 जुलाई को रक्षा अधिग्रहण परिषद यानी डीएसी की बैठक होनी है। बैठक का एजेंडा 26 राफेल-एम लड़ाकू विमानों की खरीद को मंजूरी देना है।

हाल ही में नौसेना ने औपचारिक रूप से रक्षा मंत्रालय को 5 से 6 बिलियन डॉलर, यानी 41 से 49 हजार करोड़ रुपए में राफेल-एम लड़ाकू विमान खरीदने के अपने इरादे के बारे में इन्फॉर्म किया था।

राफेल-एम पहले से मौजूद राफेल लड़ाकू विमान से कितना अलग?

सितंबर 2016 में 59,000 करोड़ रुपए की मेगा डील के तहत भारत पहले ही अपनी वायुसेना के लिए फ्रांस से 36 राफेल लड़ाकू विमान खरीद चुका है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, राफेल के दोनों वैरिएंट में लगभग 85% कॉम्पोनेंट्स एक जैसे हैं। इसका मतलब है कि स्पेयर पार्ट्स से जुड़ी कभी भी कोई कमी या समस्या नहीं होगी।

सामान्य लड़ाकू विमान को एयरक्राफ्ट कैरियर के हिसाब से चेंज किया जाता है। इसकी वजह ये है कि आमतौर पर एयरपोर्ट के स्ट्रिप 3 हजार मीटर लंबे होते हैं। वहीं आईएनएस विक्रांत सिर्फ 200 मीटर में मैनेज करेगा। इसी वजह से विमानवाहक पोत पर अरेस्टेड रिकवरी सिस्टम लगे होते हैं।

जैसे आईएनएस विक्रांत पर 3 अरेस्ट वायर लगे हैं। लैंडिंग के वक्त एयरक्राफ्ट की टेल इनमें से किसी वायर पर हुक हो जाएगी। इससे वो कम दूरी पर ही रुक जाएगा। इसे टेलहुक कहते हैं। इसी तरह के फीचर से राफेल-एम भी लैस है। वहीं सामान्य राफेल में इस सिस्टम की जरूरत नहीं होती है।

आईएनएस विक्रांत के एविएशन फैसिलिटी कॉम्प्लेक्स यानी एएफसी को मिग-29 फाइटर प्लेन के लिहाज से तैयार किया गया था। मिग रूस में बने फाइटर प्लेन हैं, जो हाल के सालों में अपने क्रैश को लेकर चर्चा में रहे हैं। इसलिए भारतीय नौसेना अगले कुछ सालों में अपने बेड़े से मिग विमानों को पूरी तरह से हटाने जा रही है।

मिग में आ रही दिक्कतों से नौसेना को ये एहसास हो गया कि मिग की जगह उसे या तो राफेल-एम या एफ-18 सुपर हॉर्नेट लड़ाकू विमान लाने की जरूरत है। नौसेना ने पिछले साल कहा था कि विक्रांत को मिग-29 के लिहाज से डिजाइन किया गया था, लेकिन वह इसकी जगह बेहतर डेक-बेस्ड फाइटर प्लेन की तलाश कर रही है।

इसके लिए फ्रांस के राफेल-एम और अमेरिका के बोइंग एफ-18 'सुपर हॉर्नेट' फाइटर प्लेन की खरीद के लिए भी बातचीत चल रही है, लेकिन अब नौसेना फ्रांस के राफेल-एम को खरीदने पर सहमत हुई है।

दरअसल, नौसेना ने सबसे पहले फ्रांसीसी राफेल-एम और अमेरिकी एफ-18 सुपर हॉर्नेट विमान की गोवा में टेस्टिंग की। टेस्टिंग के बाद नौसेना ने रक्षा मंत्रालय को बताया कि राफेल-एम उसकी जरूरतों के लिए सबसे बेहतर है। इस तरह से टेस्टिंग में राफेल-एम ने बाजी मारी और नौसेना इसकी डील के लिए आगे बढ़ गई। आने वाले सालों में नौसेना की योजना तेजस लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट के नौसेना वर्जन को विक्रांत पर तैनात करने की है। तेजस देश में बन रहा ट्विन-इंजन डेक-बेस्ड फाइटर प्लेन है। हालांकि डीआरडीओ द्वारा बनाए जा रहे तेजस को तैयार होने में अभी 5-6 साल का वक्त लगेगा। इसके 2030-2032 तक नेवी को मिल पाने की संभावना है।

मोदी के दौरे पर मेक इन इंडिया के तहत मझगांव डॉकयार्ड्स लिमिटेड यानी एमडीएल में 3 और स्कॉर्पीन (कलवारी) क्लास अटैक की पनडुब्बियों को बनाने के लिए दोबारा ऑर्डर मिलने की भी उम्मीद है।

भारत ने 2005 में फ्रांस के नेवल ग्रुप से स्कॉर्पीन-क्लास सबमरीन बनाने के लिए 3.75 अरब डॉलर यानी करीब 28.6 हजार करोड़ का समझौता किया था। इन सबमरीन को पब्लिक सेक्टर की कंपनी मझगांव डॉकयार्ड्स लिमिटेड ने फ्रांस के सहयोग से देश में ही बनाया है।

रूस से हथियारों की खरीद आधी, फ्रांस से 10 गुना बढ़ी

भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार खरीदार है। वैसे तो रूस भारत का सबसे बड़ा डिफेंस पार्टनर है और भारत अपने सबसे ज्यादा हथियार रूस से खरीदता है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारत ने फ्रांस से जमकर हथियार खरीदे हैं।

स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट यानी एसआईपीआरआई की रिपोर्ट के मुताबिक, 2017-2021 के दौरान रूस के बाद फ्रांस भारत का दूसरा सबसे बड़ा हथियार सप्लायर रहा। 2016-2020 के दौरान भारत की फ्रांस से हथियारों की खरीद में 709% की बढ़ोतरी हुई।

इस रिपोर्ट के अनुसार, 2017-2021 के दौरान भारत की रूस से हथियार सप्लाई में 47% तक की गिरावट आई, जबकि इस दौरान भारत की फ्रांस से हथियार खरीद में 10 गुना बढ़ोतरी हुई।

राहुल गांधी के समर्थन में कांग्रेस का मौन सत्याग्रह

गांधी मैदान में काला मास्क लगाकर बैठे नेता सीएम भूपेश, सिंहदेव, सेलजा भी मौजूद

रायपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। मोदी सरनेम मामले में कोर्ट से राहुल गांधी को राहत नहीं मिली है, जिसके बाद इस मसले को लेकर कांग्रेस लगातार प्रदर्शन कर रही है। इसी कड़ी में आज कांग्रेस पूरे देश में मौन सत्याग्रह कर रही है। एआईसीसी ने राहुल गांधी के प्रति समर्थन और एकजुटता दिखाने के लिए ये मौन सत्याग्रह रखा है।

रायपुर के ऐतिहासिक गांधी मैदान में प्रदेश के तमाम नेता इस सत्याग्रह में शामिल हैं। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, प्रदेश प्रभारी कुमारी सेलजा, पीसीसी अध्यक्ष मोहन मरकाम समेत सत्ता और संगठन के कई बड़े चेहरे एक साथ मौन रहकर विरोध जता रहे हैं। यहां महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने सुबह 10 बजे से प्रदर्शन जारी है जो शाम 5 बजे तक होगा। प्रदेश प्रभारी सेलजा प्रदर्शन में शामिल होने के लिए सुबह की फ्लाइट से रायपुर पहुंची थीं।

गुजरात हाईकोर्ट ने मोदी सरनेम वाली टिप्पणी को लेकर आपराधिक मानहानि मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की दोषसिद्धि पर रोक लगाने का अनुरोध खारिज कर दिया है। सांसद पद गंवाने के बाद हाईकोर्ट ने भी राहुल को राहत नहीं दी है। जिसके बाद कांग्रेस कोर्ट के इस फैसले को लेकर असहमति जता रही है। 7 जुलाई को जब कोर्ट का फैसला आया तब भी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव और पीसीसी अध्यक्ष मोहन मरकाम समेत तमाम कांग्रेसी नेता सारे कार्यक्रम रद्द कर रायपुर के अंबेडकर चौक पहुंचकर धरना प्रदर्शन किया था। यहां सीएम ने कहा था कि अंग्रेज केवल महात्मा गांधी से डरते थे। बीजेपी राहुल गांधी से डर रही है। अंग्रेज और बीजेपी दोनों फूट डालो राज करो की नीति पर चल रहे हैं। बीजेपी के लोग डरे हुए हैं। सच का सामना नहीं कर सकते। राहुल गांधी सच की बात करते हैं, ईमान की बात करते हैं। अब तो लोकसभा से भी सदस्यता समाप्त हो गई है फिर भी ये डर रहे हैं।

थाने में शॉर्ट सर्किट से लगी आग

बैरक जलकर राख फायर ब्रिगेड ने पाया काबू

रांची, 12 जुलाई (एजेंसियां)। राजधानी रांची के धुर्वा स्थित थाने में आग लग गई। आग की यह घटना थाना परिसर के पीछे बने बैरक में घटी है। आग लगने से बैरक और उसमें रखे सामान जलकर राख हो गए हैं।

बैरक के सामने दरवाजे पर लगे बिजली के कनेक्शन में शॉर्ट सर्किट होने की संभावना जताई जा रही है। घटना की जानकारी मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम पहुंची। लगभग आधे घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया है।

इस बैरक में पुलिस के जवान रहते हैं। आग लगने से बैरक में रखे जवानों के सामान, बेड आदि जल गए हैं। इस घटना में किसी के हताहत होने की अब तक कोई खबर नहीं है। फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंची और अब आग पर काबू पाया जा चुका है। आग कैसे लगी, कितना नुकसान हुआ इन सब की पड़ताल की जा रही है।

छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य कर्मचारियों पर एस्मा लागू

सरकार का ऐलान हड़तालियों पर होगी कार्रवाई विरोध में हजारों संविदाकर्मी करेंगे जल सत्याग्रह

रायपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य कर्मचारियों पर एस्मा लगा दिया है। यानी हड़ताल पर गए कर्मचारियों पर अब नौकरी से निकाले जाने तक की कार्रवाई हो सकती है। पिछले दिनों प्रदेश के स्वास्थ्यकर्मियों ने हड़ताल कर दी थी। हालांकि मंत्री टीएस सिंहदेव के आश्वासन के बाद कर्मचारियों ने हड़ताल बंद की। मगर संविदा पर काम करने वाले स्वास्थ्यकर्मी अब भी काम बंद किए हुए हैं।

मंगलवार की रात सरकार ने एस्मा का आदेश जारी कर दिया। इससे नया रायपुर में आंदोलन पर बैठे संविदा कर्मचारियों का गुस्सा फूटा। कर्मचारी संगठन ने कहा कि संविदा कर्मचारियों के हड़ताल को तोड़ने के लिए सरकार ने एस्मा लागू किया है। इस आदेश के खिलाफ अब संविदाकर्मियों के संगठन के प्रदेश अध्यक्ष कौशलेश तिवारी ने आज जल सत्याग्रह करने का ऐलान किया है। ये सभी कर्मचारी नवा रायपुर के तूता में अन्य जिलों से भारी संख्या में पहुंचे संविदा कर्मचारियों के साथ जल सत्याग्रह करेंगे।

इस आदेश को लेकर प्रदेश स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के महामंत्री अश्वनी गुर्देकर ने कहा- छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्रदेश के स्वास्थ्य कर्मचारियों की हड़ताल और आंदोलनों के लिए एस्मा लगाया गया है। यह शासन का तानाशाह पूर्ण रवैया है। वैसे ही स्वास्थ्य विभाग का काम हमेशा अनिवार्य सेवा के अंतर्गत आता ही है। इसलिए एस्मा लगाया जाना उतना प्रभावशील नहीं होगा कर्मचारियों को इससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। राज्य सरकार की ओर से छत्तीसगढ़ अत्यावश्यक सेवा संधारण और विच्छिन्नता निवारण अधिनियम (एस्मा) 1979 की धारा 4 की उपधारा 1 तथा 2 में मिली शक्तियों को प्रयोग में लाते हुए छत्तीसगढ़ स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग से संबद्ध समस्त काम और स्वास्थ्य सुविधाओं की आवश्यक सेवाओं में काम करने से इनकार किए जाने को प्रतिषेध (बैन) कर दिया है। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है।

राज्य शासन के गृह विभाग की ओर से मंत्रालय से मंगलवार को जारी आदेश के अनुसार 'लोक स्वास्थ्य' (छत्तीसगढ़ स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग) से संबद्ध समस्त काम और स्वास्थ्य सुविधाओं की अत्यावश्यक सेवाओं में कार्यरत डॉक्टर, नर्स, स्वास्थ्यकर्मी, एम्बुलेंस सेवाओं में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारियों की ओर से काम करने से इनकार किए जाने को बैन कर दिया है।

आवश्यक सेवा अनुरक्षण कानून (एस्मा) हड़ताल को रोकने के लिए लगाया जाता है। इसके लागू होने के बाद अगर कोई कर्मचारी हड़ताल पर जाता है तो वह अवैध और दण्डनीय है। हड़ताल पर गए कर्मचारियों के खिलाफ सरकार नौकरी से बर्खास्त करने तक की कार्रवाई कर सकती है।

हालांकि इससे पहले भी प्रदेश में इसी तरह कई कर्मचारी संगठनों के आंदोलन में ऐसा किया गया था, मगर कोई बड़ी कार्रवाई नहीं की गई।

जेल में बंद गैंगस्टर कारोबारियों को धमका रहा, पुलिस खामोश

5 दिन में रांची में एक मर्डर समेत 4 बड़ी वारदात, पुलिसिंग पर उठ रहे सवाल

रांची, 12 जुलाई (एजेंसियां)। राजधानी रांची में महज 5 दिनों में 4 बड़ी वारदात हुई। इसमें एक कारोबारी के अकाउंटेंट की हत्या तो दूसरे कारोबारी पर जानलेवा हमला तक हुआ। दूसरी ओर जेल में बंद गैंगस्टर कारोबारी को धमका रहे हैं, लेवी मांग रहे। खौफ ऐसा कि कारोबारी सब छोड़ गांव जाने की सोच रहे हैं। इन सबके बीच राजधानी की पुलिस जांच के नाम पर सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। राजधानी में क्राइम का ये हाल तब है जब एक एसएसपी, एक सिटी एसपी, तीन डीएसपी और 16 थानों की पुलिस काम कर रही है। 5 जुलाई 2023 को राजधानी रांची के रातू रोड सुखदेव नगर थाना क्षेत्र के गैलेक्सिया मॉल के पास बिल्डर और जमीन कारोबारी रहे कमल भूषण के अकाउंटेंट संजय कुमार की हत्या सरेआम कर दी गई। घटना शाम करीब 4.30 बजे की है। संजय की हत्या घर से महज 200 मीटर दूर की गई। बाइक सवार अपराधी आए और संजय की बाइक रोकी, फिर अंधाधुंध फायरिंग कर दी। गोली संजय सिंह के सिर में लगी, जिससे उसकी मौत हो गई।

पुलिस की कार्रवाई : हत्या के बाद पुलिस ने पड़ताल शुरू की। पुलिस के मुताबिक लोकल शूटर ने हत्या की है। पुलिस ने वहां की सीसीटीवी को खंगाला लेकिन अपराधियों की पहचान नहीं हो पाई। टेक्निकल सेल की मदद से पुलिस ने शूटर तक पहुंचने का प्रयास किया। घटना स्थल से एक किमी दूर ही वे ट्रेसलेस हो गए। अपराधी किधर भागे इसकी जानकारी नहीं मिल पा रही है। पुलिस की एसआईटी आठ लोगों के पूछताछ कर रही है। अभी भी पुलिस पड़ताल ही कर रही है। कोई ठोस परिणाम सामने नहीं है।

7 जुलाई को ओल्ड अरगोड़ा चौक के पास कोयला कारोबारी रंजीत गुप्ता पर दो अपराधियों ने सरेआम गोलीबारी की। अपराधियों ने उनपर तब गोलियां बरसायीं जब वे अपनी गाड़ी से उतर कर अपने ऑफिस जा रहे थे। अपराधियों ने उनपर सामने से दो गोलियां बरसाईं। गोली उनके पेट में लगी। उन्हें आनन-फानन में इलाज के लिए रिम्स ले जाया गया। जहां से बेहतर इलाज के लिए दिल्ली ले जाया गया है। जहां निजी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। इस घटना के दूसरे दिन गैंगस्टर अमन साव गिरोह के एक गुर्गे मयंक सिंह ने इस गोलीकांड की जिम्मेदारी ली।

पुलिस की कार्रवाई : घटना को हुए पांच दिन हो चुके हैं। पुलिस के हाथ तब भी कुछ नहीं लगा है। जबकि अपराधी खुद सामने आकर घटना की जिम्मेदारी ले चुका हैं। पुलिस के मुताबिक सीसीटीवी की पड़ताल की जा रही है। अपराधियों का मनोबल इतना बढ़ा हुआ है कि जेल में बंद होकर भी वो कारोबारियों को धमका रहा है। अपराधी आगे आ कर घटना की जिम्मेदारी ले रहा है। इसके बाद भी पुलिस मौन है। ऐसा ही एक गैंगस्टर है अमन साव। दुमका जेल में बंद है।

7 जुलाई को ओल्ड अरगोड़ा चौक के पास कोयला कारोबारी रंजीत गुप्ता पर जो गोलीबारी हुई, वह इसी के निर्देश पर हुई है। इसके गैंग के सदस्य मयंक सिंह ने सामने आकर इसकी जिम्मेदारी ली है। इसके बाद भी पुलिस किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुंच सकी है। ओल्ड अरगोड़ा गोलीकांड के बाद अमन साव गैंग 14 लोगों को वाट्सएप नंबर 1 (307) 302-3558 से कॉल कर धमकी दे रहा है। ये सभी कारोबारी हैं। धमकी दिये जाने की खबर से पुलिस महकमा अनजान नहीं है, लेकिन इस गिरोह के खिलाफ अभियान चलाकर पुलिस कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर रही है।

बिंदी लगाकर स्कूल गई छात्रा को शिक्षक ने जड़े चांटे

घर आकर लगाई फांसी, शिक्षक गिरफ्तार

रांची, 12 जुलाई (एजेंसियां)। झारखंड के एक स्कूल में बिंदी लगाने के कारण युवती को जमकर पीटा गया। इससे आहत होकर युवती फांसी के फंदे पर झूल गई। मामले में प्रियांक कानूनगो ने ट्वीट कर बताया कि एनसीपीसीआर की टीम जांच के लिए धनबाद जाएगी। हालांकि, पुलिस ने आरोपी शिक्षक को गिरफ्तार कर लिया है। झारखंड पुलिस ने बताया कि घटना सोमवार की है, जो तेतुलमारी इलाके में हुई। मृतक के माता-पिता और स्थानीय लोगों ने मंगलवार को स्कूल प्रबंधन के खिलाफ प्रदर्शन किया। मामले को गर्माता देख पुलिस ने केस दर्ज कर लिया। कुछ मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, पीड़िता धनबाद के तेलतुलमारी इलाके के एक कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ती थी। छात्रा सोमवार को बिंदी लगाकर स्कूल पहुंची, जिससे शिक्षक ने गुस्से में छात्रा को थप्पड़ मार दिया। इसके बाद छात्रा फांसी के फंदे पर झूल गई। इसके बाद मंगलवार को परिजनों और ग्रामीणों ने स्कूल के गेट पर प्रदर्शन किया। परिजनों की मांग था कि शिक्षक और प्राचार्य के खिलाफ कार्रवाई की जाए। पीड़िता ने आत्महत्या से पहले एक सुसाइट नोट लिखा था, जिसमें उसने प्रिंसिपल और शिक्षक को जिम्मेदार ठहराया था।

परिजनों ने बताया कि बिटिया स्कूल गई थी लेकिन थोड़ी ही देर में वह वापस घर आ गई। उसने बताया कि बिटिया बिंदी लगाकर स्कूल गई थी। लेकिन शिक्षक को देखते ही उसने बिंदी हटा दी। लेकिन फिर भी शिक्षक ने असेंबली में सबके सामने बेटी को चांटा मार दिया। मैंने प्रिंसिपल को समझाया लेकिन फिर भी वे नहीं समझे और बेटी को निकाल दिया। इसी वजह से उसने 11 बजे फांसी लगा ली। मां का कहना है कि मैं न्याय चाहती हूं। सुसाइड नोट में जिनका नाम है, उनके खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। धनबाद के बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) के अध्यक्ष उत्तम मुखर्जी का कहना है कि पुलिस ने आरोपी शिक्षक को गिरफ्तार कर लिया है। यह एक गंभीर मसला है।

स्कूल का सीबीएसई से कोई लेना-देना नहीं है। जिला शिक्षा अधिकारी को घटना की जानकारी दी है। मैंने आज पीड़ित पक्ष से भी मुलाकात की है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) के अध्यक्ष प्रियांक कानूनगो ने कहा कि बिंदी पहनकर स्कूल आने पर शिक्षक ने जमकर छात्रा से मारपीट की।

वर्दी वाली प्रेमिका ने प्रेमी को पुलिसकर्मियों से पिटवाया

सरकारी नौकरी से पहले अफेयर, जॉब मिलने के बाद ब्रेकअप, मिलने के बहाने बुलाकर की मारपीट

बिलासपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में वर्दी वाली प्रेमिका ने पुलिसकर्मियों के साथ मिलकर अपने बॉयफ्रेंड की जमकर पिटाई करा दी। युवक का आरोप है कि युवती को सरकारी नौकरी मिलने से पहले उसके साथ अफेयर था। अब पुलिस विभाग में नौकरी मिलने के बाद युवती ने ब्रेकअप कर लिया है। अब भी युवक उसके पीछे पड़ा है। लिहाजा, उसे सबक सिखाने के लिए पुलिस वाली प्रेमिका ने उसे मिलने के बहाने बुलाया और पुलिसकर्मियों के साथ मिलकर उसकी बेरहमी से पिटाई कर दी। युवक ने इस मामले की शिकायत पुलिस से की है। पूरा मामला कोटा थाना के बेलगहना चौकी का है। मस्तूरी थाना क्षेत्र के ग्राम लावर निवासी सूरज गेंदले प्राइवेट काम करता है। उसने बताया कि मस्तूरी क्षेत्र के ही ग्राम बकरकूदा में रहने वाली युवती से उसकी जान-पहचान थी। इसके बाद पिछले चार साल से दोनों के बीच प्रेम प्रसंग चल रहा था और दोनों रिलेशनशिप में रह रहे थे। तब युवती पढ़ाई कर रही थी और गांव में रहती थी। इसी बीच उसकी सरकारी नौकरी लग गई और वह पुलिस विभाग में कॉन्स्टेबल के पद पर पोस्टिंग मिल गई। युवक का कहना है कि जब उसकी प्रेमिका को सरकारी नौकरी मिली, तब वह काफी खुश था। युवती भी खुश थी। सूरज उसे इतना चाहता था कि उसके और उसकी बहन की शॉपिंग करने के लिए पैसे देता था और ऑनलाइन सामान भी मंगाता था।

सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच भीषण मुठभेड़

सीआरपीएफ के डिप्टी कमांडेंट घायल

चाईबासा, 12 जुलाई (एजेंसियां)। झारखंड के गोईलकेरा थाना क्षेत्र में बुधवार को सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच भीषण मुठभेड़ हुई। इस दौरान सीआरपीएफ के डिप्टी कमांडेंट के घायल हो गए। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। फिलहाल उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। दरअसल,

पिछले कुछ दिनों से ही नक्सलियों के होने की सूचना पर सुरक्षाबलों द्वारा जंगलों में लगातार छापेमारी की जा रही है।

आरएसएस कार्यकर्ता की हत्या

धनबाद, 12 जुलाई (एजेंसियां)। धनबाद जिले के टुंडी में मंगलवार की देर रात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) कार्यकर्ता शंकर प्रसाद की गोली मार कर हत्या कर दी गई। अपराधियों ने उन पर सामने से छह गोलियां बरसाईं।

गोली लगने से उनकी मौके पर ही मौत हो गई। लोगों को उनकी मौत की जानकारी सुबह हुई। घटना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

कब्रिस्तान के पास मारी गई गोली

शंकर प्रसाद धनबाद जिले के पूर्वी टुंडी थाना क्षेत्र के दूमा गांव के ही रहने वाले थे। वे ग्राम रक्षा दल के सदस्य भी थे।

शंकर धनबाद जिला वनवासी कल्याण केंद्र के जिला कार्य प्रमुख भी थे।

मंगलवार की रात वे शहरपुरा जा रहे थे। रास्ते में दुमा कब्रिस्तान के पास कुछ लोगों ने उन्हें सामने से गोली मारी।

घटना पर गिरिडीह के पूर्व सांसद रवींद्र पांडेय, संघ कार्यकर्ता मोती लाल मुर्मू ने हत्यारों की अविलंब गिरफ्तारी की मांग की है।

परिवार का आरोप- शूटरों को बुला कर की गई हत्या

शंकर की हत्या पर उनके भतीजे ने बताया कि पुलिस के सहयोग करने के कारण कुछ लोगों के लिए वह किरकिरी बन चुके थे। वह समाजसेवी थे। उनका लोगों के साथ बहुत अच्छा संबंध रहा। सामाजिक कार्यों में भी वह बढ़-चढ़कर भाग लेते थे।

रूस का जंग खत्म करने का इरादा नहीं

पूर्व राष्ट्रपति बोले- नाटो की मदद से विश्व युद्ध का खतरा, यूक्रेन सरकार को हटाना जरूरी

मास्को, 12 जुलाई (एजेंसियां)। रूस के विदेश मंत्री ने कहा है कि उनका फिलहाल जंग खत्म करने का कोई इरादा नहीं है। वहीं पूर्व राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने कहा कि रूस के साथ जंग के बीच यूक्रेन को नाटो से मिल रही लगातार मदद दुनिया को तीसरे वर्ल्ड वॉर के और करीब ले जा रही है। लिथुआनिया में हो रही नाटो समिट पर मेदवेदेव ने कहा- भले ही पश्चिमी देश लगातार यूक्रेन को मिलिट्री एड पहुंचा रहे हैं, लेकिन इससे रूस को कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

रूसी मीडिया टीएएसएस के मुताबिक, मेदवेदेव ने कहा- मॉस्को यूक्रेन से उस नए नाजी ग्रुप को हटाना चाहता है जो नाटो में जुड़ने की कोशिश कर रहा है, लेकिन अब ऐसा मुमकिन नहीं लगता है। इसलिए अब यूक्रेन में सरकार को हटाना जरूरी हो गया है। पश्चिमी देश पागल हो चुके हैं इसलिए वो कुछ और नहीं सोच पा रहे। अब इसका कोई समाधान नहीं बचा है। तीसरा विश्व युद्ध करीब है।

रूस भी इस्तेमाल करेगा क्लस्टर बम

वहीं अमेरिका के यूक्रेन को क्लस्टर हथियार देने के फैसले पर पूर्व राष्ट्रपति ने कहा- यूक्रेन ने इन अमानवीय हथियारों को इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। अगर जरूरत पड़ी तो रूस भी इनके इस्तेमाल से कतराएगा नहीं। इससे पहले रूसी रक्षा मंत्री सर्गेई शोउगू ने भी मंगलवार को कहा था कि अगर अमेरिका यूक्रेन को क्लस्टर वेपन भेजेगा तो वो भी इनका इस्तेमाल शुरू कर देंगे।

रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने भी मंगलवार को कहा था कि यूक्रेन में युद्ध तब तक खत्म नहीं होगा जब तक पश्चिमी देश रूस को रणनीतिक तौर पर हराने के लिए यूक्रेन को मोहरा बनाना बंद नहीं करेंगे। अगर वो चाहते हैं कि ये जंग खत्म हो जाए, तो उन्हें रूस को हराने के ख्वाब देखने बंद करने होंगे।

वहीं अमेरिका में मौजूद रूस के एम्बेसडर एनाटोली एंटोनोव ने कहा- पश्चिमी सैन्य गुट ने रूस की सीमाओं पर सैनिकों को केंद्रित करने की योजना बनाई है। अब हमारे पास पीछे हटने का कोई ऑप्शन नहीं है।

रूस के पूर्व राष्ट्रपति मेदवेदेव को पुतिन का वफादार माना जाता

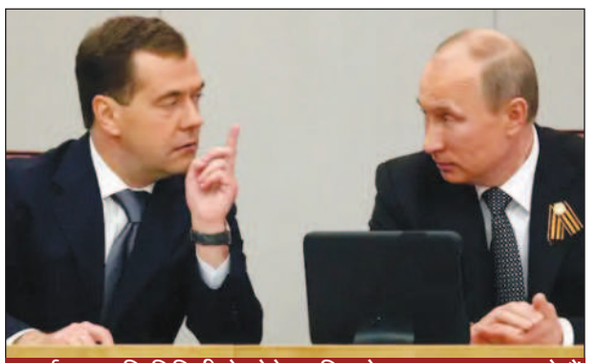

पूर्व राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव पुतिन के साथ नजर आ रहे हैं

है। वे 2008 से 2012 तक रूस के राष्ट्रपति भी रह चुके हैं। 17 मार्च को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के खिलाफ आईसीसी ने यूक्रेन में वॉर क्राइम के आरोप में अरेस्ट वारंट जारी होने के बाद मेदवेदेव ने कोर्ट को भी धमकी दी थी।

उन्होंने अपने टेलिग्राम अकाउंट पर लिखे स्टेटमेंट में आईसीसी को एक बेकार अंतरराष्ट्रीय संगठन बताते हुए वहां के जजों को मिसाइल हमले के लिए आसमान में नजर बनाए रखने की सलाह दी थी। मेदवेदेव ने कहा था- ये मुमकिन है कि नॉर्थ सी में रूसी वॉरशिप से निकली एक हाइपरसोनिक मिसाइल हेग में आईसीसी के हेडक्वार्टर पर गिरे। कोर्ट के लिए इसे रोकना नामुमकिन होगा।

रूस-यूक्रेन कर रहे क्लस्टर बम का इस्तेमाल

ह्यूमन राइट्स वॉच (एचआरडब्ल्यू) की रिपोर्ट के मुताबिक रूस और यूक्रेन दोनों ही जंग में क्लस्टर बमों का इस्तेमाल कर रहे हैं। 2022 में यूक्रेन ने रूस के कब्जे वाले इलाके में क्लस्टर बम दागे थे। इसमें 8 बेगुनाह नागरिकों की मौत हो गई थी। एचआरडब्ल्यू की अधिकारी मैरी वेयरहेम के मुताबिक जंग में क्लस्टर बम के इस्तेमाल से लोगों की जान जा रही है और सालों तक जाती रहेगी।

क्या होते हैं क्लस्टर बम

क्लस्टर बम एक ऐसा हथियार है, जिसे हवा में रिलीज करने पर कई छोटे-छोटे बम निकलते होते हैं। ये छोटे बम साधारण बमों की तुलना में ज्यादा इलाके को प्रभावित करते हैं। ये खतरनाक इसलिए माने जाते हैं क्योंकि मुख्य बम से निकलने वाले कई सारे छोटे विस्फोटक निर्धारित लक्ष्य के आसपास भी नुकसान पहुंचाते हैं। ज्यादातर मामलों में इनकी चपेट में आम नागरिक भी आते हैं। इन्हें लड़ाकू विमानों के जरिए आसमान और तोपों के जरिए जमीन से भी दागा जा सकता है।

बम के फटने के बाद आसपास गिरने वाले छोटे विस्फोटक लंबे समय तक पड़े रह सकते हैं। ऐसे में जंग खत्म हो के बाद भी इनकी चपेट में आने से जान जा सकती है। यह विरोधी सैनिकों को मारने या उनके वाहनों को नुकसान पहुंचाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

आतंकी हमले में 6 पाक सैनिक मारे गए

बलूचिस्तान में फौजी ठिकाने को निशाना बनाया, एक हफ्ते में दूसरी बार अटैक

क्वेटा, 12 जुलाई (एजेंसियां)। पाकिस्तान में एक हफ्ते में दूसरी बार फौज पर हमला हुआ और इसमें 6 सैनिक मारे गए। यह अटैक बुधवार दोपहर बलूचिस्तान के झोब इलाके में मौजूद फौजी ठिकाने पर हुआ। पांच सैनिक गंभीर रूप से घायल हैं। इन्हें एयरलिफ्ट करके पेशावर मिलिट्री हॉस्पिटल ले जाया गया है।

पाकिस्तान मिलिट्री के मीडिया विंग इंटर सर्विसेस पब्लिक रिलेशन्स (आईएसपीआर) ने हमले की पुष्टि की है। सात फरवरी को भी बलूचिस्तान में पाकिस्तानी सैनिकों पर हमला हुआ था। इसमें एक मेजर समेत 4 सैनिक मारे गए थे। तब फौज ने इसकी पुष्टि नहीं की थी। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि झोब में मौजूद फौजी ठिकाने पर हमला उस वक्त हुआ जब कुछ फौजी शिफ्ट पूरी करने के बाद आराम करने पहुंचे थे। इसी दौरान यहां आतंकियों ने फायरिंग शुरू कर दी। फौजियों ने भी जवाबी कार्रवाई की, लेकिन आतंकियों को कोई नुकसान नहीं हुआ। फायरिंग के बाद 6 सैनिकों के शव बरामद हुए। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में यह संख्या 4 बताई गई है। 5 सैनिक गंभीर रूप से घायल हुए हैं। फौज के मुताबिक- आतंकियों ने फौजी

ठिकाने के चारों तरफ बनी बाउंड्री वॉल के पीछे से फायरिंग की। इस वजह से उन्हें नुकसान नहीं हुआ। दूसरी तरफ, सभी सैनिक एक खुली जगह थे। आतंकियों के पास भारी हथियार थे। फौज ने कहा- हमले के बाद वहां एक और यूनिट को भेजा गया है। पूरा इलाका सील कर दिया गया है। यहां हर घर तलाशी भी ली जा रही है। फौज का दावा है कि तीन आतंकी मारे गए हैं, लेकिन लोकल मीडिया की रिपोर्ट्स में कहा गया है कि सभी आतंकी भागने में कामयाब रहे।

'डॉन न्यूज' की एक रिपोर्ट के मुताबिक- झोब के पुलिस कमिश्नर ने कुछ दिन पहले फौज को एक खुफिया रिपोर्ट भेजी थी। इसमें फौज को किसी हमले का अलर्ट दिया गया था। कमिश्नर अजीम काकड़ ने कहा- बुधवार के हमले में एक महिला की भी मौत हुई है। वो आतंकियों और फौज के बीच फायरिंग में फंस गई थी। पुलिस के मुताबिक- जिस वक्त फायरिंग हो रही थी, उस वक्त डेरा इस्माइल खान इलाके से एक पैसेंजर बस भी आ रही थी। यह बस भी फायरिंग की चपेट में आ गई। हम भी पुख्ता तौर पर ये नहीं कह सकते कि कुल कितने आतंकियों ने हमला किया। फौज और पुलिस की कम्बाइंड टीम इसकी जांच कर रही है।

नाटो समिट में जेलेंस्की के फोटो वायरल

अकेले नजर आए यूक्रेन के राष्ट्रपति, सोशल मीडिया यूजर्स बोले- मेले में बच्चा खो गया

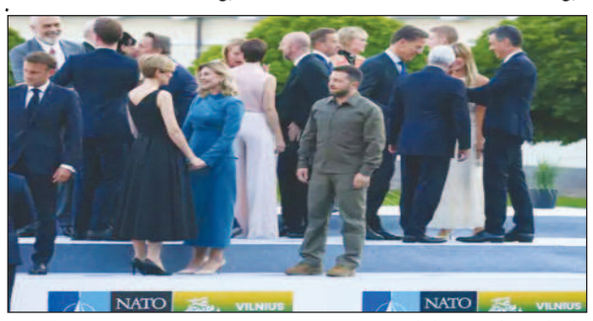

विल्निस, 12 जुलाई (एजेंसियां)। लिथुआनिया की राजधानी विल्निस में नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन (नाटो) की समिट के दूसरे दिन यूक्रेन के राष्ट्रपति वोल्दोमिर जेलेंस्की अकेले नजर आए। एक और जहां उनकी पत्नी जेलेंस्का समिट में शामिल दूसरे नेताओं की पत्नियों से बातचीत में मसरूफ दिखीं तो जेलेंस्की कुछ दूरी पर तन्हा खड़े दिखे।

बहरहाल, अब यूक्रेन के राष्ट्रपति के कुछ फोटोज सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। कुछ यूजर्स जेलेंस्की को नाटो से दूर रहने की नसीहत दे रहे हैं तो एक तबका ऐसा भी है जो जेलेंस्की पर तंज कस रहा है। एक यूजर ने कहा- इस लग रहा है जैसे कोई बच्चा मेले में खो गया है।

विल्निस में यह समिट 11 और 12 जुलाई को ऑर्गनाइज की गई। नाटो के सभी मेंबर्स ने इसमें शिरकत की। यूक्रेन भले ही नाटो मेंबर नहीं है, लेकिन रूस से उसकी जंग के चलते उसे इनवाइट किया गया। बहरहाल, अब तक जो चीजें सामने आई हैं, उनसे तो यही लगता है कि यूक्रेन के हाथ कुछ खास नहीं लगा। उसे वही मिला तो जो पिछले साल 24 फरवरी को जंग शुरू होने के बाद से मिलता रहा है और वो भी टुकड़ों में। प्रेसेडेंट जेलेंस्की समिट में पहुंचे और कई नेताओं से मिले। यूक्रेन को नाटो में शामिल करना कई वजहों से फिलहाल तो मुमकिन नजर नहीं आता और रही सही कसर कुछ दिन पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के बयान ने पूरी कर दी थी। बाइडेन ने साफ कर दिया था कि यूक्रेन को अभी नाटो में शामिल किए जाने के लिए हालात सही नहीं हैं। लिहाजा, यहां जेलेंस्की की मौजूदगी बहुत हद तक रस्म अदायगी ही कही जाएगी। बुधवार को जेलेंस्की की दो तस्वीरें ज्यादा वायरल हुईं। पहली- इसमें जेलेंस्की की पत्नी जेलेंस्का फ्रांस की फर्स्ट लेडी ब्रिगेटी मैक्रों से बतियाते नजर आईं और कुछ दूरी पर खड़े यूक्रेनी प्रेसिडेंट के चेहरे पर मायूसी और गुस्सा दिखा।

नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड की पत्नी का हृदयघात से निधन

काठमांडू, 12 जुलाई (एजेंसियां)। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' की पत्नी सीता दहल का बुधवार को 69 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे पिछले काफी समय से बीमार थीं। आधिकारिक बयान के मुताबिक, उन्हें सुबह 8 बजे हृदयघात हुआ। इसके बाद कई कोशिशों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका और 8.33 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। बताया गया है कि सीता दहल प्रोग्रेसिव सुप्रान्यूक्लियर पाल्सी से पीड़ित थीं।

इसके अलावा उन्हें पार्किंसन, डायबिटीज टाइप-2 और हाइपरटेंशन की भी शिकायत थी।

अमेरिकी राज्य वर्मोन्ट में बाढ़ की वजह से इमरजेंसी

2 दिन में हुई 2 महीने की बारिश, 41 हजार करोड़ तक के नुकसान की आशंका

वाशिंगटन, 12 जुलाई (एजेंसियां)। अमेरिकी राज्य वर्मोन्ट में तेज बारिश की वजह से बाढ़ आ गई है। इसके चलते डैम के ओवरफ्लो होने का खतरा बढ़ गया है। इमरजेंसी सर्विस ने अब तक 117 लोगों को रेस्क्यू कर लिया है। पानी के सैलाब की वजह से मंगलवार को राज्य में करीब 100 सड़कों को बंद कर दिया गया।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने वर्मोन्ट में इमरजेंसी की घोषणा कर दी है। राज्य के गवर्नर फिल स्कॉट के मुताबिक, वर्मोन्ट में पिछले 2 दिनों में इतनी बारिश हुई है, जितनी आमतौर पर 2 महीने में होती थी। रॉयटर्स के मुताबिक न्यूयॉर्क, मैसाचुसेट्स, कनेटिकट में भी पिछले कुछ दिनों में 8 इंच तक बारिश हो चुकी है।

7 दिन की बारिश सामान्य से 300-500% ज्यादा

वर्मोन्ट के अलग-अलग शहरों में लोगों को घरों में ऊपर के फ्लोर्स पर शिफ्ट होने की सलाह दी जा रही है। बाढ़ की वजह से

एक्यूवेदर कंपनी ने 3-5 अरब डॉलर (24-41 हजार करोड़) के आर्थिक नुकसान की आशंका जताई है। वेदर प्रेडिक्शन सेंटर ने सोमवार को कहा कि अमेरिका के पूर्वोत्तर के ज्यादातर हिस्सों में 7 दिनों की कुल बारिश सामान्य स्तर के 300% से 500% तक रही। वहीं नेशनल वेदर सर्विस ने शुक्रवार को दोबारा बारिश की आशंका जताई है। हालांकि, उम्मीद की जा रही है कि इस बार ये इतनी मूसलाधार नहीं होगी। दूसरी तरफ पड़ोसी देश कनाडा में भी मूसलाधार बारिश के बाद करीब 600 लोगों को घर छोड़ना पड़ा। कनाडा की क्यूबेक सिटी में पिछले 48 घंटों में 5.5 इंच बारिश हो चुकी है, जिससे नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ता जा रहा है।

पीने का पानी दूषित होने का खतरा

वर्मोन्ट के शहर मोंटपेलियर में मौसम को देखते हुए ट्रैवल पर बैन लगा दिया गया। इसके अलावा बाढ़ की वजह से पीने का पानी भी दूषित होने की आशंका जताई गई है। सीएनएन के मुताबिक, मोंटपेलियर के अधिकारियों ने बताया कि शहर में बारिश ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। सोमवार को यहां 5.28 इंच बारिश दर्ज की गई। गवर्नर स्कॉट ने बताया कि अमेरिका में इससे पहले 2011 में ऐसा मंजर देखने को मिला था, जब 2011 में आइरीन तूफान अमेरिका से टकराया था। उस वक्त आई बाढ़ में कई कम्यूनिटीज डूब गई थीं। पूर्वी राज्यों में तूफान की वजह से करीब 40 लोगों की मौत हो गई थी। वहीं साल की शुरुआत में कैलिफोर्निया में एटमॉस्फेरिक रिवर की वजह से बाढ़ आ गई थी। इसमें करीब 20 लोगों की मौत हो गई थी। दो हफ्तों में 8 एटमोस्फियरिक रिवर से 75 हजार लोगों के लिए चेतावनी जारी की गई थी।

पाकिस्तान को सऊदी अरब से मिला 2 अरब डॉलर कर्ज

11 महीने बाद फैसला, आईएमएफ से डील पर भी लगेगी मुहर

इस्लामाबाद, 12 जुलाई (एजेंसियां)। सऊदी अरब ने 11 महीने चली बातचीत के बाद आखिरकार पाकिस्तान को 2 अरब डॉलर का नया कर्ज दे दिया है। मंगलवार को इसका ऐलान फाइनेंस मिनिस्टर इशहाक डार ने किया। डार ने इसके लिए सऊदी सरकार का शुक्रिया भी अदा किया। दूसरी तरफ, बुधवार का दिन पाकिस्तान के लिए अहम होने वाला है। बुधवार को इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड यानी आईएमएफ पाकिस्तान को दिए जाने वाले 3 अरब डॉलर के लोन पर मुहर लगाएगा। इसके बोर्ड की मीटिंग होने वाली है।

डार ने क्या कहा

इशहाक डार ने मंगलवार को कहा- पाकिस्तान के विदेशी मुद्रा भंडार यानी फॉरेक्स रिजर्व में बढ़ोतरी हो रही है। सऊदी अरब ने स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान के खजाने में 2 अरब डॉलर डिपॉजिट करा दिए हैं। हमारे प्राइम मिनिस्टर शाहबाज शरीफ और आर्मी चीफ जनरल आसिम

मुनीर ने इसके लिए काफी मेहनत की थी। हमारे दोस्त पाकिस्तान की मदद के लिए साथ खड़े हैं।

आईएमएफ की शर्त

आईएमएफ ने पिछले साल ही साफ कर दिया था कि पाकिस्तान को कर्ज तभी दिया जा सकता है जब वो किसी दूसरे देश से कम से कम 2 अरब डॉलर कर्ज ले और उसे अपने फॉरेन रिजर्व में बतौर गारंटी मनी डिपॉजिट करे। शाहबाज शरीफ सरकार ने इस शर्त को पूरा करने के लिए तीन देशों से मदद मांगी। ये थे- चीन, यूएई और सऊदी अरब।

सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन सलमान (एमबीएस) ने कुछ महीने पहले शाहबाज शरीफ से वादा किया था कि वो पाकिस्तान को 2 अरब डॉलर लोन देंगे। हालांकि, शाहबाज के देश लौटने के बाद प्रिंस ने वादा पूरा नहीं किया। इसके बाद आर्मी चीफ ने सऊदी का दौरा किया और फिर मदद मांगी। इसके बाद भी सऊदी ने लोन नहीं दिया। पाकिस्तान के अखबार, 'द एक्सप्रेस ट्रिब्यून' ने पिछले महीने बताया था कि सऊदी अपने पैसे की गारंटी मांग रहा था। बहरहाल, बैक डोर डिप्लोमेसी रंग लाई और अब सऊदी अरब ने पाकिस्तान को 2 अरब डॉलर दे दिए हैं। हालांकि, इसकी शर्तें पुरानी ही रहेंगी।

खाड़ी देशों को चाहिए गारंटी

एक रिपोर्ट के मुताबिक- आईएमएफ ने गेंद पाकिस्तान के पाले में डाल दी थी। वो साफ कह रहा था कि पहले अपने सहयोगी देशों (चीन, सऊदी, यूएई और कतर) से 100% गारंटी दिलाइए, इसके बाद किश्त जारी की जाएगी। पिछले महीने शाहबाज शरीफ ने आईएमएफ चीफ से पांच मुलाकातें कीं और किसी तरह लोन हासिल करके मुल्क को दिवालिया होने से बचा लिया।

ये देश कुछ और ही सोच रखते हैं। चारों ही देश अपने पैसे की गारंटी चाहते हैं। इसके लिए उनकी शर्त थी कि पाकिस्तान सरकार पहले आईएमएफ से गारंटी दिलाए। मतलब साफ है कि दोनों ही पक्षों ने पाकिस्तान को जबरदस्त उलझा दिया था। बहरहाल, अब सऊदी मदद ने पाकिस्तान की मदद कर दी है।

चीन ने 2 अरब डॉलर का लोन रोल ओवर किया। यानी इसकी वसूली कुछ वक्त के लिए टाल दी। इसके बाद 500 मिलियन डॉलर कर्ज और भी दे दिया, लेकिन ये ऊंट के मुंह में जीरा समान है। आईएमएफ और दूसरे देशों के लिए फिक्र की एक बहुत बड़ी वजह पाकिस्तान पर चीन का कर्ज है।

चीन में सिंगल मदर्स का ट्रेंड

योग्य साथी न मिलना, जिम्मेदारियों के लिए वक्त न होना बड़ी वजह, देश में 1.95 करोड़ महिलाएं सिंगल मदर

बीजिंग, 12 जुलाई (एजेंसियां)। चीन के चांगचुंग प्रांत में रहने वाली 'गेविन ये' ने 29 साल की उम्र में फैसला किया कि वे मां बनना चाहती हैं पर शादी किए बिना। हालांकि चीन के मौजूदा कानूनों के चलते ऐसा संभव नहीं था, इसलिए उन्होंने अमेरिका और रूस जाकर आईवीएफ की मदद से दो बेटियों को जन्म दिया। पहली बच्ची 2017 में हुई थी। जबकि दूसरी हाल ही में हुई है। गेविन सोशल मीडिया पर 'ये हैयांग' नाम से चर्चित हैं। चीनी एप डॉयिन पर उनके 73 लाख फॉलोअर्स हैं।

गेविन अब 35 साल की सिंगल मदर हैं। सोशल मीडिया पर अपनी व बेटियों की दिनचर्या शेयर करती हैं। साथ ही अपनी कॉस्मेटिक कंपनी के उत्पादों के बारे में भी बताती हैं। गेविन के प्रशंसक उनके रहन-सहन और सुंदर बच्चों के अलावा सिंगल पैरेंटिंग को बढ़ावा देने के लिए उनकी तारीफ करते हैं। उन्हें मैसेज करते हैं-पुरुष की

शक्तिशाली आभा, महिला की सौम्यता, एक पिता की जिम्मेदारी और एक मां की महानता, आपके पास यह सब है।

आईवीएफ की मदद से बच्चों को जन्म दे रहीं महिलाएं

गेविन अकेली नहीं हैं, चीन में बिन ब्याही मां बनने का ये ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। कुल मिलाकर महिलाएं अब परिवार नियोजन से जुड़े फैसलों पर ज्यादा नियंत्रण और मानदंडों को दोबारा परिभाषित करने पर जोर दे रही हैं। डॉयिन पर गेविन के जैसे दर्जनों चैनल हैं, जिन पर सिंगल मदर और आईवीएफ जैसे विषयों और महिला आजादी के बारे में खुलकर बातें होती हैं।

33 साल की सिंगल जिंग कहती हैं- इन चीजों का प्रचार नहीं होता, क्योंकि यह सामाजिक मूल्यों के साथ मेल नहीं खातीं।

राज्य नरम रुख अपना रहे, बिना शादी हुए बच्चों को भी रजिस्टर कर सकेंगे

चीन में परंपरागत पारिवारिक व्यवस्था को आदर्श माना जाता है, ऐसे में कुछ लोग इस नए ट्रेंड को लेकर असहज हैं। पर घटती जनसंख्या के कारण चीन कमजोर पड़ता दिख रहा है। इसलिए इसके राज्य भी अब नरम रुख अपनाने लगे हैं। पहले सिंगल मदर बनने पर कई शहर और प्रांत महिलाओं को सजा देते थे। उन पर जुर्माना लगाते थे।

बीते साल चार प्रांतों ने शादी के बिना पैदा हुए बच्चों को रजिस्टर करने की मंजूरी दे दी है। बाकी राज्य भी इसकी तैयारी कर रहे हैं। ऑल चाइना वुमन फेडरेशन के मुताबिक देश में 1.95 करोड़ महिलाएं सिंगल मदर हैं। यह बदलाव उनके लिए बड़ी राहत लेकर आएगा।

उत्तर कोरिया ने इस साल दागी 12वीं बैलिस्टिक मिसाइल

सियोल, 12 जुलाई (एजेंसियां)। उत्तर कोरिया द्वारा बुधवार को फिर एक बैलिस्टिक मिसाइल दागी गई। दक्षिण कोरिया के संयुक्त चीफ ऑफ स्टाफ ने एक बयान में कहा, उत्तर कोरिया ने अपने पूर्वी तट से पूर्वी सागर की ओर एक अनिर्दिष्ट बैलिस्टिक मिसाइल दागी। उत्तर कोरिया के पिछले प्रक्षेपण के बमुश्किल एक महीने बाद जापान की सेना ने भी इस प्रक्षेपण की सूचना दी है और इस साल यह उसका ऐसा 12वां प्रक्षेपण है। मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ ने घोषणा की है कि उन्होंने बैलिस्टिक मिसाइल प्रक्षेपण का पता लगाया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि लॉन्च के संबंध में अधिक जानकारी नहीं दी गई है। इस सप्ताह की शुरुआत में अमेरिकी जासूसी विमान के अभियानों के खिलाफ उत्तर कोरिया के आरोपों के कारण उत्पन्न तनाव के बीच प्योंगयांग ने बैलिस्टिक मिसाइल दागी है। जापान ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन ने जापानी रक्षा मंत्रालय के एक अधिकारी के हवाले से कहा कि मिसाइल को उड़ान भरते देखा गया।

यह प्रक्षेपण उत्तर कोरिया द्वारा अमेरिकी सैन्य गतिविधियों पर कड़ी शिकायत करने और अमेरिकी जासूसी विमानों पर हवाई क्षेत्र का उल्लंघन करने का आरोप लगाने के बाद हुआ है।

लीसेस्टर में श्रद्धालुओं के लिए खुला नया गुरुद्वारा

युवाओं के लिए लाइब्रेरी और कंप्यूटर रूम की व्यवस्था

लंदन, 12 जुलाई (एजेंसियां)। ब्रिटेन में सिख समुदाय को एक बड़ी खुशखबरी मिली है, लीसेस्टर में बना एक नया गुरुद्वारा श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया गया है। यहां अब श्रद्धालु अपनी मंडली के साथ आ रहे हैं और नियमित रूप से अरदास और कीर्तन आयोजित कर रहे हैं। पूर्वी इंग्लैंड में स्थित रामगढिया गुरुद्वारा में पहली शादी का आयोजन भी किया गया।

पहले यह गुरुद्वारा मूल रूप से मेनेल रोड पर स्थित था, जिसके बाद श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या के लिए जगह बनाने के लिए हैमिल्टन, लीसेस्टर में 2.8 एकड़ साइट पर बनाया गया है। जिसकी लागत लगभग 4.2 मिलियन पाउंड तक आई है। निर्माण रामगढिया बोर्ड लीसेस्टर के ट्रस्टियों द्वारा किया गया था जिन्होंने नई इमारत बनाने के आंशिक वित्तपोषण के लिए 2.1 मिलियन पाउंड उधार भी लिए थे।

रामगढ़िया बोर्ड लीसेस्टर ने एक बयान में कहा कि सिखों और अन्य समुदायों के लिए भी यह गुरुद्वारा है, इसकी डिजाइन ब्रिटिश सिख समुदायों के दृष्टिकोण पर आधारित है। इसमें सुंदर पत्थर लगाया गया है जो आधुनिक समकालीन डिजाइन का है। साथ ही इसमें कांच का गुंबद है जिसमें से सूरज की रोशनी आती रहती है जिससे एक खुलेपन का एहसास होता है और गुरुद्वारे में निशान साहिब के साथ कुछ पारंपरिक तत्वों को भी जोड़ा गया है। गुरुद्वारा 2.8 एकड़ की भूमि पर बना हुआ है, जो काफी दूर से ही नजर आता है। इसमें एक बड़ा लंगर हॉल है जिसमें सामुदायिक हॉल भी शामिल है। इसमें गुरुद्वारे के काम के अलावा कोई भी इस जगह को कार्यक्रम के रूप में उपयोग कर सकता है। मुख्य प्रार्थना कक्ष पहली मंजिल पर स्थित है जिस पर पहुंचने के लिए दो घुमावदार सीढ़ियां बनाई गई हैं। दीवान हॉल के दोनों ओर शिक्षण क्षेत्र बनाए गए हैं जिसमें युवाओं के लिए एक समर्पित पुस्तकालय और एक आईटी कक्ष है। सबसे ऊपरी मंजिल में एक छोटा प्रार्थना हॉल है और गुरुद्वारे के सामने सिख पवित्र ध्वज चित्रित है जो एक सिख मंदिर की उपस्थिति का प्रतीक है। यह गुरुद्वारा लोगों की धार्मिक, आध्यात्मिक और शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करेगा। नए गुरुद्वारे में नई माताओं के लिए एक शिशुगृह भी है।

प्रार्थना कक्ष में बुजुर्ग उपासकों को सहारा देने के लिए सीटों के साथ-साथ लिफ्ट भी हैं।

राहुल गांधी के समर्थन में प्रदर्शन

मेरी मांगें मानी, पेपर लीक पर बनेगा कानून : पायलट

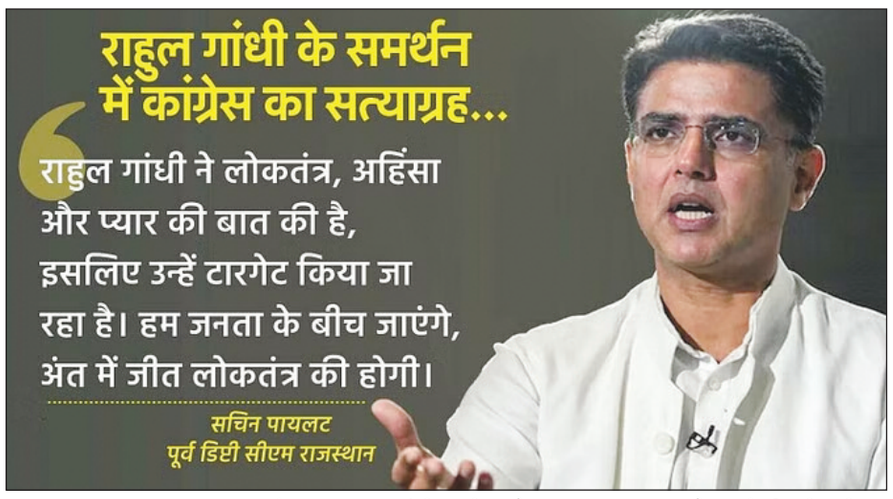

जयपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने कहा है कि मेरी तीनों मांगें मान ली गई हैं, जो मैंने प्रदेश कांग्रेस सरकार के सामने रखी थीं। पायलट ने कहा- मैंने पेपर लीक पर कार्रवाई, आरपीएससी में पारदर्शी तरीके से नियुक्ति और पूर्ववर्ती भाजपा सरकार सरकार के समय भ्रष्टाचार की जांच की मांग की थी। राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता रद्द करने और गुजरात हाईकोर्ट की ओर से 2 साल की सजा बरकरार रहने पर राजस्थान कांग्रेस ने जयपुर में 1 दिन का सत्याग्रह किया। शहर के शहीद स्मारक पर हाथों पर काली पट्टी बांधकर कांग्रेस नेता धरना दे रहे हैं। हालांकि, पैरों में चोट लगे होने के कारण सीएम अशोक गहलोत धरने में नहीं पहुंचे। लेकिन, इस सत्याग्रह में पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट शामिल हुए। इस दौरान मीडिया से बात करते हुए पायलट ने कहा कि राहुल गांधी ने लोकतंत्र, अहिंसा और प्यार की बात की है। इसलिए उन्हें टारगेट किया जा रहा है। हम जनता के बीच जाएंगे, अंत में जीत लोकतंत्र की होगी। उन्होंने कहा कि केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग किया जा रहा है। ये लोकतंत्र के लिए सही नहीं है। इसके विरोध में एआईसीसी के निर्देश पर सत्याग्रह रखा गया है।

सीएम गहलोत से हुए समझौते और अपनी मांगों को लेकर पायलट ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने दिल्ली में बैठक बुलाई थीं। इससे पहले मैंने पेपर लीक पर कारवाई, आरपीएससी में पारदर्शी तरीके से नियुक्तियों और पूर्ववर्ती भाजपा सरकार के समय हुए भ्रष्टाचार समेत जिन मुद्दों को उठाया था उन पर सत्ता और संगठन में सहमति बन गई है। हम प्रदेश में मिलकर चुनाव लड़ेंगे और सरकार रिपीट कराएंगे। पायलट ने कहा- पेपर लीक मामले को लेकर सरकार सख्त कानून लाने की घोषणा कर चुकी है। विधानसभा के सत्र में इसे लेकर कानून लाया जाएगा, इसके बाद पेपर लीक करने वालों को सख्त सजा मिलेगी। बड़े से बड़े लोग भी इसके दायरे में आएंगे। भ्रष्टाचार के खिलाफ जांच की मांग पर भी जल्दी सरकार कार्रवाई करेगी।

थानाधिकारी और कांस्टेबल की हत्या करने के दोषी 7 व्यक्तियों को उम्रकैद

सीकर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। सीकर जिले के फतेहपुर कस्बे के बहुचर्चित थानाधिकारी मुकेश कानूनगो और कांस्टेबल रामप्रकाश हत्याकांड में एडीजे कोर्ट ने सात आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। कोर्ट ने दोषियों पर 7 लाख 63 हजार 500 रुपये का जुर्माना भी लगाया है।

एडीजे अमित कुमार के फैसले के मुताबिक सजा फतेहपुर निवासी अजय चौधरी पुत्र रामकुमार, दिनेश उर्फ लारा पुत्र ओमप्रकाश, जलालसर निवासी ओमप्रकाश उर्फ ओपी पुत्र सोहनलाल, उदयपुरवाटी निवासी रामपाल पुत्र गिरधारीलाल, मंडावा का भादड़वास निवासी अनुज उर्फ छोटा पांडिया तथा चूड़ी मियां निवासी आमीर पुत्र खान मोहम्मद को सुनाई गई है। वहीं, मामले में 11 आरोपियों को बरी भी किया गया है।

राहुल गांधी को भगवान से इंसाफ मिलेगा : रंधावा

डोटासरा ने कहा-मोदी ने कार्यकर्ता बनकर ट्रंप-सरकार का नारा दिया, इससे देश की छवि खराब हुई

जयपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। राहुल गांधी को मानहानि मामले में सजा पर गुजरात हाईकोर्ट से भी राहत नहीं मिलने के बाद देशभर में सियासत गर्मा गई है। कांग्रेस नेता आज राहुल गांधी के समर्थन में मौन सत्याग्रह कर रहे हैं। जयपुर के शहीद स्मारक पर सत्याग्रह शुरू होने से पहले कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा, प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और खाद्य मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने पीएम मोदी और बीजेपी पर हमला बोला। प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने कहा- राहुल गांधी को भगवान और अदालत से इंसाफ मिलेगा।

रंधावा ने कहा- हमेशा ही इंसाफ की गुहार लगती है। पहले हम भगवान से मांगते हैं, दूसरी बार हम अदालत से इंसाफ मांगते हैं। राहुल गांधी को भगवान से और अदालत से जरूर इंसाफ मिलेगा। अवमानना के मामले में पहली बार किसी को इतनी बड़ी सजा दी गई है। पंजाब में तो हमारे बहुत चलता रहता है। केजरीवाल ने क्या-क्या नहीं बोल दिया। जिस तरह की सजा राहुल गांधी को दी गई है, वह न किसी को मिली और न मिलेगी। रंधावा ने कहा-दुनिया की सबसे पुरानी और बड़ी पार्टी के नेता की आवाज बंद करना, इतिहास में पहली बार हुआ है। 1978 में भी जनता दल की सरकार ने इंदिरा गांधी को जेल में भेजा था। बाद में उसका उतना ज्यादा रिएक्शन हुआ। राहुल गांधी को पार्लियामेंट में बोलने से रोकने के लिए सब किया गया। यह देश की जनता बर्दाश्त नहीं करेगी। हिमाचल और कर्नाटक में राहुल गांधी की जुबान बंद करने का रिजल्ट देख लिया।

सिद्धार्थ जयपुरिया भगोड़ा घोषित

सनसाइन सोसायटी, फ्लैट 303 सीकर रोड़ पर नोटिस किया चस्पा

जयपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। नीमराणा रिसोर्ट प्रोजेक्ट में मार्केटिंग के लिए राजकिशोर मोदी के साढू भाई सिद्धार्थ जयपुरिया ने आपस में मिलकर निवेशकों को करोड़ों का ऐसा चूना लगाया कि निवेशकों को इनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाने में ही तीन साल लग गए । राजकिशोर मोदी, संजय पसारी, सिद्धार्थ जयपुरिया भी मान तो रहे है कि निवेशकों से पैसा लिया है, पर वापस देने का मन नहीं है । अब पुलिस ने इनके द्वारा किए फ्रॉड के साक्ष्य मिलने पर सिद्धार्थ जयपुरिया के विरूद्ध आईपीसी की धारा 420, 406, 120 बी, 467, 468 और 471 अपराध में केस दर्ज किया है । परन्तु यह इतना शातिर है कि पुलिस को दिनांक 2-6-2023 को थाने आने का कहकर फरार हो गया, फिर इसे धारा 41 का पहला और दूसरा नोटिस दिया गया, जिसकी मियाद दिनांक 5-7-2023 को खत्म हो गई । इसने अपना मोबाइल नंबर, अपनी पत्नी स्मिता जयपुरिया व दोनों बेटों के सबके मोबाइल नंबर स्विच ऑफ कर दिए, अपना फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम एकाउंट बंद कर दिया । जिससे की पुलिस इसे पकड़ नहीं पाए । मजबूरन सभी कार्रवाई करने के बाद पुलिस ने सिद्धार्थ जयपुरिया को एबीसकॉन्डर अर्थात भगोड़ा घोषित कर दिया है। पुलिस ने इसके आवास संख्या 303 सनसाइन सोसायटी झोटवाड़ा स्थित भवानी निकेतन स्कूल के सामने नोटिस चस्पा किया है । शहर में जगह-जगह भगोड़े को तलाशने के लिए प्रयास किए जा रहे है । पुलिस शीघ्र इनके रिश्तेदारों, ट्रेनिंग स्कूलों व कॉलेज में जहां भी सुराग मिलेगा वही सम्पर्क कर इसका पकड़ने का पूर्ण प्रयास कर रही है । नोटिस में मुकदमा एफआईआर 0174/2023 थाना शाहजहांपुर, जिला भिवाड़ी के जांच अधिकारी राजकमल का मोबाइल नंबर 9784848100 दिया है।

जिस पर कोई भी सिद्धार्थ जयपुरिया को देखे तो मोबाइल नंबर पर सूचित कर सकता है ।

बदमाश की प्रोपर्टी पर चला बुलडोजर

जयपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। जयपुर कमिश्नरेट पुलिस ने आज विद्याधर नगर थाने के हिस्ट्रीशीटर का सालों पुराना अतिक्रमण जेडीए के दस्ते से गिरवा दिया। बदमाश राहुल मीणा ने सरकारी जमीन पर कई सालों से ढाबा और दुकान बना रखी थी। जेडीए की टीम ने आज कार्रवाई करते हुए सभी को जमीदोज करते हुए सरकारी जमीन को अतिक्रमण से मुक्त कराया। एडिशनल डीसीपी नॉर्थ धर्मेन्द्र सागर ने बताया कि राहुल मीणा के खिलाफ आपराधिक मामले होने के कारण विद्याधर नगर थाना पुलिस ने उसकी हिस्ट्रीशीट खोली हुई हैं। हालही में पुलिस को जानकारी मिली की आरोपी ने सरकारी जमीन पर होटल और दुकान खोल रखी हैं।

कोर्ट ले जाते समय गैंगस्टर कुलदीप जघीना की गोली मार कर हत्या

जवानों पर मिर्च फेंक बदमाश फरार

जयपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। राजस्थान में गैंगस्टर कुलदीप जघीना की गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस की टीम गैंगस्टर कुलदीप को जयपुर से भरतपुर कोर्ट लेकर आ रही थी। इस दौरान बदमाशों ने उस पर हमला कर दिया। हमले में कई गोलियां लगने से गैंगस्टर कुलदीप की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि बदमाशों ने पहले पुलिसकर्मियों की आंखों में मिर्ची झोंकी और फिर गोली मारकर फरार हो गए। बतादें कि भाजपा नेता कृपाल सिंह जगीना हत्याकांड में गैंगस्टर कुलदीप सिंह जगीना को गिरफ्तार किया गया था।

जानकारी के अनुसार जयपुर पुलिस की टीम गैंगस्टर कुलदीप सिंह जघीना को सरकारी बस से भरतपुर ले जा रही थी। भरतपुर के अमोली टोल प्लाजा के पास बदमाशों ने जघीना पर फायरिंग कर दी। बदमाशों ने करीब 8-10 राउंड फायरिंग की। इस दौरान गोली लगने से जघीना की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस की टीम ने गैंगस्टर जघीना के शव को अस्पताल पहुंचाया। वहीं, घटना की सूचना पर भारी पुलिस बल मौके पर मौजूद है। बतादें कि पिछले दिनों हुए भाजपा नेता कृपाल सिंह जघीना हत्याकांड के मामले में महाराष्ट्र की कोल्हापुर पुलिस के सहयोग से भरतपुर पुलिस ने गोवा पहुंचने से कुछ घंटे पहले कुलदीप सिंह जघीना समेत 5 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया था। इस पुलिस गिरफ्तर में गैंगस्टर कुलदीप सिंह उर्फ गौरु पुत्र कुंवर जीत (28), प्रभाव सिंह उर्फ भोला पुत्र महावीर सिंह (22) एवं राहुल जाट पुत्र परमवीर सिंह (28) निवासी जघीना थाना उद्योग नगर, विश्वेंद्र सिंह पुत्र विजेंद्र सिंह (28) निवासी गांव पाली थाना हेलेना हाल शास्त्री नगर थाना मथुरा गेट और विजय पाल सिंह उर्फ भूरा पुत्र वीरेंद्र सिंह (28) निवासी नगला खंगर उवार थाना उद्योग नगर को गिरफ्तार किया था।

भरतपुर शहर में काली बगीची शीशम रोड पर स्थित बड़े भूखंड पर विवाद चल रहा था। इस भूखंड का सेटलमेंट कर जमीन से जुड़े सभी लोगों को निकालकर कुलदीप सिंह जघीना बेशकीमती जमीन को खरीद कर करोड़ों का सौदा कर पैसा कमाना चाहता था। कृपाल सिंह और उसके साथियों ने इस जमीन पर न्यायालय से स्टे प्राप्त कर लिया था, जिसे लेकर दोनों में ठनी हुई थी। इस बात को लेकर कुलदीप और उसके साथियों ने कृपाल की गाड़ी को रोककर उस पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर हत्या कर दी थी।

'नींद में भी फायर-फायर बड़बड़ाता है बच्चा'

14-15 घंटे खेलता था पब्जी, परिजनों ने हाथ-पैर बांधकर रखा

अलवर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। फायर-फायर...साइड से मार साइड... 16 साल का एक बच्चा रात को सोते समय भी इस तरह के कई शब्द बड़बड़ाता है। नींद में भी उसके हाथ चलते रहते हैं। उसने खाना-पीना भी छोड़ दिया है। इस बच्चे को मोबाइल पर पब्जी खेलने की ऐसी लत पड़ी कि वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा है। दिव्यांग संस्थान के होस्टल में बच्चे का इलाज चल रहा है। उसकी हालत इतनी खराब है कि उसे हाथ-पैर बांधकर रखा गया है।

ये हैरान करने वाला मामला राजस्थान के अलवर की मुंगास्का कॉलोनी का है। यहां रहने वाला एक 14 साल का राहुल (बदला हुआ नाम) 7वीं कक्षा में पढ़ता है। पिछले करीब सात महीने से वह मोबाइल पर पब्जी और फ्री फायर जैसे ऑनलाइन गेम खेल रहा था। उसे गेम की ऐसी लत लगी कि वह दिन में 14-15 घंटे गेम खेलता था। रात में चादर और रजाई ओढ़कर गेम खेलता ताकि परिजनों को पता ना चले। इतना गेम खेलने के कारण वह बीमार हो गया और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया।

जानकारी के अनुसार राहुल के माता-पिता ने उसे ऑनलाइन पढ़ाई के लिए मोबाइल दिया। इसके लिए उन्होंने घर पर बाईफाई भी लगवाया था। इस कारण नेट की कोई समस्या नहीं थी, इसलिए वह ज्यादातर समय मोबाइल पर गेम खेलकर ही बिताता था। परिजनों को इसका पता चला तो उन्होंने उसे गेम नहीं खेलने के लिए कहा, लेकिन वह नहीं माना।

परिजनों ने राहुल के साथ ज्यादा टोका-टाकी की तो वह दो बार गुस्सा होकर घर से चला गया। परिजनों ने बड़ी मुश्किल से उसे रेवाड़ी में तलाश किया और पकड़कर घर लाए। इसके बाद अप्रैल से मई तक उसे घर में बांधकर रखा। इसी बीच उसकी तबीयत ज्यादा बिगड़ गई। परिजनों ने उसे जयपुर के एक अस्पताल में डॉक्टरों को दिखाया, लेकिन उसकी तबीयत में सुधार नहीं हुआ। अभी उसे अलवर के एक हॉस्टल में रखा गया है, जहां मनोरोग चिकित्सक और साइकोलॉजिस्ट उसका इलाज कर रहे हैं। साथ ही स्पेशल काउंसलर भी उसके स्वास्थ्य पर नजर बनाए हुए हैं।

हारना नहीं चाहता खिलाड़ी और पड़ जाती है लत

पब्जी और फ्री फायर गेम की सबसे बड़ी बात ये है कि इस गेम को खेलने वाला कोई भी खिलाड़ी हारना नहीं चाहता। अगर, वह हार जाता है तो जीतने के लिए गेम को बार-बार खेलता है। इससे उसे गेम खेलने की लत पड़ जाती है। कई बार बच्चे इस गेम का इस कदर शिकार हो जाते हैं कि वे आत्महत्या जैसा कदम भी उठा लेते हैं।

नदी पर मिलने बुलाया, संबंध बनाए और फिर टीचर प्रेमिका ने अपने स्कार्फ से घोंट दिया प्रेमी का गला

उदयपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। 3 जुलाई को 26 साल नरेंद्र कुमार रात में खाना खाने के बाद अपनी प्रेमिका से बात करते हुए घर से बाहर निकल गया। लेकिन, वह पूरी रात घर नहीं लौटा, सुबह तक भी वापस नहीं आने पर परिजनों को चिंता सताने लगी। इसी बीच परिजनों को सोम नदी के पास एक युवक का शव मिलने की सूचना मिली। यह शव नरेंद्र कुमार का ही था।

जुलाई को पुलिस ने युवक की हत्या के आरोप में उसकी टीचर प्रेमिका हिना कुमारी मीणा को गिरफ्तार किया। हिना ने अपने स्कार्फ से गला घोंटकर नरेंद्र की हत्या की थी। पुलिस जांच में सामने आया कि दोनों के बीच 10 साल से प्रेम प्रसंग चल रहा था। लेकिन, धीरे-धीरे दोनों में झगड़े होने लगे थे। इसी के चलते प्रेमिका इतनी परेशान हो गई कि उसने प्रेमी को मौत दे दी।

पशु चिकित्सक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

अलवर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। अलवर के पशु चिकित्सालय में तैनात एक डॉक्टर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मंगलवार को उसका शव अस्पताल में पड़ा हुआ मिला। मामले की सूचना मृतक के परिजनों को दी गई। रिश्तेदारों ने बताया कि मृतक की किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी। उसके गले पर निशान मिला है।

ऐसे में अभी साफ नहीं है कि चिकित्सक की हत्या की गई है या उन्होंने आत्महत्या की है। बता दें कि भवानी तोप स्थित पशु चिकित्सालय में कार्यरत चिकित्सक एसडी शर्मा की संदिग्ध अवस्था में मौत हुई है। पशुपालन विभाग में भवानी तोप स्थित चिकित्सालय में ऑफिस का दरवाजा भीतर से बंद था। दोपहर दो बजे जब आफिस बंद करने के लिए स्टाफ ने डॉ एसडी शर्मा का दरवाजा खटखटाया, तो उन्होंने नहीं खोला। इस पर वहां मौजूद स्टाफ ने गेट को तोड़ दिया। डॉक्टर के गले में घाव के निशान थे। इनको एक निजी चिकित्सालय में ले जाया गया।

सचिवालय की महिला कर्मचारी का बॉस पर छेड़छाड़ का आरोप

साथ जाने से मना करने पर किया टॉर्चर, केबिन में बुलाकर करता था अश्लील बातें

जयपुर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। जयपुर के सचिवालय में तैनात एक कंप्यूटर एजेंसी के बॉस (मैनेजर) के महिला कर्मचारी से छेड़छाड़ करने का मामला सामने आया है। बॉस के साथ डेटिंग से मना करने पर टॉर्चर कर आरोपी बॉस ने जॉब से निकालने की धमकी दी। केबिन में बुलाकर सिर से पांव तक घूरने के साथ अश्लील बातें करता है। अशोक नगर थाने में पीड़िता ने आरोपी बॉस के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई है। मामले की जांच एसआई कविता यादव कर रही है।

पुलिस ने बताया-प्रताप नगर निवासी 31 वर्षीय महिला ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। वह सचिवालय के एक डिपार्टमेंट पर जॉब करती है। आरोप है कि ऑफिस का बॉस (मैनेजर) पिछले 2-3 महीने से मानसिक-शारीरिक टॉर्चर कर रहा है। उससे गलत डिमांड की जाती है। अकेले होने पर उसे केबिन में बुलाकर देर तक खड़ा रखकर बात करते हैं। सिर से पैर तक अश्लील तरीके से घूरते हैं। कैबन में बुलाकर काम से जुड़ी कोई बात नहीं करते। सिर्फ अश्लील बात करते है। ऑफिस के बाद कॉफी के लिए किसी कैफे में चलने के लिए दबाव बनाते हैं। कई बार मना करने के बाद भी शाम को देर तक रुकने के लिए दबाव बनाते है।

पीड़िता का आरोप है कि बॉस कहते है कि अगर तुम मेरे साथ बाहर नहीं चली तो तुम्हें नुकसान भी उठाने पड़ेंगे। तुम्हारा इनक्रीमेट मुश्किल होगा। तुम्हारी सरकारी नौकरी सिक्योरिटी नहीं है। क्योंकि में ऑफिस स्तर पर काफी प्रभावशाली और शक्तिशाली हूं। तुम्हें जरूरत से ज्यादा और अनावश्यक काम देकर जो तुमसे नहीं हो पाएगा। तुम्हारा रोज का वर्क रूटीन बिगाड़ दूंगा। तुम्हें मानसिक तरीके से परेशानी होगी। ऐसा तुम्हें करना ही पड़ेगा, नहीं तो मैं तुम्हें जॉब से हटाने की भी पॉवर रखता हूं।

सीनियर बॉस से की शिकायत

पीड़िता बॉस की डिमांड को बार-बार नकारती रही। देर तक ऑफिस में कभी नहीं रुकी, क्योंकि इन सब से वह काफी डर हुई थी। आरोप है कि कई बार आते-जाते समय बॉस डेक्स के पास से निकलते समय उसके कंधे और गर्दन को गलत तरीके से टच करते। उसे मानसिक दबाव झेलना पड़ा। जिस वजह से परेशान होकर कभी-कभी ऑफिस से बाहर निकलना पड़ता था। ऑफिस गैलेरी में कई बार चलाकर टकरा जाते। परेशान होकर 19 जून को सीनियर बॉस से आरोपी बॉस की मौखिक रूप से शिकायत भी की। उन्होंने बात करने का आश्वासन दिया, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की। दिन-प्रतिदिन स्थिति ओर खराब होती गई।

डॉक्टर ने दुष्कर्म कर बनाया अश्लील वीडियो

महिलाकर्मी का आरोप-ड्रिप में इंजेक्शन लगाकर बेहोश किया

अजमेर, 12 जुलाई (एजेंसियां)। अजमेर के क्रिश्चियन गंज थाना क्षेत्र में प्राइवेट अस्पताल के डॉक्टर पर महिलाकर्मी ने दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। साथ ही अश्लील वीडियो से ब्लैकमेल करने का भी आरोप लगाते हुए पीड़िता ने क्रिश्चियन गंज थाने पर मुकदमा दर्ज करवाया है। पुलिस ने दुष्कर्म सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्जकर जांच शुरू कर दी है।

क्रिश्चियन गंज थानाधिकारी करण सिंह खंगारोत ने मामले की जानकारी देते हुए बताया, पीड़ित महिला ने थाने पर उपस्थित होकर शिकायत दर्ज करवाई है। महिला ने आरोप लगाया कि वह पारस यूरोलॉजी एंड मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल में कार्य कर रही थी। मई 2022 में उसकी तबीयत अचानक खराब हुई तो उसे हॉस्पिटल में एडमिट कर दिया गया। पीड़िता ने आरोप लगाया कि उसी दिन रात में हॉस्पिटल के एचओडी डॉक्टर राजकुमार खासवाल उससे मिलने आए और उसकी ड्रिप में एक इंजेक्शन लगा दिया, जिससे वह बेहोश हो गई। एक महीने बाद एचओडी में उसे बुलाया और एक वीडियो दिखाया, जिसमें महिला को जानकारी हुई कि एचओडी के द्वारा उसके साथ दुष्कर्म कर वीडियो बना लिया है। पीड़िता ने शिकायत में बताया कि एचओडी उस वीडियो को वायरल करने की धमकी देकर लगातार दुष्कर्म करता रहा है। कई बार पीड़िता ने इस्तीफा देना चाहा, लेकिन आरोपी डॉक्टर उसे कहीं और काम नहीं करने की धमकी दे रहा है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि आरोपी के द्वारा उसे कहा गया कि उसकी प्रशासनिक अधिकारी में अधिक जान पहचान है। वह उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती है।

विजयवाड़ा मंडल ने अब तक की सर्वोच्च उपलब्धि हासिल की

टिकट चेकिंग से कमाई जून 2023 के दौरान 6.41 करोड़

विजयवाड़ा, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। एक और अभूतपूर्व उपलब्धि में, विजयवाड़ा डिवीजन, एससीआर ने जून 2023 के दौरान 6.41 करोड़ रुपये की अब तक की सबसे अधिक टिकट चेकिंग आय हासिल की। यह विजयवाड़ा डिवीजन के इतिहास में एक महीने में दर्ज की गई सबसे अधिक कमाई है। पिछला उच्चतम 5.67 करोड़ रुपए था जो जनवरी 2023 में पंजीकृत किया गया था। जून 2023 के दौरान, बिना टिकट यात्रा के 35,880 मामले दर्ज किए गए और टिकट चेकिंग स्टाफ द्वारा 3.25 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूला गया। अनियमित यात्रा के 47,778 मामले दर्ज किए गए और पूरे विजयवाड़ा मंडल में यात्रियों से 2.5 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूला गया। जून 2023 के दौरान बिना बुक किए सामान के साथ यात्रा करने वाले यात्रियों के 521 मामलों पर भी जुर्माना लगाया गया। गर्मियों में वापसी यातायात भीड़ के कारण, एससीआर ने लोकप्रिय ट्रेन मार्गों में मांग को पूरा करने के लिए कई विशेष ट्रेनें चलाई थीं। बिना टिकट यात्रा पर अंकुश लगाने और वास्तविक यात्रियों की सुविधा के लिए वाणिज्यिक शाखा ने कई टिकट जाँच अभियान, किले की जाँच, घात जाँच और औचक जाँच का आयोजन किया। वाविलपल्ली रामबाबू, आईआरटीएस, वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक, विजयवाड़ा मंडल ने टिकट चेकिंग स्टाफ को जून 2023 के दौरान उनके प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए बधाई दी। सीनियर डीसीएम ने सुविधा डिपो के टिकट चेकिंग स्टाफ को यात्रियों की जरूरतों को पूरा करने और विनम्र, तत्पर रहने का सुझाव दिया। रामबाबू ने पीआरएस काउंटरों पर आरक्षित तत्काल व सामान्य यात्रा टिकट खरीदने वाले यात्रियों से अपील की है कि वे मूल काउंटर टिकट अनिवार्य रूप से अपने साथ रखें, अन्यथा इसे अनियमित यात्रा माना जाएगा और यात्रियों से पूरा किराया वसूला जाएगा। उन्होंने परेशानी मुक्त टिकटिंग अनुभव के लिए अंतिम मिनट की भीड़, कतार की लाइनों से बचने के लिए डिजिटल, पेपरलेस और कैशलेस लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए यूटीएस मोबाइल ऐप और एटीवीएम के उपयोग की भी सिफारिश की। विजयवाड़ा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक शिवेंद्र मोहन ने इस अनुकरणीय उपलब्धि को हासिल करने के लिए टिकट चेकिंग टीम और वाणिज्यिक विभाग के अधिकारियों को बधाई दी।

उन्होंने बिना टिकट और अनियमित यात्रा पर अंकुश लगाने के निरंतर प्रयासों के लिए पूरे वाणिज्यिक विंग को भी बधाई दी। शिवेंद्र मोहन ने कहा कि विजयवाड़ा मंडल अनधिकृत यात्रा पर अंकुश लगाने और वास्तविक रेल यात्रियों को होने वाली किसी भी असुविधा को कम करने के लिए लगातार गहन टिकट जांच अभियान चला रहा है।

श्री जगन्नाथ सेवा समिति ने की बैठक

श्री पंचकुंडीय महायज्ञ की तैयारी पर विचार-विमर्श

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। श्री जगन्नाथ सेवा समिति की बैठक बंजारा हिल्स में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया तथा उसकी कार्य प्रणाली निर्धारित की गई। इसमें श्री जगन्नाथ सेवा समिति द्वारा 19 जुलाई से 25 जुलाई तक आयोजित किये जाने वाले श्री पंचकुंडीय महायज्ञ की तैयारी पर विचार-विमर्श किया गया। एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा समिति के प्रचार-प्रसार संयोजक मुकुंद लाल अग्रवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि यह महायज्ञ श्रावण मास में पुरुषोत्तम मास आने के उपलक्ष्य में किया जा रहा है। यह महायज्ञ बंजारा हिल्स रोड नम्बर 12 पर स्थित जगन्नाथ मंदिर के प्रांगण में आयोजित किया जा रहा है। 15 जुलाई को भूमि पूजन प्रातः 8 बजे किया जाएगा। महिलाओं द्वारा कलश धारण कर यात्रा 19 जुलाई को रोड नंबर 12, बंजारा हिल्स स्थित श्री कनक दुर्गा मंदिर से प्रातः 8 बजे प्रारम्भ होकर जगन्नाथ मंदिर स्थित महायज्ञ तक जाएगी तत्पश्चात् महायज्ञ 19 जुलाई से 25 जुलाई तक प्रतिदिन प्रातः 8.30 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक तथा मध्याह्न 3-30 बजे से 6-30 बजे तक आयोजित होगा सायं 7 बजे से आरती एवं प्रसाद वितरण रहेगा भंडारा यज्ञ की समाप्ति वाले दिन मंगलवार 25 जुलाई को सायं 7 बजे से प्रारंभ होगा। जिन महिलाओं को कलश यात्रा में सम्मिलित होना हो या जिनको यज्ञ में यजमान बनना है, वे यज्ञ समिति के संयोजक शंकरलाल अग्रवाल, कलश यात्रा संयोजक सुनील कुमार गुप्ता अथवा यज्ञ समिति के पदाधिकारियों से संपर्क कर अपना नाम लिखा सकते हैं। इस यज्ञ के यज्ञाचार्य काशी बनारस के वै. प्र. सुनील लक्ष्मीकान्त दीक्षित रहेंगे मुख्य यजमान राम प्रसाद बजरंग प्रसाद गुप्ता फर्म बद्रीप्रसाद बाबूलाल हैं। भोजन व प्रसाद के संयोजक सुरेश जगनानी हैं।

पदाधिकारियों में अध्यक्ष मुकुंद लाल सोंथलिया, उपाध्यक्ष महेश कुमार डाकोतिया, मानद मंत्री सुरेश कुमार दिल्ली वाले, कोषाध्यक्ष सीए रवींद्र कुमार अग्रवाल, सह मंत्री अमर टीबरेवाल, यज्ञ संयोजक शंकर लाल अग्रवाल, कलश यात्रा संयोजक सुनील कुमार गुप्ता, विज्ञापन एवं प्रचार प्रसार संयोजक मुकुंद लाल अग्रवाल, भोजन एवं प्रसाद संयोजक सुरेश जगनानी को मनोनीत किया गया। परामर्शदातागण मुन्नालाल अग्रवाल, नरेंद्र कुमार गोयल, राजेंद्र कुमार अग्रवाल, विट्ठल दास, महेश कुमार दिल्ली वाले, प्रमोद कुमार आगरा वाले, सुरेंद्र कुमार गोयल तथा कार्यकारिणी सदस्यगण में विनोद कुमार डाकोतिया, सीए सुरेश कुमार अग्रवाल, पवन कुमार गर्ग, वेद प्रकाश अग्रवाल, सुरेश अग्रवाल, प्रमोद कुमार सरायवाले, मगन लाल सरायवाले को मनोनीत किया गया।

बैठक में मुकुंद लाल सोंथलिया, महेश कुमार डाकोतिया, सुरेश कुमार दिल्ली वाले, सीए रवींद्र कुमार अग्रवाल, बजरंग प्रसाद गुप्ता, शंकर लाल अग्रवाल, मुकुंद लाल अग्रवाल, महेश कुमार दिल्ली वाले, सुरेंद्र कुमार गोयल, राजेंद्र कुमार अग्रवाल, सुरेश जगनानी, सीए सुरेश कुमार अग्रवाल उपस्थित थे। मानद मंत्री सुरेश कुमार दिल्ली वाले के धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक का समापन हुआ।

कुमावत सेवा समिति उप्पल चेंगीचेरला की नयी कार्यकारिणी गठित

पारसमल मोटावत बने अध्यक्ष

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। चेंगीचेरला स्थित समाज के भवन में कुमावत सेवा समिति उप्पल चेंगीचेरला समाज बन्धुओं के सान्निध्य में विशेष मीटिंग आयोजित कर आगमी कार्यकाल के लिए सर्वसहमति से नयी कार्यकारिणी मंडल का गठन किया गया। इसमें पारसमल मोटावत को अध्यक्ष एवं बाबुलाल खरनालिया को सचिव चुना गया। प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार समाज बन्धुओं के सान्निध्य में विशेष मीटिंग का आयोजनकर सर्वसहमति से नयी कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें संरक्षक चेनाराम रेणवाल, चन्द्रप्रकाश मोटावत, अध्यक्ष पारसमल रेणवाल, उपाध्यक्ष आसूराम रेनवाल, महेन्द्र मोचीवाल, बाबुलाल गोयल, जितेन्द्र पीपाड़ा, कोषाध्यक्ष जुंजाराम अडाणीया, मल्लाराम मंडोरा, सचिव बाबुलाल खरनालिया, सहसचिव ओमप्रकाश मोटावत, महामंत्री सी.आर.कुमावत, कानाराम दुबलदिया, मंत्री मलाराम बांकरेचा, गोविन्द मोटावत, संगठन मंत्री नाथुराम लारना, दलपत बांकरेचा, सलाहकार खियाराम बांकरेचा, छेलाराम, ओमप्रकाश पीपाड़ा, पुखराज, प्रचार मंत्री धाराराम रेणवाल, रायचन्द रेनवाल, हिरालाल बबियाल, खेल मंत्री ओमकार दुबलदिया, श्रवण भोमावत, हरिकिशन रेणवाल, परमसदाता रमेश हावलेचा, मांगीलाल सिंदल, धाराराम हावलेचा, हीराराम दुबलदिया, कार्यकारिणी सदस्य ताराराम घोड़ावड़, रमेश भदानिया, मोतीलाल, आसुराम, मोतीलाल, गौतम, पप्पुलाल, पारसमल, सम्पतलाल, नेतीराम, दिनेश, प्रकाश, नौरतमल कुमावत को सर्वसहमति से चुना गया। पधारे समाज बन्धुओं ने नवनिर्वाचित पदाधिकारीयों का साफे से सम्मानकर पूर्व कार्यकारिणी को सम्मानपूर्वक विदाई दी। नवनिर्वाचित अध्यक्ष पारसमल रेणवाल ने अपने सम्बोधन भाषण मे नवनिर्वाचित अध्यक्ष चुने जाने पर समाज बन्धुओं का तहदिल से आभार प्रकट किया व समाज बन्धुओं को भरोसा दिलाया कि समाज के विकास के लिए नवनिर्वाचित पदाधिकारी, कार्यकारणी मेम्बरों, समाज बन्धुओं के सहयोग से वे समाज के अधूरे कार्य को पूरा करने की हर सम्भव कोशिश करेंगे।

समान नागरिक संहिता के विरोध में माओवादियों ने जारी किया बयान

कोठागुडेम, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) ने यूसीसी लागू करने के केंद्र की भाजपा सरकार के फैसले की कड़ी निंदा की है, पार्टी तेलंगाना राज्य समिति के प्रवक्ता जगन ने बुधवार को यहां मीडिया को जारी एक बयान में कहा।

उन्होंने जनता से समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के 'फासीवादी ब्राह्मणवादी हिंदुत्व' भाजपा और आरएसएस के एजेंडे के खिलाफ विद्रोह करने का आह्वान किया। भाजपा के नौ साल के शासन के प्रति लोगों का विरोध बढ़ रहा है तथा भाजपा अपने विभाजनकारी और सांप्रदायिक एजेंडे को अंजाम देने की योजना बना रही है। भाजपा यूसीसी के माध्यम से पांच राज्यों के चुनावों और 2024 में आम चुनाव से पहले धर्म के आधार पर एक नापाक विभाजनकारी रेखा बनाना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि मोदी शासन के पिछले नौ वर्षों में, भारतीय अर्थव्यवस्था में लंबे समय तक स्थिरता और गिरावट देखी गई है।

गरीबी, बीमारियाँ, अमीर और गरीब के बीच की खाई और अल्पसंख्यकों, दलितों और आदिवासियों पर हमले ऐसे स्तर पर पहुँच गए हैं जो पहले कभी नहीं देखा गया था। 80 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी रेखा से नीचे धकेल दिया गया है। जगन ने कहा कि बीजेपी इन सबको जनता के दिमाग से हटाने की कोशिश कर रही है। यूसीसी के कारण अल्पसंख्यकों, आदिवासियों और यहां तक कि हिंदुओं के धार्मिक अधिकारों को भी खतरा होगा। भाजपा मुस्लिम समुदाय को भी अमानवीय बना रही है और उन्हें गलत तरीके से पेश कर रही है। जगन ने कहा, यूसीसी के खिलाफ एक जन आंदोलन खड़ा करने की जरूरत है।

वरिष्ठ भाजपा नेता गोविंद राठी ने किया किशन रेड्डी का सम्मान

प्रदेश की ताजा राजनैतिक स्थिति पर किया विचार-विमर्श

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। वरिष्ठ भाजपा नेता गोविंद राठी ने नव नियुक्त प्रदेश भाजपा अध्यक्ष जी. किशन रेड्डी से मुलाकात कर उनका सम्मान किया। सथ ही तेलंगाना की ताजा राजनीति स्थिति के संबंध में विचार-विमर्श भी किया। सुझाव में किशन रेड्डी ने कहा कि केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के अलावा तेलंगाना के लिए के लिए गये कार्यों के बारे में प्रदेश को जनता को बताने की आवश्यकता है। गोविंद राठी ने बताया कि मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव किसानों को, गरीबों को तथा छोटे छोटे लोगों को हथेली में चांद दिखा कर और मुसलमानों को रिझा कर वोट हासिल करना चाहते हैं, परंतु तेलंगाना की जनता बीआरएस पार्टी को समझ गई है और इस बार तेलंगाना की जनता बीआरएस को जरूर सबक सिखाएगी।

गोविंद राठी ने आगे कहा कि हमें यूनिफॉर्म सिविल कोड के लिए सभी देशवासियों को आगे आने के लिए आह्वान किया। गोविंद राठी ने आगे कहा मेट्रो रेल एमजी बस स्टेशन से फलकनुमा तक ले जाने के लिए एमआईएम के असद्दीन ओवैसी नाटक कर रहे हैं और पिछले कई वर्षों से कह रहे हैं हमें कोई ऐतराज नहीं है। उधर, मुख्यमंत्री भी एमआईएम के हाथों कठपुतली बन गये हैं। इस अवसर पर विमल डालिया, मनोज जयसवाल ने भी कई मुद्दों पर चर्चा की।

माथुर वैश्य इन्टरनेशनल हैदराबाद ग्रेटर की बैठक सम्पन्न

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। माथुर वैश्य इन्टरनेशनल हैदराबाद ग्रेटर की बैठक अध्यक्षा अरुणा गुप्ता के घर सोलिटेयर हारमोनी माधोपुर में हुई। जिसमें सभी सदस्यों ने मिलकर सुन्दरकाण्ड का पाठ कर पूजा-अर्चना-आरती की। श्रावण अधिक मास अगस्त माह में रचना गुप्ता के घर पर सुन्दरकाण्ड का पाठ होना निश्चित हुआ है। बैठक में अखिल भारतीय माथुर वैश्य समाज द्वारा 23 जुलाई रविवार को सम्पूर्ण देश में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जायेगा जिसमें सभी लोग रक्तदान शिविर का प्रचार कर स्वंय भी रक्तदान करने के लिए पँहुच कर रक्तदान महादान में हिस्सा लें। बैठक में चेयरपर्सन डॉ. मालती, सचिव नीलम, कोषाध्यक्ष रचना गुप्ता, कार्यकारी सदस्य मीनू, श्वेता, भावना, शिप्रा, मन्जू गुप्ता, बीना, मीनाक्षी एंव अन्य गणमान्य लोगों ने सुन्दरकाण्ड पठन में हिस्सा लेकर प्रसाद ग्रहण किया। अध्यक्षा अरुणा गुप्ता ने श्रावण मास में हरिद्वार से लाया हुआ गंगाजल सभी को भेंट स्वरूप प्रदान किया।

गौलीगुड़ा में माता वरीघटम की पूजा-अर्चना करते हुए जामबाग के पार्षद राकेश जायसवाल। साथ में हैं राजू यादव, संजय, अनिल, रामकृष्णा, रवि, नरसिंग व अन्य।

केबीआर पार्क में इच्छापूर्ति गणेश जी की पूजा-आरती करते हुए राजेंद्र कुमार अग्रवाल, महेश डकोतिया, पुष्पलता, श्रीनिवास, भोज रेड्डी, विजय कुमार एडवोकेट, गोपाल बल्देवा, शेषाचार्य, विजय कुमार सिंह, सुरेंद्र अग्रवाल।

टीटीडी के लड्डु वितरण 10 काउंटरों की रखरखाव करेगी एलआईसी

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। टीटीडी तिरुमाला में आने वाले तीर्थयात्रियों को विभिन्न सुविधाएं प्रदान कर रहा है, उनमें से एक मुख्य मंदिर के पीछे स्थित लड्डू काउंटर भी है। टीटीडी ने इन काउंटरों की रखरखाव लागत के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और वित्तीय संस्थानों की भागीदारी की मांग की। जवाब में एलआईसी ने टीईएन काउंटरों के रखरखाव का खर्च वहन करना स्वीकार कर लिया है। एलआईसी सबसे अधिक काउंटरों की रखरखाव लागत वहन कर रही है। कार्यक्रम स्थल पर आयोजित एक समारोह में एलआईसी की क्षेत्रीय प्रबंधक श्रीमती दीपा शिवदासन ने बताया कि टीटीडी को बड़े पैमाने पर जनता के लाभ के लिए सुविधाजनक सुविधाओं को लागू करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इन काउंटरों की रखरखाव लागत वहन करने का निर्णय लिया गया है। ये काउंटर मुख्य मंदिर के ठीक पीछे स्थित हैं और जनता आसानी से पहुंच सकती है। इस अवसर पर आर श्रीनिवासुलु, एईओ, टीटीडी ने बताया कि टीटीडी ने तिरुमाला में सभी के लिए मुफ्त भोजन, मुफ्त मुंडन, मुफ्त सामान रखने के काउंटर जैसी कई पहल की हैं। उन्होंने बड़े पैमाने पर आगे आने और दस लड्डू काउंटर बनाए रखने को स्वीकार करने के लिए एलआईसी को धन्यवाद दिया।

वासवी क्लब द्वारा नारायणगुड़ा मेलकोटे पार्क में आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर में डॉ. राज कुमार, डॉ. संगीता, वॉकर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष नागभूषण राव, वर्कमर गुप्ता, लक्ष्मी नारायण, भरत कुमार ने अस्थि खनिज घनत्व विषय पर एक बैठक में भाग लिया।

कर्नाटक में मुनिश्री कामकुमार नंदी जी के अपहरण एवं हत्या पर आक्रोश

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। श्री दिगम्बर जैन संस्था ने कर्नाटक राज्य में जैन समुदाय के संत श्री कामकुमार नंदी जी महाराज की सुनियोजित तरीके से हत्या पर गहरा दुख एवं क्षोभ व्यक्त किया। कार्यकारिणी सदस्य प्रवीण पांड्या ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि संस्था कर्नाटक सरकार से यह मांग करती है कि वह कि वह इस पूरे प्रकरण की एसआईटी गठित कर जांच करवाए और पूरे तथ्य समाज के सामने रखे तथा यह की मांग करती है कर्नाटक प्रांत में जहां-जहां जैन साधु, भट्टारक गण विराजमान हैं तथा जो यात्री जैन तीर्थों की वंदना के लिए जाते हैं उनके जान माल की सुरक्षा का इंतजाम करे। हम सब मुनि श्री कामकुमार नंदी की आत्मा की शांतिलाभ की कामना करते हुए हार्दिक श्रद्धा एवं नमोस्तु निवेदित करते हैं। उन्होंने बताया कि जैन धर्म सदियों से ही अहिंसा का पुजारी रहा हुआ है और जेनी व्यक्ति कभी सपने में भी नहीं सोच सकता मन में भी नहीं सोच सकता किसी भी जीव की हत्या करने का जैनी व्यक्ति सदैव मन से वचन से और काय से सदैव अहिंसक रहता है। दिगंबर जैन साधु संत महात्मा जीवों की रक्षा के लिए अपने हाथ में सदैव मयूर पीछिक लिए रहते हैं जिससे किसी भी जीव की विराधना ना हो, परंतु मुनिश्री कामकुमार नंदी जी के अपहरण एवं हत्या अत्यंत दुख का विषय है। मीटिंग में संस्था के अध्यक्ष विनोद बज, कोषाध्यक्ष महेंद्र चांदवड, सहमंत्री पंकज छावड़ा, कार्यकारिणी सदस्य प्रवीण पांड्या एवं सत्येंद्र जैन आदि उपस्थित थे।

बाजरा के लाभों पर वैज्ञानिक व्याख्यान का आयोजन

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष 2023 समारोह के संबंध में राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा सम्पदा संस्थान, हैदराबाद में बाजरा के लाभों पर डॉ. केबीआरएस विशारद, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. वी.एम मलाती, वैज्ञानिक, भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान-आई.सी.ए.आर., हैदराबाद द्वारा वैज्ञानिक व्याख्यान दिया गया। डॉ. वी. श्रीदेवी, अनुसंधान अधिकारी (आयु.) एवं संस्थान प्रभारी ने अतिथि वक्ताओं का स्वागत और अभिनंदन किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. क्रिस एंटनी, अनुसंधान अधिकारी (आयु.) द्वारा किया गया। संस्थान के कर्मचारी व्याख्यानों से लाभान्वित हुए, जिसमें बाजरा के पोषण और चिकित्सीय लाभों पर विस्तृत जानकारी दी गई। वक्ताओं ने संस्थान के प्रभारी डॉ. वी. श्रीदेवी के साथ एन.आई.आई.एम.एच और आई.आई.एम.आर, हैदराबाद के बीच सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की। कार्यक्रम का समापन डॉ. बिश्वरंजन दास, अनुसंधान अधिकारी (होम.) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिसके बाद राष्ट्रगान गाया गया।

सीएसआर गतिविधि के तहत एसबीआई, हैदराबाद सर्कल ने मंदिर में भक्तों के परिवहन के लिए श्री लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी वारी देवस्थानम, यादगिरिगुट्टा को 3 बैटरी चालित वाहन दान किए। भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य महाप्रबंधक राजेश कुमार ने 3 बैटरी चालित वाहनों की चाबियाँ मंदिर की कार्यकारी अधिकारी श्रीमती एन. गीता को सौंपी।

शुक्रवार को जारी हो सकता है एशिया कप का शेड्यूल

आईपीएल चेयरमैन धूमल बोले- ना टीम इंडिया पाकिस्तान जाएगी और न ही हमारे सचिव

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। एशिया कप का शेड्यूल इसी सप्ताह शुक्रवार को जारी हो सकता है। आईपीएल चेयरमैन अरुण धूमल ने कहा, टीम इंडिया पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेगी। धूमल फिलहाल आईसीसी की चीफ एग्जीक्यूटिव मीट के लिए डरबन में हैं।

उन्होंने बुधवार को पुष्टि की कि बीसीसीआई सचिव जय शाह और पीसीबी चीफ जका अशरफ ने एशिया कप शेड्यूल को अंतिम रूप देने के लिए गुरुवार को आईसीसी बोर्ड मीटिंग से पहले मुलाकात की। इस मुलाकात में एशिया कप के हाइब्रिड मॉडल को मंजूरी मिली।

हाइब्रिड मॉडल के तहत ही खेल जाएगा एशिया कप

धूमल ने कहा, 'बीसीसीआई सचिव ने पीसीबी चीफ जका अशरफ से मुलाकात की और एशिया कप के शेड्यूल को फाइनल कर दिया। जैसा कि पहले इस टूर्नामेंट को लेकर चर्चा की गई थी, बात उसी पर जारी है। पाकिस्तान में लीग राउंड के चार

मैच होंगे, जबकि श्रीलंका में नौ मैच खेले जाएंगे। इनमें भारत और पाकिस्तान के बीच दोनों मैच शामिल हैं। यदि दोनों टीमें फाइनल खेलती हैं तो यह मैच भी श्रीलंका में ही खेला जाएगा।'

टीम इंडिया नहीं जाएगी पाकिस्तान- धूमल

धूमल ने पाकिस्तानी मीडिया से आ रही उन खबरों को खारिज कर दिया जिसमें कहा गया था कि टीम इंडिया पाकिस्तान की यात्रा करेगी, जैसा कि उनके खेल मंत्री एहसान मजारी दावा कर रहे थे। धूमल ने कहा, 'ऐसी कोई चर्चा नहीं हुई। सारी रिपोर्ट्स गलत हैं। न तो टीम इंडिया पाकिस्तान की यात्रा कर रही है और न ही हमारे सचिव वहां की यात्रा करेंगे। केवल कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया गया है।'

पाकिस्तान का अपने देश में एकमात्र घरेलू मैच नेपाल के खिलाफ होगा। अन्य तीन मैच अफगानिस्तान बनाम बांग्लादेश, बांग्लादेश बनाम श्रीलंका और श्रीलंका बनाम अफगानिस्तान हैं।

एशिया कप के वेन्यू को लेकर विवाद

बता दें, पिछले साल से एशिया कप के वेन्यू को लेकर विवाद चल रहा है। कई मीटिंग के बाद टूर्नामेंट को हाइब्रिड मॉडल पर कराने का फैसला लिया गया। PCB के पूर्व चीफ रमीज राजा ने टूर्नामेंट पाकिस्तान में नहीं कराने पर विरोध जताया था और वर्ल्ड कप के लिए भारत नहीं आने की धमकी दी थी।

पाकिस्तान खेल मंत्री अहसान मजारी ने हाल ही में कहा था कि यदि भारत अपने एशिया कप मैचों को तटस्थ स्थान (न्यूट्रल वेन्यू) पर खेलने की मांग करता है, तो हम भी भारत में अपने विश्व कप मैचों के लिए भी यही मांग करेंगे। हालांकि, पाकिस्तान के बार-बार भारत न आने की धमकी पर आईसीसी ने एक बार पीसीबी को चेतावनी भी दी थी।

उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान ने वर्ल्ड कप में हिस्सा लेने के लिए एग्रीमेंट साइन किया है। हम उम्मीद कर रहे हैं कि वो इस एग्रीमेंट से पलटेंगे नहीं और भारत आएंगे।

श्रेयस नेट्स पर लौटे, वर्ल्ड कप खेलने की उम्मीद बढ़ी

एशिया कप से पहले फिटनेस टेस्ट होगा, पास हुए तो टीम में मिल सकती है जगह

बेंगलुरु, 12 जुलाई (एजेंसियां)। श्रेयस अय्यर अक्टूबर से भारत में होने वाला वनडे वर्ल्ड कप खेल सकते हैं। उन्होंने मंगलवार को बेंगलुरु की नेशनल क्रिकेट एकेडमी में नेट प्रैक्टिस की। नेट्स में बैटिंग का उनका वीडियो वायरल हो रहा है। रिपोर्ट्स के अनुसार, अय्यर वर्ल्ड कप से पहले ही 100% फिट हो जाएंगे और टूर्नामेंट का हिस्सा भी बन सकते हैं।

एशिया कप से पहले भी अय्यर का फिटनेस टेस्ट होगा। अगर वे इस टेस्ट को भी पास कर लेते हैं तो वह इस चैंपियनशिप में भी खेल सकते हैं। एशिया कप 31 अगस्त से शुरू होगा।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट में चोटिल हुए थे, आईपीएल नहीं खेला

श्रेयस अय्यर इसी साल में मार्च में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट मैच में चोटिल हो गए थे। चोट के कारण वह टेस्ट मैच में भारत की ओर से दूसरी पारी में बैटिंग करने भी नहीं उतरे थे। अप्रैल में अय्यर ने लंदन में पीठ की सर्जरी कराई।

सर्जरी के कारण अय्यर ने आईपीएल सीजन में कोलकाता से एक भी मैच नहीं खेला और वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप में भी भारत का हिस्सा नहीं हो सके। वह एनसीए में फिटनेस पर काम करते रहे और वेस्टइंडीज दौरे पर भी टीम का हिस्सा नहीं बन सके।

बुमराह की आयरलैंड के खिलाफ वापसी संभव

15 अप्रैल को तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की सर्जरी हुई, 28 जून को उन्होंने भी नेट्स में गेंदबाजी करनी शुरू कर दी थी। वह नेट प्रैक्टिस में तब हर दिन 7 ओवर गेंदबाजी कर रहे थे। रिपोर्ट्स में कहा गया था कि वह जुलाई में कुछ प्रैक्टिस मैच भी खेलेंगे। श्रेयस अय्यर की सर्जरी 21 अप्रैल को हुई थी और अब 11 जुलाई को उनके भी नेट प्रैक्टिस करने के विजुअल्स सामने आ गए।

रिपोर्ट्स के अनुसार, बुमराह आयरलैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज से वापसी कर सकते हैं। भारत आयरलैंड के खिलाफ 18, 21 और 23 अगस्त को 3 टी-20 खेलेगा। बुमराह अगर फिट रहे तो उन्हें 31 अगस्त से शुरू होने वाले वनडे एशिया कप का हिस्सा भी बनाया जा सकता है।

अय्यर के आने से नंबर-4 की समस्या खत्म होगी

श्रेयस अय्यर के फिट होने से भारत को नंबर-4 पर किसी और बैटर की तलाश नहीं करनी पड़ेगी। टीम इंडिया में युवराज सिंह और सुरेश रैना के बाद से इस पोजिशन पर कोई दमदार खिलाड़ी नहीं आया। यही समस्या टीम को 2015 और 2019 के वर्ल्ड कप में भी आई।

अय्यर ने 2019 के बाद से ही टीम इंडिया में जगह पक्की की और नंबर-4 पर बैटिंग कर इस पोजिशन को अपना बना लिया। 2019 वनडे वर्ल्ड कप के बाद उन्होंने इस पोजिशन पर 22 मैचों में 805 रन बनाए। उनसे ज्यादा रन इस पोजिशन पर कोई और भारतीय बैटर नहीं बना सका।

हिमा दास टीओपीएस से बाहर, जेरेमी को रखा बरकरार

मिशन ओलंपिक सेल ने लिया फैसला

नई दिल्ली, 12 जुलाई (एजेंसियां)। हिमा दास इस साल एथलेटिक ट्रैक पर कम ही नजर आई हैं। बीते दिनों एशियाई खेलों की क्वालिफाइंग इवेंट भुवनेश्वर में हुई अंतरराज्यीय एथलेटिक मीट में भी वह नहीं उतरीं।

पांच साल पहले विश्व जूनियर चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर हिमा दास जिस तेजी से उभरी थीं, उसी तेजी से वह एथलेटिक ट्रैक से गायब भी हो गई हैं। एशियाई खेलों की टीम से बाहर होने के बाद हिमा को मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) से बाहर कर दिया है। वहीं, इलाज के लिए अमेरिका जाने से मना करने पर राष्ट्रीय शिविरसे बाहर किए गए वेटलिफ्टर जेरेमी लालरिनुनगा को टॉप्स डेवलपमेंट ग्रुप में फिल्हाल बरकरार रखा गया है। उनके मामले को सब कमेटी के पास भेजा गया है। जेरमी पेरिस ओलंपिक में खेलने की दौड़ से बाहर हो चुके हैं।

इस साल ट्रैक पर कम नजर आई हैं हिमा

हिमा दास इस साल एथलेटिक ट्रैक पर कम ही नजर आई हैं। बीते दिनों एशियाई खेलों की क्वालिफाइंग इवेंट भुवनेश्वर में हुई अंतरराज्यीय एथलेटिक मीट में भी वह नहीं उतरीं। उसी दौरान मुख्य प्रशिक्षक राधाकृष्णन नायर ने घोषणा की कि हिमा चोटिल हैं और इस मीट में नहीं खेलेंगी। वह 23 सितंबर से हांगझोऊ में होने वाले एशियाई खेलों की टीम का भी हिस्सा नहीं होंगी।

हिमा के प्रदर्शन का उठा मुद्दा

सूत्रों के मुताबिक एमओसी की बैठक में हिमा के प्रदर्शन का मुद्दा उठा। उन्होंने हाल-फिल्हाल ऐसा कुछ भी नहीं किया है, जिससे उन्हें पेरिस ओलंपिक की दौड़ में शामिल माना जाए। इसी को आधार बनाकर उन्हें टॉप्स से बाहर किया गया। हिमा ने जब अपने करियर की शुरुआत की थी तो उन्होंने 400 मीटर में अपना दबदबा बनाया था।

जकार्ता एशियाई खेलों में उन्होंने 400 मीटर में रजत और चार गुणा चार सौ मीटर रिले में स्वर्ण भी जीता, लेकिन अचानक उन्होंने चोट का हवाला देकर 400 मीटर से विदा ले ली। वह 100 और 200 मीटर में भागने लगीं, लेकिन वह इसमें भी नियमित रूप से नहीं दौड़ रही हैं। वह बीते वर्ष राष्ट्रमंडल खेलों में दौड़ी थीं, लेकिन 200 मीटर के फाइनल में जगह नहीं बना पाई थीं।

टीम इंडिया विश्वकप जीत पाएगी या नहीं?

युवराज सिंह ने दिया ऐसा बयान कि मच गया तहलका

मुंबई, 12 जुलाई (एजेंसियां)। वनडे विश्वकप 2023 का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। भारत में होने वाले इस विश्वकप में टीम इंडिया जीत की प्रबल दावेदार मानी जा रही है। इस बीच टीम इंडिया के पूर्व स्टार खिलाड़ी युवराज सिंह ने विश्वकप 2023 को लेकर एक बयान दिया है, जिस पर तहलका मचा हुआ है। युवराज सिंह ने टीम इंडिया के विश्वकप जीतने की संभावनाओं पर अपनी बात रखी और टीम की सबसे बड़ी कमजोरी के बारे में भी बताया है।

युवराज सिंह ने यूट्यूब चैनल क्रिकेट बसु पर एक फ्रीव्हीलिंग चैट में टीम इंडिया के मिडल ऑर्डर को लेकर अपनी चिंता जाहिर की। युवराज के मुताबिक भारत का टॉप ऑर्डर ठीक है, लेकिन मिडल ऑर्डर को व्यवस्थित करने की जरूरत है। स्लॉट 4 और 5 बहुत महत्वपूर्ण हैं। अगर ऋषभ पंत

आईपीएल फ्रेंचाइजी के लिए चौथे नंबर पर बल्लेबाजी कर रहे हैं, तो उन्हें भारत के लिए भी इस पोजिशन पर खेलना चाहिए।

मैं निश्चित नहीं हूं- युवराज सिंह

जब युवराज सिंह से वनडे विश्वकप 2023 में टीम इंडिया के जीतने की संभावनाओं के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि 'ईमानदारी से कहूं तो मैं निश्चित नहीं हूं कि वह वर्ल्ड कप जीतने जा रहे हैं या नहीं, मैं एक देशभक्त की तरह कह सकता हूं कि भारत जीतेगा, लेकिन मैं देखता हूं भारतीय टीम मिडिल ऑर्डर में चोटों को लेकर काफी चिंताएं हैं।'

चौथे नंबर पर केएल राहुल को मौका देने की मांग

फिलहाल टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज ऋषभ पंत चोट के कारण लंबे समय से क्रिकेट मैदान से दूर हैं। वर्ल्ड कप तक उनका वापस आना मुश्किल लग रहा है। ऐसे में युवराज सिंह ने केएल राहुल को मौका देने की बात कही है। उन्होंने कहा कि चौथे नंबर का बल्लेबाज तेजतर्रार रन बनाने वाला नहीं हो सकता। उसे ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो दबाव झेल सके। केएल राहुल के पास हर सिचुएशन में खेलने का अनुभव है। युवराज ने सुझाव दिया कि भारत नॉक-आउट मैचों की तरह दबाव वाले मैच खेलते समय प्रयोगात्मक मोड में नहीं रह सकता।

तूर की मदद से एशियाई चैंपियनशिप में मंगलमय प्रदर्शन की आस, याराजी दिला सकती हैं स्वर्ण

बैंकॉक, 12 जुलाई (एजेंसियां)। लंबी कूद के खिलाड़ी जेस्विन एल्ड्रिन, तिहरी कूद के प्रवीण चित्रवाल और भालाफेंक के रोहित यादव चोट के कारण प्रतियोगिता से हट गए हैं। एल्ड्रिन की अनुपस्थिति में मुरली श्रीशंकर से बड़ी उम्मीद होंगी।

एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भारत की उम्मीदों का दारोमदार गोलाफेंक एथलीट तेजिंदर पाल सिंह तूर और लंबी कूद के एथलीट मुरलीश्रीशंकर पर होगा। पांच दिवसीय प्रतियोगिता बुधवार से बैंकॉक में शुरू हो रही है। मेजबान थाईलैंड के अलावा भारत, हांगकांग, चीन, इंडोनेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया, मलयेशिया, फिलिपीन और सिंगापुर के एथलीट भाग लेंगे।

महिला वर्ग में 100 मीटर बाधा दौड़ में ज्योति याराजी पहली बार इस प्रतियोगिता में उतरेंगी। वह एशियाई रिकॉर्डधारी हैं। उन्होंने 12.84 सेकंड का समय निकाला था। वह इस सत्र में कई बार 13

सेकंड से कम का समय निकालने में सफल रहीं। वह 200 मीटर में भी भाग लेंगी।

लंबी कूद के खिलाड़ी जेस्विन एल्ड्रिन, तिहरी कूद के प्रवीण चित्रवाल और भालाफेंक के रोहित यादव चोट के कारण प्रतियोगिता से हट गए हैं। एल्ड्रिन की अनुपस्थिति में मुरली श्रीशंकर से बड़ी उम्मीद होंगी। पिछले महीने उन्होंने 8.81 मीटर का प्रदर्शन किया था। वह लंबी कूद में स्वर्ण की दावेदारी में है। उनका मनोबल भी ऊंचा होगा क्योंकि उन्होंने प्रतिष्ठित डायमंड लीग के पेरिस चरण में तीसरा स्थान हासिल किया था।

तेजिंदर पाल सिंह तूर ने राष्ट्रीय अंतर राज्य चैंपियनशिप में 21.77 के साथ अच्छा प्रदर्शन किया था। भारत के मुख्य कोच राधकृष्ण नायर ने कहा कि तूर स्वर्ण पदक के बड़े दावेदार हैं। पिछली बार 2019 में दोहा में हुई चैंपियनशिप में उन्होंने 20.22 मीटर के साथ स्वर्णिम सफलता हासिल की थी। खुद तूर का कहना है कि मुझे अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है। रोहित के हटने के बावजूद भालाफेंक में डीपी मनु से पदक की उम्मीद है जिन्होंने इस साल 84.33 का प्रदर्शन किया।

ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा इस प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं ले रहे हैं। वह अगस्त में बुडापेस्ट में होने वाली विश्व चैंपियनशिप की तैयारियों में जुटे हैं। पुरुष वर्ग में 400 मीटर के राष्ट्रीय चैंपियन मुहम्मद अनस याहिया भी भाग नहीं ले रहे हैं।

डोपिंग मामलों से लगा झटका

हालांकि भारत को प्रतियोगिता से पहले शॉटपुटर करणवीर सिंह के डोप टेस्ट में विफल होने से झटका लगा। इसके अलावा राष्ट्रीय अंतर-राज्य चैंपियनशिप में 400 मीटर का स्वर्ण जीतने वालीं अंजलि देवी भी डोप टेस्ट में विफल रहीं। कई एथलीटों के नाम वापस लेने से भी भारत की पदक की दावेदारी पर असर पड़ सकता है।

वर्ल्ड नंबर-2 जोकोविच 12वीं बार विम्बलडन के सेमीफाइनल में

स्वियातेक-पेगुला उलटफेर की शिकार, स्वितोलिना-वोंड्रोयूसोवा भी टॉप-4 में; बोपन्ना जोड़ीदार के साथ जीते

लंदन, 12 जुलाई (एजेंसियां)। वर्ल्ड नंबर-2 नोवाक जोकोविच ने 12वीं बार दुनिया के सबसे पुराने टेनिस टूर्नामेंट विम्बलडन के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है, जबकि टॉप सीड इगा स्वियातेक और चौथी सीड जेसिका पेगुला उलटफेर की शिकार हो गई हैं, वहीं भारतीय स्टार रोहन बोपन्ना ने अपने जोड़ीदार के साथ डबल्स कैटेगरी के क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली है।

सर्बिया के दूसरी सीड खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने 7वीं सीड आंद्रेई रूबलेव को 4-6, 6-1, 6-4, 6-3 से हराया। लेडीज सिंगल्स के क्वार्टर फाइनल मुकाबलों में पोलैंड की स्वियातेक को यूक्रेन की एलिना स्वितोलिना ने 7-5, 6-7, 6-2 से और अमेरिका की पेगुला को चेक गणराज्य की मार्केटा वोंड्रोयूसोवा ने 6-4, 2-6, 6-4 से हराया। पढ़िए नौवें दिन के रिजल्ट...

सिनर भी जेंटलमैन कैटेगरी के

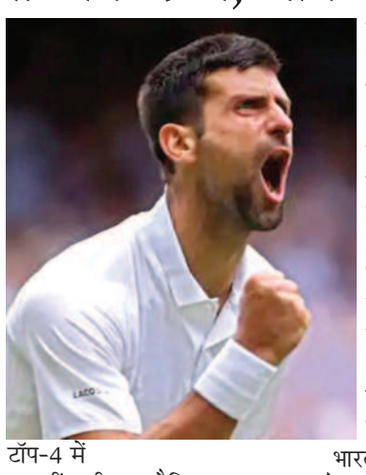

टॉप-4 में

8वीं सीड इटैलियन स्टार जैनिक सिनर ने रोमन सफीउलिन को 6-4, 3-6, 6-2, 6-2 से हराते हुए टॉप-4 में प्रवेश किया। उनका सामना नोवाक जोकोविच से होगा। सिनर-जोकोविच के अलावा, वर्ल्ड नंबर-1 कार्लोस अल्कारेज, नंबर-3 डेनियल मेदवेदेव सहित 7 वरीय खिलाड़ियों ने टॉप-8 में जगह बनाई है। लाइनअप में अमेरिका के क्रिस्टोफ़र युबैंक्स इकलौते गैर वरीय खिलाड़ी हैं।

लाइनअप में अल्कारेज का मुकाबला डेनमार्क के छठी सीड स्टार होल्गर रूने से होगा, जबकि ATP के बैनर तले उतरे तीसरी सीड मेदवेदेव का सामना अमेरिका के क्रिस्टोफ़र युबैंक्स से होगा।

बोपन्ना-एब्डेन की जोड़ी ने पेल-स्टैल्डर को हराया

भारतीय स्टार रोहन बोपन्ना और ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू एब्डेन की छठीं सीड जोड़ी ने नीदरलैंड के डेविड पेल और अमेरिका के रीस स्टैल्डर की जोड़ी को 7-5, 4-6, 7-6 (10-5) से हराया।

संघर्षपूर्ण रहे लेडीज कैटेगरी के दोनों क्वार्टर फाइनल

लेडीज सिंगल्स के दोनों क्वार्टर फाइनल मुकाबले संघर्षपूर्ण रहे। पहले मुकाबले में टॉप सीड इगा स्वियातेक पहला ही सेट हार गईं। उन्होंने टाई ब्रेकर तक गए दूसरे सेट को जीतकर मैच में वापसी की दमदार कोशिश की, लेकिन तीसरा और निर्णायक सेट गवां बैठीं।

पहली बार इस टूर्नामेंट का क्वार्टर फाइनल खेल रही स्वियातेक ने पहला सेट 5-7 से गंवाया, उसके बाद दूसरे सेट को टाई ब्रेकर में 7-6 (7-5) की जीत हासिल की। तब ऐसा लगा कि वर्ल्ड नंबर-1 स्वियातेक निर्णायक सेट जीत लेगीं, लेकिन यूक्रेन की स्वितोलिना ने आखिरी सेट 6-2 से जीतकर मुकाबला अपने नाम किया।

एक अन्य क्वार्टर फाइनल में वोंड्रोयूसोवा ने पहले सेट में 6-4 की जीत से शुरुआत की, लेकिन अमेरिकी खिलाड़ी पेगुला ने दूसरे सेट को 6-2 से जीतते हुए मुकाबला रोमांचक बना दिया। ऐसे में फैसला तीसरे सेट पर हुआ। वोंड्रोयूसोवा ने निर्णायक सेट 6-4 से अपने नाम किया।

तीसरा वनडे जीत कर बांग्लादेश ने बचाई लाज : अफगानिस्तान को 7 विकेट से हराया; सीरीज 2-1 से अफगानिस्तान के नाम

चटगांव, 12 जुलाई (एजेंसियां)। अफगानिस्तान क्रिकेट टीम बांग्लादेश के टूर पर है। तीन मैचों की वनडे सीरीज में मंगलवार को बांग्लादेश ने आखिरी वनडे में अफगानिस्तान को 7 विकेट से हराया। हार के कारण अफगानिस्तान बांग्लादेश का वाइट वाश नहीं कर सका, लेकिन 2-1 से सीरीज अपने नाम की।

टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करने उतरी अफगानिस्तान 45.2 ओवर में 126 रन बना कर ऑलआउट हो गया। टारगेट का पीछा करने उतरी बांग्लादेश की टीम ने 23.3 ओवर में 3 विकेट खो कर टारगेट हासिल कर लिया।

टॉस जीतने के बाद अफगानिस्तान ने पहले बैटिंग की। ओपनिंग रहमानुल्लाह गुरबाज 6 रन और इब्राहिम जादरान 1 रन बना कर पवेलियन लौटे। तीसरे नंबर पर आए रहमत शाह बिना खाता खोले वापस लौटे। कप्तान हश्मतुल्लाह शहीदी दूसरे छोर पर डटें रहे, लेकिन 22 के स्कोर पर तेजुल इस्लाम की गेंद पर बोल्ड हो गए। मोहम्मद नबी 1 और नजीबुल्लाह जादरान 10 रन बना कर आउट हो गए। इसके बाद अजमतुल्लाह ओमरजई ने अर्धशतकीय पारी खेली और 56 रन बनाए। अद्बुल रहमान, जिया-उर रहमान और मुजीब उर रहमान क्रमशः 4,5 और 11 रन बना कर पवेलियन लौटे। इस तरह बांग्लादेश टीम 126 रन पर ऑलआउट हो गई।

बांग्लादेश के शोरीफुल इस्लाम ने शानदार गेंदबाजी कर 4 विकेट चटके। तस्कीन अहमद और तेजुल इस्लाम को 2 विकेट मिले। वहीं, मेहिदी हसन और शकील अल हसन को 1-1 सफलता मिली।

बांग्लादेश के ओपनर्स मोहम्मद नईम और लिटन दास ने पारी की शुरुआत की। मोहम्मद नईम 0 रन बना कर पवेलियन लौटे। दास एक छोर से रन बनाते रहे। नजमुल शांतो 11 रन और शकील अल हसन 39 रन बना कर आउट हुए। इतनी देर में दूसरे छोर से कप्तान लिटन दास ने अर्धतक जड़ दिया और नाबाद 53 रन बनाए उनके बाद तौहीद हृदोय22 रन पर नाबाद रहे। इस तरह टीम ने 3 विकेट खो कर 23.3 ओवर में 129 रन का टारगेट चेज कर लिया।

बॉलिंग में अफगानिस्तान के फाजलहक फारूकी को 2 और मोहम्मद नबी को 1 विकेट मिला।

एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप के ऑफिशियल मैस्कॉट होंगे बजरंगबली

बैंकॉक, 12 जुलाई (एजेंसियां)। एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप का यहा 25वां संस्करण है। इस टूर्नामेंट में भारत स्टार शॉट पुटर तजिंदरपाल सिंह तूर और लॉन्ग जंपर मुरली श्रीशंकर के नेतृत्व में प्रभावशाली प्रदर्शन की उम्मीद करेगा।

'भगवान हनुमान' थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में बुधवार से शुरू होने वाले एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप टूर्नामेंट में इस साल के संस्करण के ऑफिशियल मैस्कॉट होंगे। यह टूर्नामेंट कॉन्टिनेंटल गवर्निंग बॉडी की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ पर आयोजित किया जा रहा है। एशियन एथलेटिक्स एसोसिएशन ने अपनी वेबसाइट पर इसका एलान

करते हुए कहा- चूंकि हनुमान भगवान राम की सेवा में गति, शक्ति, साहस और बुद्धि सहित असाधारण क्षमताओं का प्रदर्शन करते हैं। बजरंगबली की सबसे बड़ी क्षमता उनकी दृढ़ निष्ठा और भक्ति है। वहीं, एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 का लोगो भी इन खेलों में भाग लेने वाले एथलीट्स, उनकी स्किल, उनका टीम वर्क, उनकी मेहनत और खेल के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है। इसलिए हमने बजरंगबली को मैस्कॉट बनाने का फैसला किया है।

एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप का यहा 25वां संस्करण है। इस टूर्नामेंट में भारत स्टार शॉट पुटर तजिंदरपाल सिंह तूर और लॉन्ग जंपर मुरली श्रीशंकर के नेतृत्व में प्रभावशाली प्रदर्शन की उम्मीद करेगा। पांच दिवसीय एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम शनिवार रात दिल्ली और बेंगलुरु से रवाना हुई थी।

कांग्रेस की नीति किसान हितों के खिलाफ : केटी रामाराव

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। चौबीस घंटे मुफ्त बिजली आपूर्ति के मुद्दे पर कांग्रेस और टीपीसीसी अध्यक्ष ए. रेवंत रेड्डी पर हमला तेज करते हुए बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामा राव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी की नीति छोटे और सीमांत किसानों का अपमान है। कांग्रेस हमेशा से प्रदेश के लघु एवं सीमांत किसानों के हितों के खिलाफ काम करती रही है। उन्होंने कहा कि पार्टी ने हमेशा छोटे किसानों के कल्याण की उपेक्षा की है और सीमांत किसानों के प्रति हमेशा सौतेला व्यवहार अपनाया है। बुधवार को राज्यव्यापी विरोध प्रदर्शन के दूसरे दिन एक बयान में, रामाराव ने कहा कि छोटे और सीमांत किसानों के लिए तीन घंटे की बिजली आपूर्ति का मतलब होगा कि उन्हें अपने खेतों में पर्याप्त पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए बाहुबली मोटर्स का उपयोग करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। टीपीसीसी अध्यक्ष धरणी पोर्टल को खत्म करने पर तुले हुए थे। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, वह अब किसानों के लिए 24 घंटे मुफ्त बिजली आपूर्ति को घटाकर तीन घंटे करने के पक्ष में हैं। अतीत में, तेलुगु देशम प्रमुख चंद्रबाबू नायडू ने कृषि को एक व्यर्थ अभ्यास करार दिया था। अब, छोटा चंद्रबाबू नायडू (रेवंत रेड्डी) 24 घंटे मुफ्त बिजली आपूर्ति बढ़ाने के खिलाफ हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी, जो किसानों को सात घंटे भी बिजली आपूर्ति देने में विफल रही, अब 24 घंटे मुफ्त बिजली आपूर्ति कार्यक्रम को खत्म करने की साजिश रच रही है। यह कहते हुए कि कांग्रेस के लिए वोट कृषक समुदाय को संकट में डाल देंगे, बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष ने कहा कि यह राज्य में किसानों के लिए एक परीक्षण का समय था। रामाराव ने पूछा, क्या हमें किसानों की किस्मत बदलने वाले मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव की जरूरत है, या कांग्रेस नेताओं की, जो दावा करते हैं कि खेती के लिए तीन घंटे बिजली की आपूर्ति पर्याप्त है।

कांग्रेस की किसान विरोधी मंशा उजागर : एमएलसी कविता

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। बीआरएस नेता और एमएलसी कविता ने आज कांग्रेस पार्टी से पूछा कि देश में कितने कांग्रेस शासित राज्यों में किसानों के लिए 24 घंटे मुफ्त बिजली आपूर्ति है।

आज मीडियाकर्मियों से बात करते हुए एमएलसी कविता ने किसान विरोधी रुख के लिए कांग्रेस नेतृत्व पर निशाना साधा। मैं राहुल गांधी से पूछती हूं कि क्या आप तेलंगाना में किसानों के लिए 24 घंटे की मुफ्त बिजली की आपूर्ति को रद्द करना चाहते हैं और इसे तीन घंटे तक सीमित करना चाहते हैं। अगर राहुल गांधी के पास किसानों के लिए मुफ्त बिजली आपूर्ति को कम करने और सीमित करने के बारे में टीपीसीसी की टिप्पणी पर कोई प्रतिक्रिया नहीं है, तो उन्हें तेलंगाना का दौरा करने और हमारे किसानों के साथ बातचीत करने का कोई अधिकार नहीं है। पूर्व सांसद कविता ने कांग्रेस के किसान घोषणा पत्र की घोषणा को चुनौती दी है।

कविता ने कांग्रेस पार्टी के खिलाफ बीआरएस पार्टी के विरोध प्रदर्शन को संबोधित करते हुए कहा कि किसानों के लिए तेलंगाना सरकार की पहल की विश्व स्तर पर सराहना की जाती है। एमएलसी कविता ने तेलंगाना के किसानों के लिए मुफ्त बिजली आपूर्ति को 24 घंटे से घटाकर तीन घंटे करने के टीपीसीसी के बयान के खिलाफ बीआरएस पार्टी के विरोध का नेतृत्व किया।

इससे पहले आज, एमएलसी कविता ने तेलंगाना के किसानों के लिए मुफ्त बिजली आपूर्ति को 24 घंटे से घटाकर तीन घंटे तक सीमित करने के समर्थन में टीपीसीसी के बयान के खिलाफ विधान सौधा में बीआरएस पार्टी के विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया।

बीआरएस पार्टी के कई नेता, कार्यकर्ता और समर्थक उनके साथ शामिल हुए। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले किसान घोषणापत्र के तहत किसानों के लिए बड़े-बड़े वादों के खोखले पहाड़ बनाने के बाद, कांग्रेस पार्टी की किसान विरोधी मंशा अब उजागर हो गई है। एमएलसी कविता ने कहा कि टीपीसीसी प्रमुख रेवंत रेड्डी टीडीपी और कांग्रेस दोनों में रहे हैं और इन दोनों पार्टियों ने कभी भी किसानों को उचित बिजली नहीं दी। उन्होंने पूछा कि जब किसानों को 24 घंटे बिजली दी गई तो कांग्रेस नेता परेशान क्यों हैं। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि अगर रेवंत रेड्डी तीन घंटे की बिजली आपूर्ति को पर्याप्त बताने के लिए किसी गांव का दौरा करते हैं तो उन्हें खदेड़ दें। कविता ने मांग की कि रेवंत रेड्डी को तुरंत किसानों से माफी मांगनी चाहिए।

देश में कहीं भी कोई रैतु बंधु नहीं है। केसीआर की रैतु बंधु योजना की नकल दूसरों द्वारा की जा रही है।

विरोध प्रदर्शन में शामिल होने से पहले कविता ने एक ट्वीट में कहा कि किसी भी राजनीतिक दल को किसानों को 24 घंटे मुफ्त बिजली की आपूर्ति से कैसे समस्या हो सकती है? टीपीसीसी प्रमुख से यह सुनकर हैरानी हुई कि कांग्रेस चाहती है कि किसानों को केवल तीन घंटे बिजली मिले, कावथा ने जोर देकर कहा कि बीआरएस पार्टी किसी भी कीमत पर किसानों के हितों की रक्षा करेगी। हम एक साथ मिलकर हर एक किसान के लिए खड़े होंगे।

दो नाबालिग प्रेमियों ने घरवालों से डरकर जीवन लीला समाप्त की

मृतक कुरापति भगीरथ और थोटला नेहा

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। सिद्दीपेट जिले में एक दिल दहला देने वाली घटना में दो प्रेमियों ने आत्महत्या कर ली। इन घटना ने इलाके के लोगों को झकझोर कर रख दिया। कुरापति भगीरथ (17) और थोटला नेहा (16) के रूप ने दुब्बाका मंडल के लैचपेट में फांसी लगाकर अपनी जान ले ली। वे दोनों दुब्बाका के एक स्थानीय जूनियर कॉलेज में इंटरमीडिएट के छात्र थे और माना जाता है कि वे एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे। आशंका जतायी जा रही है कि घरवालों की अस्वीकृति का सामना करने के डर से चिंतित होकर दोनों ने यह खतरनाक कदम उठा लिया।

भगीरथ और नेहा ने समय से पहले अपने जीवन को समाप्त करने का विनाशकारी निर्णय लिया। मंगलवार शाम को जब भागीरथ के माता-पिता बाहर थे, तो युवा प्रेमी उसके आवास पर मिले और अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। दु:खी परिवार के सदस्यों को बुधवार सुबह आत्महत्या की घटना का पता चला, जिससे पूरा गांव सदमे और दुख की स्थिति में है। शवों को दुब्बाका के सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां पोस्टमॉर्टम किया जाएगा

चार गांजा तस्कर पहुंचे सलाखों के पीछे

90 किलो गांजे समेत 25 लाख रुपये की संपत्ति बरामद

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। टीएस-एनएबी के अधिकारियों ने पठानचेरू पुलिस के साथ मिलकर, विश्वसनीय सूचना पर चार गांजा तस्करों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार लोगों में आंध्रप्रदेश के अल्लूरी सीतारामराजू जिले के वंथला राजा राव व वंथला बाबजी, आंध्रप्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के अनुपोजु साई शिव कुमार और तेलंगाना के संगारेड्डी जिले के राठौड़ वेंकट शामिल है। पठानचेरु पुलिस थाना क्षेत्र की सीमा में परिवहन करते समय उनके पास 90 किलोग्राम गांजा, एक हुंडई सैंट्रो कार आदि बरामद हुआ है। पुलिस अधीक्षक, टीएस एंटी-नारकोटिक्स ब्यूरो के मुताबिक आरोपी व्यक्ति वंथला राजा राव और वंथला बाबजी अल्लूरी सीतारामाराजू जिला, ए.पी. के रहने वाले हैं। आसानी से पैसा कमाने और विलासितापूर्ण जीवन जीने के लिए वे अपनी कृषि भूमि में गांजा की खेती कर रहे हैं और अन्य डीलरों के पास ले जा रहे हैं। आरोपी वंथला राजा राव, वंथला बाबाजी, अनुपूजू साई शिव कुमार दोस्त बन गए और गांजा डीलर व वितरकों के साथ संपर्क विकसित किया। राठौड़ वेंकट निवासी शंकर नाइक तांडा, संगारेड्डी भी इन लोगों के साथ मिल गया। उसने पीछे गांजा छुपाने के लिए एक सैंट्रो कार को संशोधित किया है और नियमित रूप से वितरकों तक पहुंचा रहा था। ज़हीराबाद और उसके आसपास और मुंबई शहर में अन्य विक्रेताओं और आपूर्तिकर्ताओं को गुप्त रूप वह गांजा बेचता था। वेंकट राठौड़ जहीराबाद टाउन में प्रमुख वितरक हैं। विश्वसनीय जानकारी पर चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

पर्यटन मंत्री ने जोगुलम्बा मंदिर में विकास कार्यों का निरीक्षण किया

जोगुलम्बा गडवाल, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। पर्यटन मंत्री वी. श्रीनिवास गौड़ ने बुधवार को ऐतिहासिक जोगुलम्बा मंदिर, आलमपुर में प्रगति के तहत बुनियादी ढांचे के विकास कार्यों का निरीक्षण किया।

पर्यटन विभाग मंदिर में भक्तों की सुविधा के लिए फूड कोर्ट, भोजन वितरण केंद्र (अन्नदानम सत्रम), टॉयलेट ब्लॉक, बैंक्वेट हॉल, कैंटीन, 21 अतिथि कक्ष, मंदिर की रोशनी और बहुउद्देशीय भवन का निर्माण कर रहा है। ये सभी कार्य 50 करोड़ रुपये की लागत से किये जा रहे हैं। अधिकारियों को पार्क स्थापित करने, भूनिर्माण और तुंगभद्रा घाट को विकसित करने के कार्यों में तेजी लाने और अगस्त में उद्घाटन के लिए तैयार रखने का आदेश दिया गया है। जिला कलेक्टर वल्लूर क्रांति, टीएसटीडीसी के अध्यक्ष गेल्लू श्रीनिवास और अन्य उपस्थित थे।

सिकंदराबाद स्टेशन से 8वीं भारत गौरव 'पुण्य क्षेत्र यात्रा' ट्रेन रवाना

पुरी, कोणार्क, गया, वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज जाएगी

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिण मध्य रेलवे की भारत गौरव ट्रेनों को रेल उपयोगकर्ताओं से भारी प्रतिक्रिया मिल रही है। दो तेलुगु राज्यों के रेल यात्रियों को एक अनूठा अवसर प्रदान करने वाली पर्यटक सर्किट ट्रेन के रूप में शुरू की गई। ट्रेन ने सात यात्राएं पूरी करने के बाद बुधवार को सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन से अपनी 8 वीं यात्रा शुरू की है। 8 वीं भारत गौरव ट्रेन की यात्रा ट्रेन से यात्रा करने वाले वरिष्ठ नागरिकों में से एक, श्रीमती राज्य लक्ष्मी (66 वर्ष) ने ट्रेन का शुभारम्भ सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन से किया। इस अवसर पर आईआरसीटीसी के समूह महाप्रबंधक पी. राजकुमार भी उपस्थित थे। यह ट्रेन दो तेलुगु राज्यों तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के रेल यात्रियों को देश के पूर्वी और उत्तरी भाग के कुछ सबसे प्राचीन और ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करने का एक अनूठा अवसर देती है। सिकंदराबाद के अलावा, ट्रेन दोनों तेलुगु राज्यों में 8 स्थानों जैसे काजीपेट, खम्मम, विजयवाड़ा, एलुरु, राजमुंदरी, समालकोट, पेंडुर्ती और विजयनगरम पर बोर्डिंग और डी-बोर्डिंग की सुविधा प्रदान करती है। उन्हें 9 दिनों की अवधि में पुरी, कोणार्क, गया, वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज जैसे महत्वपूर्ण स्थानों पर ले जाया जाएगा। रेल यात्रियों को ट्रेन द्वारा प्रदान किए गए अनूठे अवसर को देखते हुए, न केवल सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन से बल्कि मार्ग के स्टेशनों से भी यात्री भारत गौरव ट्रेन सेवाओं का लाभ उठाने के लिए आगे आए हैं। ट्रेन मिश्रित संरचना के साथ एसी और नॉन-एसी दोनों यात्रियों को अवसर प्रदान करती है - 2 एसी (1 कोच), 3 एसी (3 कोच) और स्लीपर (7 कोच)। सभी वर्गों के संरक्षण को दर्शाते हुए, सिकंदराबाद स्टेशन के साथ-साथ रास्ते के स्टेशनों के रेल यात्रियों ने एसी और गैर-एसी दोनों ट्रेन सेवाओं का लाभ उठाया है। एससीआर के महाप्रबंधक अरुण कुमार जैन ने एससीआर से भारत गौरव पर्यटक ट्रेन को यात्रियों से मिली अच्छी प्रतिक्रिया पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि ट्रेन तीर्थयात्रियों को व्यक्तिगत यात्रा कार्यक्रम की योजना बनाने की परेशानी के बिना सांस्कृतिक रूप से प्रमुख और ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करने का एक शानदार अवसर प्रदान करती है।

एपी कैबिनेट ने 47,000 घरों के निर्माण को मंजूरी दी

अमरावती, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश कैबिनेट ने बुधवार को राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण (सीआरडीए) के तहत आर 5 जोन में 47,000 घरों के निर्माण को मंजूरी दे दी। बैठक के दौरान लिए गए अन्य निर्णयों में श्रीकाकुलम जिले में भवनपाडु-मूलपेटा बंदरगाह के निर्माण और भूमिहीन गरीबों को कृषि ऋण और लका भूमि के आवंटन के लिए पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन के माध्यम से 3,880 करोड़ रुपये का ऋण लेना भी शामिल है। कैबिनेट ने अन्नामय्या जिले के वेमपल्ली में जिंदल न्यू एनर्जी की 1500 मेगावाट की पंप स्टोरेज परियोजना और गंडिकोटा जलाशय परियोजना के निवासियों के लिए 454 करोड़ रुपये के मुआवजे पैकेज को भी हरी झंडी दे दी।

एक शिक्षित महिला स्वस्थ संस्कृति का निर्माण करने में सक्षम : गृहमंत्री

महिलाओं की वफादारी और ईमानदारी हमें बेहतर करने के लिए प्रेरित करती है : डॉ. नागेश्वर रेड्डी

हैदराबाद सिटी सिक्योरिटी काउंसिल ने स्त्री शिखर सम्मेलन 2023 का आयोजन किया

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद सिटी सिक्योरिटी काउंसिल (एचसीएससी) और हैदराबाद सिटी पुलिस ने महिलाओं के कल्याण और सशक्तिकरण के लिए अपनी तरह की पहली पहल का आयोजन तेलंगाना पुलिस इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर में किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गृह मोहम्मद महमूल अली , सम्मानित अतिथि डॉ. डी नागेश्वर रेड्डी (एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी के अध्यक्ष), सुश्री रागेश्वरी लूंबा (अभिनेता और गायिका) रहे। उद्घाटन सत्र की शुरुआत मंच पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा शुभ दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके बाद चैतन्य गोरेपति (महासचिव एचसीएससी) द्वारा स्वागत किया गया। नगर पुलिस ऑयुक्त व अध्यक्ष एचसीएससी सी.वी. आनंद अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में कहा, "यह एचसीएससी के लिए एक मील का पत्थर है और आज इस स्त्री शिखर सम्मेलन में कई महत्वपूर्ण बातें होंगी। एचसीएससी साइबर सुरक्षा मंच, महिला मंच, यातायात मंच, मादक द्रव्य विरोधी मंच, सुरक्षा मंच जैसे विभिन्न मंचों के माध्यम से संचालित जागरूकता फैलाने के कार्यक्रमों को एक साथ लाता है। आज का विषय टैगलाइन 'हियर हर रोअर' के साथ आज की तारीख में बेहद प्रासंगिक है। हमारा भरोसा केंद्र महिला सुरक्षा की दिशा में लगन से काम कर रहा है। एआईजी हॉस्पिटल्स के अध्यक्ष डॉ. डी नागेश्वर रेड्डी ने अपने मुख्य भाषण में कहा, एआईजी में 60 प्रतिशत महिलाएं हैं और उनकी वफादारी और ईमानदारी हमें बेहतर करने और सफलता हासिल करने के लिए प्रेरित करती है। उन्होंने बताया कि एक महिला और पुरुष का दिमाग कैसे काम करता है और इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि महिलाओं का दिमाग बहु-कार्य और तर्कसंगत तरीके से काम करता है।

आज लड़कियां कई क्षेत्रों में लड़कों से आगे निकल रही हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें जो चिंता है वह महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है और यह तथ्य कि महिलाएं काम में पुरुषों की तुलना में अधिक कुशल हैं। महिलाओं को आगे आना चाहिए और अपने मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात करनी चाहिए ताकि इससे जुड़े कलंक को कम किया जा सके। स्त्री मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों में महिलाओं की मदद करने के लिए उल्लेखनीय काम कर सकती है। आज का जागरूकता कार्यक्रम हैदराबाद शहर के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है। हमारा शहर हमारे मुख्यमंत्री केसीआर के नेतृत्व में सभी क्षेत्रों में फल-फूल रहा है। हैदराबाद पुलिस हैदराबाद के नागरिकों की सुरक्षा करने और इसे सभी के लिए, विशेषकर महिलाओं के लिए सबसे सुरक्षित स्थान बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारे पास विविध संस्कृति, धर्म, भाषा के लोग हैं और यह समावेशिता और समानता के सिद्धांतों पर कायम है। उन्होंने हमेशा शिक्षा के क्षेत्र पर भी जोर दिया क्योंकि उनका मानना था कि यदि आप एक महिला को भी शिक्षित करते हैं, तो वह परिवार और राज्य के लिए एक स्वस्थ संस्कृति और प्रगति का निर्माण करने में सक्षम होगी।

साइबराबाद ट्रैफिक पुलिस जागरूकता के लिए कर रही है मीम भाषा का इस्तेमाल

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। साइबराबाद ट्रैफिक पुलिस ने बुधवार को सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एक मनोरंजक तरीका अपनाया। उन्होंने अपना संदेश देने के लिए व्यापक मीम भाषा का उपयोग करके मोटर चालकों से उनकी भाषा में बात की। अधिकारियों ने फिल्म 'बाबा' से अभिनेता रजनीकांत का एक मजेदार संपादन साझा करते हुए दोपहिया वाहन चालकों से सही हेलमेट का उपयोग करने को कहा। वीडियो में, रजनीकांत आधे हेलमेट, बिना स्ट्रैप वाले हेलमेट और कम गुणवत्ता वाले हेलमेट जैसे मैले हेडगियर को अस्वीकार करते हैं। लेकिन पूरी तरह से कवर किए गए आईएसआई-मार्क वाले हेलमेट के पक्ष में है। इस साल साइबराबाद में 214 बाइक सवारों की मौत हुई है। उनमें से 86 फीसदी ने हेलमेट नहीं पहना था। कुछ की मौत घटिया हेलमेट पहनने के कारण हुई है। अच्छी गुणवत्ता वाला हेलमेट पहनें और सुरक्षित रहें। यह प्रफुल्लित करने वाला वीडियो केवल यह दर्शाता है कि ट्रैफिक पुलिस मोटर चालकों तक अपना संदेश पहुंचाने के लिए किस तरह की रणनीति अपना रही है। चूँकि इन दिनों सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर मीम्स का चलन है, इसलिए जागरूकता फैलाने के लिए इनका उपयोग करना न केवल एक स्मार्ट कदम है, बल्कि प्रभावी भी है।

शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए बंद सफल रहा

कुमरम भीम आसिफाबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। एसएफआई के जिला सचिव तुममिडे भीमेश ने कहा कि राज्य सरकार पूरे तेलंगाना राज्य में शिक्षा क्षेत्र की समस्याओं को हल करने में विफल रही है। केजी से पीजी तक की मुफ्त शिक्षा को हवा में छोड़ दिया। उन्होंने कहा कि हजारों सरकारी स्कूलों को यह बहाना बनाकर टाला जाना चाहिए कि वहां कम बच्चे हैं। अभी भी राज्य में कॉर्पोरेट और निजी फीस बड़े पैमाने पर है, लेकिन सरकार ने इसे नियंत्रित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया है। मंत्री स्तरीय उप-समिति और तिरुपति राव कमेटी की रिपोर्ट का खुलासा नहीं किया गया है। शैक्षणिक वर्ष शुरू हुए एक माह बीत जाने के बावजूद पोशाक नहीं दी गई, किसी भी शीर्षक की पाठ्य पुस्तकें नहीं भेजी गईं, पाठ पढ़ाने के लिए शिक्षक नहीं हैं, सफाई कर्मचारी नहीं हैं, सरकार कोई विशेष कदम नहीं उठा रही है कई समस्याओं के कारण शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत के लिए उपाय। पीने का पानी, मध्याह्न भोजन के बिलों का लंबित होना, मूत्रालय, उचित बुनियादी ढाँचा या सार्वजनिक शिक्षा लक्ष्य हैं। हमारे गांव-मन उरू-मन बडी कार्यक्रम के फंड संग्राहकों ने केवल व्यर्थ के काम किए हैं, लेकिन इसका उपयोग स्कूलों के लिए उचित रूप से नहीं किया गया है। इंटर के छात्रों के लिए मध्याह्न भोजन बेकार बन गया है। इंटर के छात्रों को अब तक पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध नहीं करायी गयी हैं। कोई व्याख्याता नहीं हैं, जहां दिक्कतें हैं। राज्य में पिछले चार वर्षों से 5,177 करोड़ रुपये शुल्क प्रतिपूर्ति और छात्रवृत्ति लंबित है। कम से कम उन्हें रिहा तो नहीं किया जा रहा। गुरुकुल, केजीबीवी, इंटर कॉलेजों में अपग्रेड किए गए केजीबीवी अपर्याप्त सुविधाओं के साथ भवनों या किराए के भवनों में चल रहे हैं। उनके पास न तो धन है, न व्याख्याता, न शिक्षक। खराब गुणवत्ता वाला भोजन या परोसे जाने वाले भोजन की घटनाओं को भी छुपाया जा रहा है।राज्य में शिक्षकों और व्याख्याताओं के लिए बड़ी संख्या में रिक्तियां हैं। उन्हें बदला नहीं जा रहा है, अब तक एक भी डीएससी नहीं बिछाई गई है। उन्होंने कहा, इसीलिए सरकार इन समस्याओं के समाधान के लिए राज्य भर में छात्रों को एकजुट करके बंद का आयोजन कर रही है।

बंद को सफल बनाने के लिए नए मंडलों में जूनियर कॉलेज की स्थापना की जाए। इस कार्यक्रम में एसएफआई जिला उपाध्यक्ष वी साईकुमार मंडल नेता ए. बंदैया, छात्र और अन्य लोगों ने भाग लिया।

सिंगरेणी के सेवानिवृत्त कर्मचारी असीमित चिकित्सा सुविधाएं चाहते हैं

हैदराबाद, 12 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। सिंगरेनी सेवानिवृत्त कर्मचारी कल्याण संघ, कपरा चैप्टर ने मुख्यमंत्री से सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को असीमित चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने का आग्रह किया है।

बुधवार को यहां जारी एक बयान में, एसोसिएशन के अध्यक्ष डी रामचंदर राव ने सरकार से सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सूचीबद्ध अस्पतालों के माध्यम से मुफ्त, असीमित और परेशानी मुक्त चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने का आग्रह किया। वह चाहते हैं कि सरकार पूरे तेलंगाना में जिला मुख्यालयों पर विभिन्न बीमारियों के लिए दवाओं के संग्रह की सुविधा प्रदान करे क्योंकि सेवानिवृत्त कर्मचारियों को कोत्तागुडेम, गोदावरीखानी, भूपालपल्ली और मंदामरी क्षेत्रों की यात्रा करना मुश्किल हो रहा है, जहां वर्तमान में दवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

स्वतंत्र वार्ता

Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

CHANGE OF NAME

I, Service No. 15329694Y, Rank L/NK, Name: **RAMBABU KOTNI** S/o Ramana, resident of Tagarampudi Village, Anakapalli Mandal, Visakhapatnam Dist., PIN-531032, AP. I have changed my son's name from **SANJAY** (Old name) to **KOTNI SANJAY** (New Name). Hence after my son have being called as **KOTNI SANJAY** (New Name) for all purpose.

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.